राष्ट्रीय संस्करण



आखिरकार भावुक मेसी ने चूमी अंतरराष्ट्रीय ट्रॉफी >>12

वर्ष 5 अंक 32

दैनिक जागरण

मूल्य ₹8.00, नई दिल्ली, सोमवार, 12 जुलाई, 2021

www.jagran.com

पृष्ठ 14

अलकायदा के दो आतंकी लखनऊ में गिरफ्तार, उप्र को दहलाने की थी साजिश

नाकाम किया षड्यंत्र ▸ 15 अगस्त से पहले कई शहरों में करना चाहते थे धमाके, अयोध्या, मथुरा व काशी भी थे निशाने पर

मानव बम से हमले की भी थी तैयारी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

उत्तर प्रदेश को दहलाने की साजिश रच रहे अलकायदा के दो आतंकियों को उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने रविवार को लखनऊ से गिरफ्तार किया। एटीएस का कहना है कि आतंकी 15 अगस्त से पहले लखनऊ व कानपुर सहित प्रदेश के कई शहरों में धमाका करना चाहते थे। यहां तक कि मानव बम के जरिये भी हमले की साजिश थी। अयोध्या, मथुरा व काशी भी उनके निशाने पर थे। पकड़े गए आतंकी मिनहाज अहमद और मसीरुद्दीन अलकायदा समर्थित अंसार गजवातुल हिंद से जुड़े हैं। उनके दो साथी भाग निकले हैं, जिनकी सरगर्मी से तलाश की जा रही है।

सूबे के कई युवक अलकायदा के इस माड्यूल से जुड़े हैं और उनके बारे में भी छानबीन की जा रही है। कई युवकों को मानव बम बनाए जाने की बात भी सामने आई है, जिसके बाद आइबी समेत अन्य खुफिया एजेंसियां और अधिक सक्रिय हो गई हैं। एटीएस ने कानपुर समेत कई शहरों में छापे मारे हैं और संदिग्धों को हिरासत में लेकर गहनता से पूछताछ की जा रही है। पूरे प्रदेश में अलर्ट कर दिया गया है। सीमा भी सील कर दी गई है।

निशाने पर थे भाजपा नेता : सूत्रों का कहना है कि आतंकियों के निशाने पर भाजपा नेता भी थे। विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश में आतंकी साजिश के सामने आने के बाद जांच एजेंसियां कई बिंदुओं पर छानबीन कर रही हैं। यह भी पता लगाया जा रहा है कि कहीं उत्तर प्रदेश में बड़े नेताओं को भी निशाना बनाने का कोई कुचक्र तो नहीं रचा जा चुका था। आतंकी मिनहाज का घर केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर के घर से कुछ दूरी पर ही है। एडीजी कानून-व्यवस्था प्रशांत कुमार का कहना है कि दोनों अपने अन्य साथियों की मदद से 15 अगस्त से पहले लखनऊ, कानपुर व अन्य बड़े शहरों में भीड़भाड़ वाले स्थानों पर बम धमाकों की साजिश रच रहे थे।

आज कोर्ट में पेश किए जाएंगे दोनों आतंकी : आइजी एटीएस जीके गोस्वामी का कहना है कि दोनों आरोपितों के विरुद्ध लखनऊ स्थित एटीएस थाने में एफआइआर दर्ज की गई है। उनसे कई बिंदुओं पर सघनता से पूछताछ की जा रही है। दोनों को सोमवार को लखनऊ स्थित कोर्ट में पेश किया जाएगा। दोनों को पुलिस रिमांड पर लेने की तैयारी चल रही है। अलकायदा से जुड़े उनके अन्य सक्रिय साथियों के बारे में भी पड़ताल कराई जा रही है। जल्द कुछ और बड़े राजफाश हो सकते हैं।



मुठभेड़ के बाद एटीएस द्वारा गिरफ्तार आतंकवादी मसीरुद्दीन। सौ. एटीएस



मुठभेड़ के बाद एटीएस द्वारा गिरफ्तार आतंकी मिनहाज अहमद। सौ. एटीएस

तैयार किया था प्रेशर कुकर बम

आइजी (एटीएस) जीके गोस्वामी के अनुसार मिनहाज के घर से भारी मात्रा में विस्फोटक, एक प्रेशर कुकर बम व पिस्टल बरामद हुई है। उसके घर से बरामद इंप्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आइईडी) को बम निरोधक दस्ता से निष्क्रिय कराया गया है। उनका कहना है कि दोनों आरोपित बम बनाने में एक्सपर्ट हैं और दोनों ने मिलकर परसों रात में मिनहाज के घर में एक प्रेशर कुकर बम बनाया था। मिनहाज पूर्व में लखनऊ स्थित इंटीग्रल यूनिवर्सिटी में टेक्नीशियन था। आइजी का कहना है कि मसीरुद्दीन कोई काम नहीं करता था। उसके तीन बेटे ई-रिक्शा चलाते हैं। एटीएस ने मिनहाज को पकड़ने के बाद उससे पूछताछ में सामने आई जानकारियों के बाद मसीरुद्दीन को उसके घर से पकड़ा।



मौके से बरामद कुकर बम को लेकर जाता बम निरोधक दस्ते का जवान। जागरण

संपर्कों की छानबीन शुरू

एडीजी ने बताया कि पकड़े गए दोनों आतंकियों के बारे में बीते दिनों खुफिया जानकारियां मिली थीं। गहन छानबीन में मिनहाज, मसीरुद्दीन व शकील के नाम प्रकाश में आए थे, जो अलकायदा के इंडियन सबकांटीनेंट माड्यूल अंसार गजवातुल हिंद (एजीएच) से करीब डेढ़ साल से जुड़े हैं। तीनों एजीएच का देश में संचालन कर रहे उमर हलमंडी के सीधे संपर्क में थे। उमर हलमंडी के ही इशारे पर लखनऊ समेत अन्य बड़े शहरों में धमाकों की तैयारी थी। उमर हलमंडी पाकिस्तान-अफगानिस्तान के सीमा क्षेत्र से आतंकी गतिविधियों का संचालन करता है। पकड़े गए आरोपितों से आइबी व अन्य खुफिया एजेंसियों के अधिकारी भी पूछताछ कर रहे हैं। दोनों के बारे में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) को भी जानकारी दी गई है। उत्तर प्रदेश के अलावा अन्य राज्यों में भी इनके संपर्कों की छानबीन शुरू की गई है।

आइएस के नए माड्यूल का पर्दाफाश, कश्मीर में सात जगहों पर छापे पेज>>5

भारत ने कंधार से निकाले 50 राजनयिक

अफगानिस्तान में संकट ▸ खराब होते हालात के कारण उठाया कदम, वायुसेना के विशेष विमान से लाए गए स्वदेश

विदेश मंत्रालय ने कहा- वाणिज्य दूतावास बंद नहीं किया, स्थानीय स्टाफ से कामकाज रहेगा जारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

अफगानिस्तान में तालिबान आतंकियों के बढ़ते प्रभाव और बिगड़ते हालात के मद्देनजर भारत ने कंधार स्थित अपने वाणिज्य दूतावास के 50 राजनयिकों और अधिकारियों को सुरक्षित निकाल लिया है। इन्हें स्वदेश लाने के लिए भारतीय वायुसेना का विशेष विमान शनिवार को भेजा गया था। वापस लाए गए लोगों में दूतावास की सुरक्षा में तैनात भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस (आइटीबीपी) के जवान भी शामिल हैं। भारत ने कंधार का वाणिज्य दूतावास अभी बंद नहीं किया है और स्थानीय अफगानी स्टाफ के सहारे इसका संचालन जारी रखने का एलान किया है।

अफगानिस्तान से अमेरिकी फौज की वापसी के बीच बीते कुछ समय से तालिबानी आतंकी कई इलाकों में कब्जा जमा रहे हैं। कंधार के निकट दक्षिणी अफगानिस्तान में तालिबानी लड़ाकों ने जिस तरह नियंत्रण स्थापित करना शुरू किया है, उसके मद्देनजर ही भारत ने कंधार से अपने राजनयिकों-अधिकारियों को तत्काल सुरक्षित निकालने का कदम उठाया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने रविवार को कहा, वाणिज्य दूतावास के भारतीय कर्मियों को कंधार शहर के निकट चल रही जबर्दस्त लड़ाई को देखते हुए फिलवक्त के लिए वापस लाया गया है।

हालात स्थिर होने तक अस्थायी उपाय : प्रवक्ता ने अफगानिस्तान के हालात पर भारत के निरंतर करीब से निगाह रखने की चर्चा करते हुए कहा, हमारे लिए दूतावास के अपने कर्मियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। लेकिन हमने कंधार वाणिज्य दूतावास को बंद नहीं किया है। वहां के हालात स्थिर होने तक के लिए यह अस्थायी उपाय है। वीजा व काउंसलर सेवाएं काबुल स्थित भारतीय दूतावास से देने के विशेष प्रबंध किए गए हैं। अफगानिस्तान की मौजूदा स्थिति से जुड़े सवाल पर प्रवक्ता ने कहा, एक महत्वपूर्ण साझीदार के रूप में एक शांतिपूर्ण, संप्रभु और लोकतांत्रिक अफगानिस्तान के लिए भारत प्रतिबद्ध है।

पाक एयरस्पेस का नहीं किया इस्तेमाल : समाचार एजेंसी प्रेट्र के मुताबिक, कंधार से राजनयिकों व अफसरों को लाने के लिए भारत ने पाकिस्तानी एयरस्पेस का इस्तेमाल नहीं किया। (पेज-11 भी देखें)

कुछ देशों ने बंद किए वाणिज्य दूतावास

तालिबान की बढ़ती गतिविधियों को देखते हुए मजार-ए-शरीफ में कुछ देशों के अपने वाणिज्य दूतावास बंद करने की भी खबर है। भारत भी हेरात व जलालाबाद स्थित वाणिज्य दूतावासों में कामकाज बंद कर चुका है।

तालिबान का बढ़ता प्रभाव भारत के लिए चिंताजनक : अफगानिस्तान के नवनिर्माण में भारत अभी तक तीन अरब डालर से अधिक राशि का निवेश कर चुका है। इसलिए वहां की खराब होती सुरक्षा स्थिति और तालिबान का बढ़ता प्रभाव स्वाभाविक रूप से भारत लिए बेहद चिंताजनक है।



अफगानिस्तान में हालात बिगड़ते जा रहे हैं। तालिबान से निपटने के लिए तखर प्रांत में सशस्त्र अफगान मिलिशिया ग्रुप के सदस्य लगातार गश्त कर रहे हैं। रायटर

दो दशक में तालिबान का सफाया नहीं कर सकी अमेरिकी सेना

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की फौज को 31 अगस्त तक वापस बुलाने के एलान के बाद से ही तालिबानियों का कहर बढ़ता जा रहा है। अमेरिकी सैनिकों द्वारा बगराम एयरबेस खाली करने के बाद से तालिबान ने जंग तेज कर दी। दो दशक तक अफगानिस्तान में सैन्य अभियान चलाने के बावजूद अमेरिका व उसके मित्र देश तालिबानी आतंकियों का पूरी तरह सफाया नहीं कर पाए।

अफगान सरकार की पकड़ ढीली होने के संकेत

अपने राजनयिकों को कंधार से बुलाने के भारत के कदम से साफ है कि अफगानिस्तान के विभिन्न प्रांतों में मौजूदा सरकार की पकड़ ढीली पड़ रही है। यह भारत के लिए ही नहीं, बल्कि तालिबानी आतंक और कट्टरता का विरोध करने वाली विश्व बिरादरी के लिए भी गंभीर चिंता की बात है। भारत ने यह कदम तब उठाया है जब केवल चार दिन पहले काबुल स्थित भारतीय दूतावास ने कहा था कि कंधार और मजार-ए-शरीफ के वाणिज्य दूतावास बंद करने की कोई योजना नहीं है। जबकि विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को कहा था कि हम अफगानिस्तान के बिगड़ते सुरक्षा हालात के मद्देनजर भारतीय नागरिकों की सुरक्षा के मसले का मूल्यांकन कर रहे हैं और इसके आधार पर ही कोई कदम उठाएंगे।

कृष्ण गोपाल की जगह अरुण कुमार देखेंगे संघ-भाजपा समन्वय का काम

- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रांत प्रचारक बैठक में बदली गई पदाधिकारियों की जिम्मेदारियां
- बंगाल और ओडिशा के क्षेत्र प्रचारक रहे प्रदीप जोशी बनाए गए सह संपर्क प्रमुख

जागरण संवाददाता, चित्रकूट

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की प्रांत प्रचारक बैठक के तीसरे दिन रविवार को अखिल भारतीय कार्यकारिणी ने कई पदाधिकारियों की जिम्मेदारियों में बदलाव किया है। बैठक शुरू होने के बाद से ही पदाधिकारियों के दायित्वों में बदलाव के कयास लगाए जा रहे थे। दायित्व परिवर्तन के लिए कई नाम तय किए जा चुके हैं। संघ से इसकी पुष्टि तो नहीं की गई, लेकिन सूत्रों के मुताबिक संघ और भाजपा के बीच समन्वय का काम अब सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल की जगह सह सरकार्यवाह अरुण कुमार देखेंगे।

वैसे तो प्रांत प्रचारक बैठक हर साल जुलाई में होती है, लेकिन यूपी चुनाव से पहले यह बैठक काफी अहम मानी जा रही थी। पहले से ही ऐसे कयास लगाए जा रहे थे कि उत्तर प्रदेश चुनाव के मद्देनजर संघ की तरफ से भाजपा के साथ समन्वय रखने की जिम्मेदारी सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल के बजाय किसी अन्य को दी जा सकती है। देर रात इस पर फैसला ले भी लिया गया कि अब कृष्ण गोपाल की जगह अरुण कुमार जिम्मेदारी निभाएंगे। इसी तरह बंगाल और ओडिशा के क्षेत्र प्रचारक का दायित्व देख रहे थे प्रदीप जोशी को संघ का अखिल भारतीय सह संपर्क प्रमुख बनाया गया है।

कोरोना के बीच संघ ने शुरू किया 'जीवन' पेज>>3

सरकार के बाद अब संगठन में बदलाव की तैयारी

नई दिल्ली : केंद्रीय मंत्रिपरिषद में व्यापक फेरबदल के बाद अब भाजपा संगठन में भी बदलाव की तैयारियां शुरू हो गई हैं। इसी क्रम में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को पार्टी के राष्ट्रीय सचिवों के साथ बैठक की। उन्होंने संगठन की गतिविधियों और पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा की। बाद में सभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बुलावे पर उनके आवास पर पहुंचे और उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया। सूत्रों के अनुसार, पार्टी सचिवों के साथ बैठक में नड्डा ने संगठन की गतिविधियों के साथ-साथ कोविड टीकाकरण अभियान पर भी चर्चा की। हालांकि, करीब एक घंटे तक चली इस बैठक के दौरान चर्चा के केंद्र में वे पांच राज्य रहे, जहां अगले साल विस चुनाव होने हैं। इनमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा व मणिपुर शामिल हैं। (पेज-3)

ट्विटर ने स्थानीय शिकायत अधिकारी नियुक्त किया

- माइक्रोब्लागिंग साइट ने शुरू किया नियमों का पालन, विनय प्रकाश से की जा सकेंगी शिकायतें
- भारत का पता सार्वजनिक किया, बीते एक माह में नियमों के पालन की रिपोर्ट भी प्रकाशित की



जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

इंटरनेट मीडिया से जुड़े नए आइटी नियमों के पालन में आनाकानी कर रही ट्विटर ने लगभग सभी प्रमुख नियमों का पालन शुरू कर दिया है। माइक्रोब्लागिंग साइट ने विनय प्रकाश को स्थानीय शिकायत अधिकारी (ग्रीवांस आफीसर) नियुक्त करने के साथ भारत में अपने पते को भी सार्वजनिक कर दिया है। वहीं, पिछले एक माह में नियमों के पालन की रिपोर्ट भी प्रकाशित की गई है। ट्विटर ने अपनी वेबसाइट पर ये सभी जानकारी दी है। दो दिन पहले नए आइटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने ट्विटर को साफ संदेश देते हुए कहा था देश का कानून सर्वोपरि हैं। देश में रहने वाले किसी भी व्यक्ति या कंपनी को उन्हें मानना ही होगा।

दूसरी तरफ, रविवार को वैष्णव ने नए आइटी नियमों की समीक्षा की। देसी इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म कू को ज्वाइन करते हुए वैष्णव ने कहा, नए आइटी नियम यूजर्स के सशक्तिकरण के साथ उन्हें सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं और इन नियमों से भारत में एक जिम्मेदार इंटरनेट मीडिया का माहौल तैयार होगा।

ट्विटर वेबसाइट पर दी गई जानकारी के मुताबिक, यूजर्स किसी तरह की शिकायत के लिए विनय प्रकाश से ई-मेल के जरिये संपर्क कर सकते हैं। ट्विटर ने भारत में अपने संपर्क का पता भी जाहिर कर दिया है जो बेंगलुरु में स्थित है। कंपनी ने गत 26 मई से 25 जून के दौरान की कंप्लायंस रिपोर्ट भी प्रकाशित की है। इस प्रकार, गत 26 मई को लागू होने वाले नए आइटी नियम से जुड़े तीन प्रमुख निर्देशों का पालन ट्विटर ने शुरू कर दिया है। इन नियमों के पालन नहीं करने से ट्विटर ने इंटरमीडिएरी का दर्जा खो दिया था।

ट्विटर ने 22,500 से अधिक अकाउंट निलंबित किए पेज>>3

अंतरिक्ष पर्यटन के नए युग का सूत्रपात



इस खूबसूरत अंतरिक्ष के रचनाकारों को बधाई।

-अंतरिक्ष में ब्रेनसन के पहले बोल

अमेरिका के न्यू मेक्सिको में रविवार को अंतरिक्ष की यात्रा से वापसी का जश्न मनाते वर्जिन गेलेक्टिक कंपनी के संस्थापक रिचर्ड ब्रेनसन व उनके कंधे पर चढ़कर खुशी व्यक्त करती भारतीय मूल की शिरिषा बांदला तथा क्रू के अन्य सदस्य। ब्रेनसेन ने इस यात्रा को जीवन भर के अनुभव के रूप में वर्णित किया। उनकी कंपनी का अंतरिक्ष के लिए टूर शुरू करने की दिशा में यह बड़ा कदम साबित हो सकता है। (पेज-11 भी देखें) एएफपी

- लगभग 55 मिनट बाद ब्रेनसन अंतरिक्ष से सुरक्षित लौटने में सफल रहे
- ब्रेनसन के साथ भारत की शिरीषा बांदला भी गई थीं
- इस मिशन में चालक दल के दो सदस्य थे जबकि चार यात्री थे
- अंतरिक्ष में उड़ने के लिए न्यू मैक्सिको में बनाए गए स्पेसपोर्ट तक साइकिल से पहुंचे थे ब्रेनसन
- 17 साल का सपना हुआ पूरा। वर्ष 2004 में अंतरिक्ष के व्यावसायिक पर्यटन के लिए बनाई थी वर्जिन गैलेक्टिक कंपनी।
- 20 जुलाई को अमेजन के जेफ बेजोस अपने न्यू शेफर्ड यान से जाएंगे अंतरिक्ष

जागरण विशेष

300 के बीज से 70 एकड़ तक जड़ी-बूटियों की खेती



रायपुर : छत्तीसगढ़ के किशोर राजपूत ने छह साल पहले मात्र दो एकड़ पुश्तैनी जमीन पर 300 रुपये के तुलसी के बीज से जड़ी-बूटियों की खेती शुरू की थी, जो अब 70 एकड़ में फैल चुकी है। (पेज-10)

न्यूज गैलरी

राष्ट्रीय राजधानी ▸ पृष्ठ 2

हरियाणा के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचा दिल्ली जल बोर्ड

नई दिल्ली : दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष राघव चड्ढा ने रविवार को दोबारा हरियाणा पर यमुना से दिल्ली के हिस्से का पानी रोकने का आरोप लगाया। चड्ढा ने कहा, इसके चलते वजीराबाद में यमुना का जलस्तर साढ़े सात फीट कम हो गया है। इससे नई दिल्ली नगर पालिका परिषद, मध्य, पश्चिमी व दक्षिणी दिल्ली के कई इलाकों में पेयजल आपूर्ति प्रभावित है। इसे लेकर दिल्ली जल बोर्ड ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है।

राज-नीति ▸ पृष्ठ 3

बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को गति देने में जुटे रेल मंत्री वैष्णव

नई दिल्ली : रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रविवार को महत्वाकांक्षी बुलेट ट्रेन परियोजना (अहमदाबाद और मुंबई के बीच) की समीक्षा की। बैठक में इस परियोजना की कार्यान्वयन एजेंसी, नेशनल हाई स्पीड रेल कार्पोरेशन लिमिटेड के प्रबंध निदेशक ने रेल मंत्री को परियोजना की स्थिति से अवगत कराया। रेल मंत्री वैष्णव ने खुद ही ट्वीट कर समीक्षा बैठक करने की जानकारी दी।

राष्ट्रीय फलक ▸ पृष्ठ 5

उप्र में आकाशीय बिजली गिरने से 41 की मौत, 32 लोग झुलसे

लखनऊ : उत्तर प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर रविवार को हुई तेज बारिश के दौरान बिजली गिरने से 41 लोगों की मौत हो गई। साथ ही 32 अन्य लोग झुलस गए। प्रयागराज में 14, कौशांबी में चार और प्रतापगढ़ में एक की जान गई। फतेहपुर में तीन महिलाओं सहित पांच, कानपुर देहात में महिला सहित पांच ने वज्रपात से दम तोड़ा। उन्नाव में चचेरे भाई-बहन की वज्रपात से मौत हो गई।

बिजनेस ▸ पृष्ठ 10

पेट्रोल-डीजल से सुधर रही राजस्व की सेहत

नई दिल्ली : कोरोना काल में पेट्रोल व डीजल की बिक्री पर लगने वाले उत्पाद शुल्क व वैट केंद्र और राज्य दोनों की राजस्व प्राप्ति का प्रमुख माध्यम बनते दिख रहे हैं। चालू वित्त वर्ष 2021-22 में केंद्र को पेट्रोल व डीजल पर उत्पाद शुल्क से 4.67 लाख करोड़ रुपये राजस्व मिलने का अनुमान है। इस साल के बजट में चालू वित्त वर्ष में पेट्रोल-डीजल पर लगने वाले उत्पाद शुल्क से 3.35 लाख करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्ति का अनुमान लगाया गया है।

कोरोना की मार

महाराष्ट्र-केरल में मामले कम नहीं होने से सरकार हैरान

कारणों का पता लगाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय दोनों राज्यों में जल्द भेज सकती है विशेषज्ञों की टीम, देश में प्रतिदिन आने वाले नए केस में आधे से अधिक इन दोनों राज्यों से, 10 फीसद से ज्यादा संक्रमण दर वाले 66 जिलों में केरल के आठ और महाराष्ट्र के दो जिले

नीलू रंजन, नई दिल्ली

केरल और महाराष्ट्र में कोरोना संक्रमण के मामलों में कमी नहीं आने से केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय हैरान और परेशान है। देश के अन्य राज्यों में कोरोना की दूसरी लहर जिस तेजी से फैली, उसी गति से कम भी होती चली गयी, लेकिन इन दोनों राज्यों में गत तीन हफ्ते से नए केस आठ हजार से 15 हजार प्रतिदिन के बीच बने हुए हैं। इसकी मूल वजह का पता लगाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय अब इन दोनों राज्यों में वैज्ञानिक अध्ययन कराने पर विचार कर रहा है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, पूरे देश में प्रतिदिन कोरोना के जो नए मामले सामने आ रहे हैं उनमें 52 फीसद से अधिक केरल व महाराष्ट्र से हैं। यही नहीं, रोजाना होने वाली मौतों में करीब आधी महाराष्ट्र से हैं। पूरे देश में कोरोना संक्रमण दर में काफी गिरावट दर्ज की गई है। 66 जिलों में ही 10 फीसद से ज्यादा संक्रमण दर रह गई है। इनमें केरल के आठ व महाराष्ट्र में दो जिले शामिल हैं।



अधिकारी ने कहा, दोनों राज्यों में संक्रमण कम नहीं होने के कारणों का पता लगाया जा रहा है। जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञों की टीम दोनों राज्यों में भेजी जाएंगी, जो अधिक संक्रमण होने के वैज्ञानिक कारणों की तलाश करेंगी।

नेशनल टेक्निकल एडवाइजरी ग्रुप आन इम्युनाइजेशन (एनटागी) के प्रमुख डा. एनके अरोड़ा ने पिछले दिनों केरल के अधिकारियों से नए केस अधिक आने की वजह जानने की कोशिश की। अधिकारियों का कहना था कि उनके यहां कराए गए सीरो सर्वे में अब भी 20 फीसद लोगों में ही एंटीबाडी पाई गई है। इसका अर्थ है कि 80 फीसद आबादी को अब भी संक्रमित होने का खतरा बरकरार है। राज्य में अधिक जागरूकता होने की वजह से शारीरिक दूरी, मास्क और सफाई जैसे कोरोना व्यवहार का समुचित पालन किया जाता है और इसी वजह से अधिकांश लोग इससे अब भी बचे हुए हैं, जो धीरे-धीरे संक्रमित हो रहे हैं। लेकिन केरल का यह तर्क पूरी तरह से गले नहीं उतर रहा है क्योंकि दुनिया के अधिकांश देशों में तमाम सावधानी बरतने के बावजूद संक्रमण तेजी से फैला और कम हुआ है। केरल में जनवरी से ही कोरोना के केस बढ़ने शुरू हो गए थे और अभी तक कम नहीं हुए हैं।

महाराष्ट्र के मामले में तो कोरोना बचाव के लिए उचित व्यवहार का तर्क भी नहीं दिया जा सकता है। पहली लहर से अब तक महाराष्ट्र में कोरोना के 61 लाख से अधिक केस आ चुके हैं और दूसरे नंबर पर 30 लाख से अधिक केस के साथ केरल है। इन दोनों राज्यों से अधिक जनसंख्या के बावजूद अन्य राज्यों में संक्रमण के मामले अपेक्षाकृत कम हैं। अधिकारी ने सही कारण पता चलने की स्थिति में कोरोना के खिलाफ लड़ाई को नई दिशा मिल सकती है।

समुदायों के बीच न बिगड़े आबादी का संतुलन : योगी

- मुख्यमंत्री ने किया उत्तर प्रदेश जनसंख्या नीति 2021-30 का विमोचन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि जनसंख्या को स्थिर करने के प्रभावी प्रयास करते हुए हमें यह ध्यान भी रखना होगा कि इससे देश में विभिन्न समुदायों की आबादी के बीच संतुलन न बिगड़े। वह रविवार को विश्व जनसंख्या दिवस के मौके पर उत्तर प्रदेश जनसंख्या नीति 2021-30 का विमोचन कर रहे थे। नई जनसंख्या नीति में सरकार ने आबादी को नियंत्रित करने के लिए नया कानून बनाने का इरादा भी जताया है। गौरतलब है कि राज्य विधि आयोग ने उप्र जनसंख्या (नियंत्रण, स्थिरीकरण व कल्याण) विधेयक-2021 का ड्राफ्ट तैयार कर उस पर 19 जुलाई तक सुझाव मांगे हैं।

जनसंख्या वृद्धि का रिश्ता गरीबी और निरक्षरता से भी : लखनऊ में अपने सरकारी आवास पर आयोजित कार्यक्रम में योगी ने कहा, जनसंख्या वृद्धि का रिश्ता गरीबी व निरक्षरता से भी है। कुल प्रजनन दर, मातृ और शिशु मृत्यु दर के आंकड़ों में उप्र अभी राष्ट्रीय औसत से पीछे है। इन संकेतकों में सुधार के लिए हमें विभिन्न तबकों के बीच जागरुकता फैलाने के गंभीर प्रयास करने होंगे। काफी तथ्यों व समाज के विभिन्न तबकों को ध्यान में रखकर सरकार इस नीति को लागू कर रही है। नीति को कारगर बनाने के लिए जनजागरूकता अभियान में खासतौर पर महिला एवं बाल विकास तथा शिक्षा से जुड़े विभागों को भागीदार बनाने के लिए कहा। उन्होंने कहा, संयुक्त राष्ट्र की ओर से घोषित सतत विकास लक्ष्यों को हम 2030 तक हासिल करने के लिए प्रयासरत हैं। यह नीति हमें उसी दिशा में आगे बढ़ाएगी।

...तो 2052 तक स्थिर होगी जनसंख्या : स्वास्थ्य मंत्री : इस मौके चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह ने कहा, विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2027 तक भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश होगा। यदि नई जनसंख्या नीति को ठीक से लागू किया गया तो 2052 तक उप्र में जनसंख्या स्थिर होने की स्थिति आएगी। उन्होंने कहा, प्रदेश के 57 जिलों में प्रजनन दर तीन फीसद या इससे अधिक है, उनमें मिशन परिवार विकास कार्यक्रम लागू किया है। कार्यक्रम को स्वास्थ्य राज्य मंत्री अतुल गर्ग व विभाग के अपर मुख्य सचिव ने भी संबोधित किया।



लखनऊ में उप्र जनसंख्या नीति 2021-30 का विमोचन करते योगी आदित्यनाथ। एएनआइ

चिकित्सा शिक्षामंत्री बोले, दंड के बजाए प्रोत्साहनों पर हो जोर पेज>>3

90 फीसद दिल्ली पुलिस कर्मियों और उनके परिवारों को कोरोना रोधी टीके की दोनों डोज लग चुकी है। इनके लिए 10 टीकाकरण केंद्र संचालित हो रहे है।

www.jagran.com
राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 12 जुलाई, 2021

प्रशिक्षण के लिए खुले शैक्षणिक संस्थान

अनलाक का दायरा बढ़ा ▸ 50 फीसद क्षमता के साथ कांफ्रेंस हाल का कर सकेंगे प्रयोग

अभी बच्चों को बुलाने की अनुमति नहीं, शिक्षण कार्य आनलाइन ही चलेगा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

राजधानी में कोरोना के मामलों में कमी आने के बाद अब अनलाक का दायरा भी बढ़ता जा रहा है। बाजार, माल व पार्क खोले जाने के बाद अब शैक्षिक गतिविधियों को भी धीरे-धीरे शुरू किया जा रहा है। इसी कड़ी में फिलहाल स्कूलों व अन्य शैक्षणिक संस्थानों में प्रशिक्षण कार्य शुरू करने की अनुमति दे दी गई है। संस्थान 50 फीसद क्षमता के साथ कांफ्रेंस हाल या सभागार का प्रयोग कर सकेंगे। अन्य गतिविधियों में फिलहाल पुराने नियम ही लागू होंगे। दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) ने रविवार को इस संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं।

डीडीएमए के आदेश के मुताबिक शैक्षणिक संस्थानों में कोरोना प्रोटोकाल का सख्ती से पालन करना होगा। इसके लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) और सरकार के अन्य दिशा-निर्देशों का संस्थानों को सख्ती से पालन करना होगा। इसमें मास्क, सैनिटाइजर व शारीरिक दूरी का पालन आदि के नियम शामिल हैं। यह व्यवस्था फिलहाल 12 जुलाई से 26 जुलाई तक लागू रहेगी। स्कूलों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में फिलहाल बच्चों को बुलाने की अनुमति नहीं है। इसलिए शिक्षण कार्य अभी आनलाइन ही चलेगा।

डीडीएमए के अधिकारियों के मुताबिक यह अधिसूचना शैक्षणिक संस्थानों को प्रशिक्षण, बैठकों सहित अन्य तैयारियों को फिर से शुरू करने का अवसर प्रदान करेगी। इससे दिल्ली सरकार शिक्षा से जुड़ी परियोजनाओं को बढ़ावा मिलेगा और आफलाइन मोड में शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्य शुरू हो सकेगा।

स्कूलों को फिर से खोलने पर सरकार करेगी काम : प्रशिक्षण के लिए स्कूलों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों को खोलने के बाद अब दिल्ली सरकार शिक्षण संस्थानों को फिर से खोलने की तैयारी और संबंधित योजना पर भी काम शुरू करेगी। दिल्ली सरकार के स्कूलों ने 19-31 जुलाई, 2021 के बीच पीटीएम की भी योजना बनाई है।

मेट्रो और अन्य परिवहन में मौजूदा नियमों में कोई छूट नहीं

कोरोना की तीसरी लहर के खतरे को देखते हुए डीडीएमए ने मेट्रो और अन्य सार्वजनिक परिवहन में किसी भी तरह की छूट नहीं बढ़ाई है। फिलहाल इनका संचालन 50 फीसद क्षमता के साथ ही किया जाएगा। मेट्रो में खड़े होकर सफर करने की अनुमति मिलने की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन इसकी भी फिलहाल अनुमति नहीं मिली है। इसके अलावा बैंक्वेट हाल, मैरिज हाल, होटल जिम और योग संस्थान 50 फीसद क्षमता के साथ ही खुलेंगे। पब्लिक पार्क, उद्यान और गोल्फ क्लब खुलेंगे।


सरोजनी नगर मेट्रो स्टेशन के बाहर लगी यात्रियों की लंबी कतार। विपिन शर्मा।

ये गतिविधियां अभी पूरी तरह से बंद रहेंगी

- बच्चों के लिए सारे स्कूल, कालेज, एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन व कोचिंग इंस्टीट्यूशन बंद रहेंगे।
- सामाजिक, राजनीतिक, खेलकूद, मनोरंजन, एकेडमिक, सांस्कृतिक और धार्मिक समारोह से संबंधित कार्यक्रम की अनुमति नहीं होगी।
- सिनेमा,थिएटर, मल्टीप्लेक्स व स्वीमिंग पूल बंद रहेंगे।
- एंटरटेनमेंट पार्क, वाटर पार्क बंद रहेंगे।
- बिजनेस टू बिजनेस एग्जीबिशन व स्पा बंद रहेंगे।

कोरोना की संक्रमण दर घटकर हुई 0.07 फीसद

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : राजधानी में कोरोना की संक्रमण दर 0.09 फीसद से घटकर 0.07 फीसद रह गई है, जो अब तक की सबसे कम है। रविवार को 76 हजार से अधिक सैंपल की जांच हुई। इसमें सिर्फ 53 नए मरीज मिले। वहीं 99 मरीज ठीक हुए। इससे सक्रिय मरीजों की संख्या 743 रह गई है। पिछले 24 घंटे में तीन मरीजों की मौत हो गई। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार दिल्ली में कोरोना के अब तक कुल 14 लाख 35 हजार 83 मामले आए हैं।

हनीट्रैप में फंसाकर व्यवसायी से मांगे एक करोड़, तीन गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▸ आरोपित युवती साफ्टवेयर इंजीनियर, युवक भी उच्च शिक्षित

▸ टिंडर एप के जरिये दिल्ली के व्यवसायी को जाल में फंसाया था

डेटिंग एप टिंडर के जरिये युवाओं को हनीट्रैप के जाल में फंसाकर ब्लैकमेल करने वाले गिरोह का दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने पर्दाफाश किया है। साफ्टवेयर इंजीनियर युवती समेत गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपित अश्लील वीडियो व तस्वीरें वायरल करने की धमकी देकर एक व्यापारी से एक करोड़ रुपये मांग रहे थे। पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों की भी तलाश कर रही है।

संयुक्त आयुक्त क्राइम ब्रांच आलोक कुमार के मुताबिक दिल्ली के एक व्यापारी ने शिकायत दर्ज कराई थी कि कोई अज्ञात व्यक्ति कुछ दिनों से काल कर एक करोड़ रुपये की मांग कर रहा है। वह किसी युवती के साथ उसकी नग्न मार्फ्ड तस्वीरें व वीडियो वायरल करने की धमकी दे रहा है। स्पेशल सेल की टीम ने शनिवार को गुरुग्राम के डीएलएफ फेज तीन से राजकिशोर सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उससे पूछताछ के बाद गुरुग्राम के सेक्टर 67 से एक युवती और दिल्ली के छतरपुर एन्क्लेव-दो से आर्यन दीक्षित को गिरफ्तार किया गया। युवती के फ्लैट से महिला हैंडबैग में लगे दो स्पाई कैमरे, मेमोरी कार्ड, यूएसबी पेन ड्राइव, पीड़ितों के वीडियो, तस्वीरों वाला लैपटाप, सात मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं।

गिरोह का मास्टरमाइंड राजकिशोर सिंह मूलरूप से बिहार के कैमूर जिले के भभुआ का रहने वाला है और साफ्टवेयर इंजीनियर है। 2012 में वह दिल्ली आया था। 2013 में कनाट प्लेस थाना पुलिस ने छेड़खानी के आरोप में गिरफ्तार किया था। इसके बाद उसने गुरुग्राम में स्पा (बाडी मसाज) सेंटर खोला और उसमें वैश्यावृत्ति कराने के लिए कालगर्ल को भर्ती कर हनीट्रैप के जरिये युवाओं को फंसाने लगा।


क्राइम ब्रांच द्वारा गिरफ्तार हनी ट्रैप में फंसाकर एक करोड़ मांगने वाले आरोपित। सौ. पुलिस

आर्यन दीक्षित मूलरूप से कानपुर के किदवई नगर का रहने वाला है। उसने नोएडा के एक कालेज से एमबीए किया है। राजकिशोर से मुलाकात के बाद वह गुरुग्राम निवासी साफ्टवेयर इंजीनियर प्रेमिका के साथ मिलकर हनीट्रैप के जरिये लोगों को फंसाने लगा था। लाकडाउन के दौरान दोनों की मुलाकात हुई थी।

जाल में ऐसे फंसाते थे: राजकिशोर ने पकड़ी गई युवती व स्पा सेंटर में काम करने वाली अन्य युवतियों के टिंडर एप पर अकाउंट बनवाए थे। ये युवतियां लोगों को बातों में फंसाकर होटल या फ्लैट में बुलाती थीं। इसके बाद अंतरंग संबंधों का स्पाई कैमरे से वीडियो बना लेती थीं।

दिल्ली से लापता हुई किशोरी को नक्सल क्षेत्र से लेकर आई पुलिस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: दिल्ली के नरेला इलाके से लापता किशोरी को उत्तरी बाहरी जिले की एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट (एएचटीयू) शाखा पुलिस ने बिहार के नक्सली इलाके से वापस लाकर परिवार को सौंप दिया है। साथ ही किशोरी को वहां लेकर गए उसके प्रेमी को भी गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित किशोरी को उस इलाके में लेकर इसलिए गया था ताकि पुलिस नक्सलियों का नाम सुनकर वहां पर जाने की कोशिश न करे।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि पिछले साल 12 अक्टूबर को नरेला क्षेत्र के एक गांव से एक किशोरी और एक नाबालिग लापता हो गई थी। वह चप्पल बनाने वाली फैक्ट्री में नौकरी करती थी। दोनों का पता लगाने के लिए एएचटीयू के इंस्पेक्टर राकेश मालिक के निर्देशन में एक टीम बनाई गई। टीम ने परिवार व उनके रिश्तेदारों से दोबारा पूछताछ की तो पता लगा कि किशोरी जिस फैक्ट्री में काम करती थी वहां पर बिहार के जमुई का रहने वाला उमेश पासवान भी काम करता था। वह भी लापता था। पुलिस को पता लगा था कि दोनों अपने प्रेमियों के साथ कहीं गई हैं। इसी बीच पुलिस ने नाबालिग व उसके प्रेमी राहुल को दिल्ली से ही ढूंढ निकाला। लेकिन किशोरी का पता नहीं लगा। कई महीने गुजर जाने के बाद बीते दिनों पता लगा कि उमेश लड़की को लेकर बिहार के नक्सली इलाके में छिपा हुआ है। जो झारखंड के पास है। पुलिस नक्सली इलाके के गांव रेचोर से किशोरी और उमेश को लेकर नक्सलियों से बचते हुए वापस दिल्ली पहुंची।

कोरोना से प्रभावित हुआ अवैध भूजल दोहन रोकने का अभियान

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

राजधानी में अवैध बोरवेल के खिलाफ कार्रवाई के लिए एक बार फिर पहल शुरू कर दी गई है। हालांकि, अवैध भूजल दोहन को रोकने का अभियान अब तक सुस्त ही रहा है। कोरोना की दूसरी लहर के कारण भी अवैध बोरवेल को सील करने की कार्रवाई प्रभावित रही है। यही वजह है कि दिल्ली में अब तक सिर्फ 5430 बोरवेल ही सील किए जा सके हैं। 14,920 को अभी तक सील नहीं किया जा सका है।

दरअसल, एनजीटी ने राजधानी में गिरते भूजल स्तर के मद्देनजर अवैध बोरवेल का सर्वे करने का निर्देश दिया था। इसके बाद जल बोर्ड ने करीब ढाई साल पहले सर्वे शुरू किया था। इस दौरान जल बोर्ड ने कुल 20,350 बोरवेल की पहचान की। हालांकि, यह आंकड़ा भी सवालों के घेरे में रहा है। बहरहाल, सर्वे में अवैध पाए गए 73.31 फीसद बोरवेल सील नहीं किए जा सके। इस वजह से भूजल का दोहन जारी है। जल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर पश्चिमी दिल्ली में अवैध बोरवेल से भूजल का दोहन सबसे अधिक हो रहा है। क्योंकि, इस जिले में ही सबसे अधिक 9067 बोरवेल अवैध पाए गए। दक्षिणी पश्चिमी व पश्चिमी दिल्ली में भी अवैध बोरवेल अधिक हैं। इसे सील करने की जिम्मेदारी जिला प्रशासन की है। लेकिन जिला प्रशासन टीकाकरण अभियान में व्यस्त है। इस वजह से अवैध बोरवेल को सील करने की कार्रवाई नहीं हो पा रही है। जल बोर्ड के अनुसार एक बार फिर कार्रवाई शुरू की जाएगी।

केंद्रीय भूजल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार पिछले एक दशक में दिल्ली के ज्यादातर हिस्सों में आठ मीटर तक भूजल स्तर गिरा है।

जिला	कुल बोरवेल	सील
उत्तर	768	236
पश्चिम	2185	787
उत्तर पश्चिम	9067	2500
नई दिल्ली	75	62
मध्य	687	158
दक्षिण पूर्व	297	187
दक्षिण पश्चिम	6644	1315
दक्षिण	84	45
शाहदरा	552	140
कुल	20,350	5430

हरियाणा के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचा दिल्ली जल बोर्ड

जागरण टीम, नई दिल्ली

पानी रोकने का आरोप

▸ जल बोर्ड के उपाध्यक्ष राघव चड्ढा ने कहा, हरियाणा से कम पानी छोड़े जाने से कम हुआ यमुना का जलस्तर

▸ वजीराबाद में जलस्तर 674.5 फीट से घटकर 667 हुआ, कई इलाकों में पेयजल किल्लत

हरियाणा पर यमुना में दिल्ली के हिस्से का कम पानी छोड़ने का आरोप लगाते हुए दिल्ली जल बोर्ड ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। याचिका दायर कर सर्वोच्च न्यायालय से दिल्ली के हिस्से का पानी दिलवाने की मांग की गई है।

दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष राघव चड्ढा ने ट्वीट कर आरोप लगाया कि हरियाणा द्वारा पानी रोके जाने से वजीराबाद में यमुना का जल स्तर साढ़े सात फीट कम हो गया है। इससे नई दिल्ली नगर पालिका परिषद (एनडीएमएसी), मध्य, पश्चिमी व दक्षिणी दिल्ली के कई इलाकों में पेयजल आपूर्ति प्रभावित है। चड्ढा ने ट्वीट किया कि वजीराबाद में यमुना का जलस्तर एक फीट भी कम हो जाए तो दिल्ली में जल संकट शुरू हो जाता है। वजीराबाद में यमुना का जलस्तर 674.5 फीट होना चाहिए, जो घटकर 667 फीट रह गया है। हरियाणा से यमुना में जो पानी छोड़ा जाता है, उसका यह अब तक का सबसे निचला स्तर है। दिल्ली को 120 एमजीडी पानी कम मिल रहा है। चड्ढा ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने 1995-96 में दिल्ली के हिस्से का पानी निर्धारित किया था, जिसे रोकना अदालत के आदेश की अवमानना है।


सुप्रीम कोर्ट से हिस्सा दिलवाने की मांग। फाइल

यमुना में पानी कम होने की वजह से चंद्रावल जल शोधन संयंत्र से 90 एमजीडी की जगह 55 एमजीडी पानी आपूर्ति हो पा रही है। वहीं वजीराबाद संयंत्र से आपूर्ति 135 एमजीडी से घटकर 80 एमजीडी व ओखला संयंत्र से 20 एमजीडी से घटकर 12 एमजीडी रह गई है। एक दिन पहले भी उन्होंने हरियाणा पर दिल्ली के हिस्से का पानी रोकने का आरोप लगाया था, जिसे हरियाणा ने गलत बताया था।

हरियाणा ने कहा, यमुना में 40 फीसद पानी की कमी, फिर भी दे रहे पूरा पानी

नए आरोपों पर हरियाणा ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उसका कहना है कि दिल्ली को नहर के माध्यम से मूनक में 1049 क्यूसेक पानी दिया जाता है, जिसकी मात्रा बवाना कांटेक्ट प्वाइंट पर 950 क्यूसेक बनती है, जिसे निरंतर उपलब्ध कराया जा रहा है। यमुना में इस वर्ष लगभग 40 फीसद पानी की कमी के बावजूद हरियाणा ने दिल्ली को अपने हिस्से का पानी दिया है। हरियाणा के मुख्यमंत्री के प्रिंसिपल मीडिया एडवाइजर विनोद मेहता ने कहा कि हरियाणा ने अक्सर दिल्ली के लोगों की जरूरत समझी और दिल्ली को ज्यादा पानी दिया, लेकिन आम आदमी पार्टी के लोगों की आदत शिकायत करने की हो गई है। हरियाणा के कृषि मंत्री जेपी दलाल ने कहा कि दिल्ली को हक का पूरा पानी दिया जा रहा है। लांछन लगाना आम आदमी पार्टी की आदत बन गई है। इसीलिए उनको अब कोई गंभीरता से नहीं लेता।

पानी को लेकर आप का प्रदर्शन, भाजपा ने बताया प्रदेश अध्यक्ष के घर पर हमला

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

राजधानी में जल संकट को लेकर आप और भाजपा के बीच रार बढ़ती ही जा रही है। रविवार को आप कार्यकर्ताओं ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता के पटेल नगर स्थित आवास पर प्रदर्शन किया। आप विधायक राजकुमार आनंद और आप की यूथ विंग के अध्यक्ष रमेश मटियाला का दावा है कि उन्होंने गुप्ता के घर का पानी का कनेक्शन काट दिया है। वहीं, भाजपा ने इसे प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता के घर पर हमला बताते हुए इसमें शामिल लोगों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने की मांग की है। पार्टी का कहना है कि दिल्ली की जनता पानी मांग रही है और आप नेता लोगों के घरों का कनेक्शन काट रहे हैं। इससे स्थानीय लोग परेशान हो रहे हैं और उनमें काफी आक्रोश है।

हरियाणा से यमुना में कम पानी छोड़े जाने का आरोप लगाते हुए आप यूथ विंग के कार्यकर्ताओं के साथ रविवार दोपहर राजकुमार आनंद और रमेश मटियाला पटेल नगर पहुंचे। यहां पुलिस ने गुप्ता के घर से पहले ही प्रदर्शनकारियों को रोक लिया। इस दौरान, कुछ लोगों ने फावड़े से सड़क खोदने का प्रयास किया। इस पर पुलिस ने 15 लोगों को हिरासत में ले लिया. जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया।

आप के दिल्ली नगर निगम प्रभारी दुर्गेश पाठक ने कहा कि हरियाणा सरकार दिल्ली वालों के हक का पानी नहीं दे रही है। इसके चलते कुछ दिनों से दिल्ली में पानी की किल्लत हो गई है। भाजपा को आप ने 24 घंटे का वक्त दिया था कि यदि दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने इस समस्या का हल नहीं निकाला तो उनका पानी का कनेक्शन काट दिया जाएगा, लेकिन भाजपा ने कोई कदम नहीं उठाया। इसके बाद कार्यकर्ताओं को यह कदम उठाना पड़ा।

भाजपा के प्रदेश महामंत्री हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के घर पर हमला करना निंदनीय है। दिल्ली सरकार दिल्ली वालों को अपने दावे के अनुरूप स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने में विफल रही है।

सीबीआइ ने बीओसी के अधिकारियों पर दर्ज किया मुकदमा

नई दिल्ली, प्रेट्र : सीबीआइ ने फर्जी दस्तावेज के आधार पर समाचार पत्रों को सरकारी विज्ञापन के लिए पैनल में शामिल करने के मामले में ब्यूरो आफ आउटरीच एंड कम्युनिकेशन (बीओसी) के अज्ञात अधिकारियों तथा हरीश लांबा, आरती लांबा व अश्वनी कुमार के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

प्रारंभिक जांच के बाद सीबीआइ का आरोप है कि विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय (डीएवीपी), जो अब बीओसी है के अधिकारियों ने हरीश व आरती के साथ साठगांठ करके फर्जी दस्तावेज के आधार पर छह समाचार पत्रों को डीएवीपी में सूचीबद्ध करवा दिया। इनमें अर्जुन टाइम्स, हेल्थ आफ भारत व दिल्ली हेल्थ के दो-दो संस्करण शामिल हैं। एजेंसी ने 30 अगस्त, 2019 को संयुक्त जांच के आधार पर प्रारंभिक पड़ताल शुरू की थी।

बाइक बोट के निदेशक की डेढ़ करोड़ की संपत्ति जब्त

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा

▸ देश के सवा दो लाख लोगों से ठगी का मामला, कासना कोतवाली पुलिस ने की कार्रवाई

गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट पुलिस ने बाइक बोट के निदेशक की मेरठ स्थित डेढ़ करोड़ की संपत्ति जब्त की है। दादरी कोतवाली में निदेशक विजयपाल कसाना के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। कासना कोतवाली पुलिस ने मामले की जांच कर कार्रवाई की है। गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट के अंतर्गत अब तक बदमाशों की 150 करोड़ के करीब की संपत्ति जब्त हो चुकी है। कई अन्य आरोपित पुलिस की रडार पर है जिन्होंने अवैध तरीके से संपत्ति अर्जित की है। पुलिस उन पर भी जल्द ही कार्रवाई करेगी। एडिशनल डीसीपी विशाल पांडेय ने बताया कि विशेष न्यायालय पुलिस आयुक्त गौतमबुद्ध नगर द्वारा अपराधियों तथा उनके सहयोगियों पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु चल अचल संपत्ति जब्त की जा रही है। बाइक बोट कंपनी के निदेशक विजयपाल कसाना की मेरठ स्थित डेढ़ करोड़ की संपत्ति जब्त की गई है। उसके द्वारा मकान का निर्माण कराया जा रहा था। विजयपाल मेरठ के फलावदा अहमदपुर का रहने वाला है।

यह है बाइक बोट घोटाला: देश के सवा दो लाख लोगों से बाइक चलवाने के नाम पर ठगी की गई। प्रत्येक बाइक के नाम पर 62100 रुपये लिए गए। निवेश रकम का एक साल में दोगुना वापस करने का झांसा दिया गया। झांसे में आकर लोगों ने कई बाइकों के नाम पर कंपनी में निवेश कर दिया। देश के अलग-अलग कोना जम्मू कश्मीर, पंजाब, दिल्ली सहित कई अन्य प्रदेशों में कंपनी के ऑफिस खोलकर ठगी की गई।

बस घोटाला मामले में इस्तीफा दें केजरीवाल : गुप्ता

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के लिए एक हजार बसों की खरीद में कथित घोटाले को लेकर दिल्ली भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का इस्तीफा मांगा है। बसों की खरीद में घोटाले की बात लिखी तख्तियां लेकर भाजपा विधायकों और कार्यकर्ताओं ने गुप्ता के नेतृत्व में मुख्यमंत्री आवास पर प्रदर्शन किया। इस दौरान, गुप्ता ने इस मामले की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) से जांच कराने और परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत को बर्खास्त करने की भी मांग की।

आदेश गुप्ता ने कहा कि उपराज्यपाल द्वारा गठित समिति की रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि बस खरीद और बसों के रखरखाव को लेकर हुए टेंडर में सामान्य वित्त नियमों के साथ केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशों का पालन नहीं हुआ। बसों की खरीद के मूल्य से लगभग तीन गुना ज्यादा बसों के रखरखाव का टेंडर दिया गया, जो बसों की खरीद के पहले दिन से लागू होता है, जबकि इसे वारंटी के समय के बाद लागू होना चाहिए था। अब जांच समिति ने 3500 करोड़ रुपये के रखरखाव के टेंडर को रद कर नए सिरे से टेंडर करने को कहा है। इससे स्पष्ट हो गया है कि घोटाला हुआ है, इसलिए इस मामले की निष्पक्ष जांच के लिए परिवहन मंत्री और अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई होनी ही चाहिए। गुप्ता ने कहा कि इस मामले का समाधान न होने तक भाजपा इस विरोध प्रदर्शन को जारी रखेगी। घोटाले की निष्पक्ष जांच के लिए परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत और अधिकारियों का हटना जरूरी है।


डीटीसी बसों की खरीदारी में घोटाले की जांच की मांग को लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास के नजदीक भाजपा विधायकों के साथ धरना पर बैठे दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता (बाएं से तीसरे)। संजय

नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा कि जांच समिति ने कहा है कि रखरखाव के टेंडर को नए सिरे से जारी किया जाए। इससे स्पष्ट है कि घोटाला हुआ है। उन्होंने कहा कि डीटीसी के पास अपने डिपो, वर्कशाप और कर्मचारी हैं तो फिर रखरखाव का कार्य बाहर से क्यों कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल एसीबी से आगे की जांच कराने के निर्देश दें। प्रदर्शन के दौरान भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता, अनिल बाजपेयी, ओपी शर्मा, मोहन सिंह बिष्ट, अभय वर्मा, अजय महावर समेत अन्य भाजपा पदाधिकारी भी मौजूद थे।

जेएनयू में हुई उप्र की योगी सरकार की कानून व्यवस्था की प्रशंसा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▸ 'आइए चलें यूपी की ओर' में सामने आई योगी आदित्यनाथ की मजबूत इच्छाशक्ति

कभी वामपंथी विचारकों के गढ़ रहे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार की तारीफ हुई है। यहां आयोजित एक विमर्श में वक्ताओं ने उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था और दूसरी प्रतिबद्धताओं की प्रशंसा की।

जेएनयू में प्रोफेसर पूनम कुमारी द्वारा आयोजित 'आइए चलें यूपी की ओर' विषयक चर्चा में दिल्ली विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. सिद्धार्थ मिश्रा और अन्य प्रबुद्ध लोगों हिस्सा लिया। डा. सिद्धार्थ मिश्रा ने कहा कि पिछली सरकारों में कानून व्यवस्था में ढिलाई की वजह प्रतिबद्धता में कमी व उदासीनता थी। लेकिन, वर्तमान सरकार ने अपराध के प्रति जीरो टालरेंस और महिला सुरक्षा पर जोर देते हुए जो व्यवस्था की है, वह प्रशंसनीय है। विमर्श के दूसरे हिस्से में सौरभ अखौरी ने इस बात पर जोर दिया कि यदि शासक की दृष्टि सही और इच्छाशक्ति मजबूत हो तो प्रजा का कल्याण संभव है। उन्होंने 1986 के यूपी गैंगस्टर एक्ट का हवाला देते हुए बताया कि आतंक, हिंसा, फिरौती, राज्य की शांति और संपत्ति नष्ट करने की कोशिश इन सभी मुद्दों पर पहले भी कानून थे, पर इच्छाशक्ति की कमी के चलते पहले की सरकारें कानून व्यवस्था ठीक करने में उतनी सफल न हो सकीं। वर्तमान सरकार ने सभी कानूनों को लागू किया है। विमर्श की संयोजक डा. पूनम कुमारी ने कहा कि मौजूदा सरकार द्वारा सुधारी गई कानून व्यवस्था को वहां के लोग महसूस करते हैं। यह मौजूदा नेतृत्व की मजबूत इच्छाशक्ति से ही संभव हो सका है।

मुठभेड़ के बाद पकड़ में आए लूट के आरोपित

जागरण संवाददाता, पश्चिमी दिल्ली

▸ एक आरोपित को पैर में लगी गोली, दोनों आरोपितों से मिली जानकारी के आधार पर तीसरे को भी दबोचा

रविवार सुबह पांच बजे उत्तम नगर थाने से थोड़ी ही दूर बस टर्मिनल से नजफगढ़ नाले की ओर जाने वाली न्यू डीडीए सड़क पर द्वारका जिला पुलिस के स्पेशल स्टाफ व बदमाशों के बीच मुठभेड़ के बाद दो बदमाशों को गिरफ्तार करने में पुलिस ने कामयाबी पाई। मुठभेड़ के दौरान एक बदमाश को पैर में गोली लगी। गिरफ्तार बदमाशों में अंकुश व मुकुल शामिल है। बाद में पुलिस ने एक और बदमाश को पकड़ने में कामयाबी पाई। मौके से पुलिस ने एक मोटरसाइकिल, एक पिस्टल, एक चाकू बरामद किए हैं। मोटरसाइकिल विकासपुरी इलाके से चुराई गई थी।

द्वारका जिला पुलिस उपायुक्त संतोष कुमार मीणा ने बताया कि जब मोटरसाइकिल सवार दोनों आरोपित अंकुश व मुकुल न्यू डीडीए रोड से गुजर रहे थे तब पुलिसकर्मियों ने उन्हें आत्मसमर्पण करने को कहा, लेकिन वे पुलिसकर्मियों पर ही गोली चलाने लगे। पुलिस ने भी गोलियां चलाईं। जिसमें एक गोली अंकुश के पैर में लगी। इसके बाद दोनों बदमाश इससे पहले कि भाग पाते, पुलिसकर्मियों ने उन्हें दबोच लिया। उपायुक्त ने बताया कि बदमाश ने एक गोली कांस्टेबल राजकुमार पर चलाई, लेकिन बुलेटप्रूफ जैकेट के कारण वे बच गए।

सदर बाजार का रहने वाला अंकुश फरवरी महीने में जेल से बाहर आया था, वहीं आजादपुर का रहने वाला मुकुल एक साल से जमानत पर था। दोनों इसके पहले भी लूट की वारदात को अंजाम दे चुके हैं। बाद में अंकुश व मुकुल से मिली जानकारी के आधार पर दीपांशु उर्फ वाशु को भी दबोच लिया। जिनके घर में लूट की वारदात हुई है, दीपांशु उनके यहां काम कर चुका है। दीपांशु ने ही अंकुश व मुकुल को बताया था कि यदि प्रापर्टी कारोबारी के यहां लूटपाट की जाए तो काफी नकदी व आभूषण बरामद होंगे।

सदर बाजार से ऐसे जुड़ गया मामला: पुलिस ने जब पीड़ित कारोबारी के पुराने कर्मचारियों पर ध्यान लगाया तो दीपांशु के बारे में पता चला। दीपांशु इन दिनों उत्तम नगर में रह रहा था, लेकिन वह एक साल पहले सदर बजार में रहता था। स्पेशल स्टाफ को छानबीन के दौरान पता चला कि सदर बाजार इलाके में इसी वर्ष जून महीने में लूट की वारदात को बदमाशों ने अंजाम दिया था। संयोग से पुलिस को सदर बाजार लूट से जुड़े कुछ सीसीटीवी फुटेज मिले। फुटेज को खंगाला गया तो पता चला कि वहां भी बदमाशों ने उसी स्कूटी का इस्तेमाल किया जिस तरह की स्कूटी का इस्तेमाल उत्तम नगर में किया गया। इसके अलावा बदमाशों का हुलिया भी एक दूसरे से मिल रहा था। तब पुलिस ने सदर बाजार इलाके में सक्रिय बदमाशों की तलाश शुरू की थी।

सुनिश्चित करें, देश छोड़कर भागने न पाएं मनजिंदर सिंह सिरसा : कोर्ट

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

पटियाला हाउस कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को निर्देश दिया कि वह सुनिश्चित करे कि शिरोमणि अकाली दल के नेता मनजिंदर सिंह सिरसा देश छोड़कर न भागने पाएं। सिरसा पर दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति (डीएसजीपीसी) के महासचिव रहने के दौरान डीएसजीपीसी के धन का दुरुपयोग करने का आरोप है और मामले में जांच चल रही है। मेट्रोपालिटन मजिस्ट्रेट पंकज शर्मा ने कहा कि शिकायतकर्ता की ओर से व्यक्त की गई आशंका और उचित जांच के हित को देखते हुए जांच अधिकारी यह सुनिश्चित करे कि सिरसा भागने न पाएं। अदालत ने पुलिस को मामले में 26 जुलाई को प्रगति रिपोर्ट पेश करने करने का निर्देश देते हुए सुनवाई स्थगित कर दी। भूपिंदर की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता संजय एबट ने अदालत को बताया कि सिरसा पहले ही अपनी संपत्तियां बेच चुके हैं और उड़ान बहाल होते ही वह देश छोड़कर भाग सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जांच एजेंसी ने अब तक सिरसा को ऐसा करने से रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाए हैं।

वहीं, पुलिस ने अदालत को बताया कि जांच में शामिल होने के कारण सिरसा के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर (एलओसी) नहीं जारी किया गया है। इससे पहले अदालत ने दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) को भूपिंदर सिंह की शिकायत पर प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया था और ईओडब्ल्यू ने मामले में प्राथमिकी दर्ज की थी। भूपिंदर ने आरोप लगाया था कि वर्ष 2013 में डीएसजीपीसी के महासचिव रहने के दौरान सिरसा ने सार्वजनिक धन का गलत इस्तेमाल किया था।

22 महीनों में जल जीवन मिशन के तहत जापानी इंसेफेलाइटिस- एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम (जेई-एईएस) प्रभावित 61 जिलों में 97 लाख से ज्यादा घरों को नल से जल उपलब्ध कराया गया है। यह जानकारी जल शक्ति मंत्रालय ने दी है।

पद्म पुरस्कारों के लिए उल्लेखनीय काम करने वालों का दें नाम : मोदी

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों से पद्म पुरस्कारों के लिए ऐसे व्यक्तियों को नामित करने का आग्रह किया है, जिन्होंने बुनियादी स्तर पर उल्लेखनीय काम किया है। एक ट्वीट में मोदी ने कहा कि भारत में ऐसे कई प्रतिभावान लोग हैं, जिन्होंने बुनियादी स्तर पर उल्लेखनीय काम किया है, लेकिन वे चर्चा में नहीं आ पाते हैं।

वेबसाइट का लिंक साझा करते हुए प्रधानमंत्री ने ट्वीट किया, 'भारत के पास ऐसे कई प्रतिभाशाली लोग हैं जो बुनियादी स्तर पर उल्लेखनीय काम कर रहे हैं। हम अकसर उन्हें देख या सुन नहीं पाते हैं। क्या आप ऐसे प्रेरणा देने वाले लोगों को जानते हैं? आप उन्हें हैश पीपुल्स पद्म के लिए नामित कर सकते हैं। वेबसाइट http://padmaawards.gov.inl पर 15 सितंबर तक नामांकन खुला रहेगा।

बता दें कि पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री के नाम से दिया जाना वाला पद्म सम्मान देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। पिछले कुछ वर्षों में मोदी सरकार ने चर्चा से दूर रहने वाली हस्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में समाज के लिए जीवनपर्यंत योगदान और उनकी उपलब्धियों के लिए पद्म सम्मान से नवाजा है।

बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को गति देने में जुटे रेल मंत्री वैष्णव

प्राथमिकता ▶ मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना की समीक्षा की

गुजरात में हो रहा तेजी से काम, महाराष्ट्र में भूमि अधिग्रहण लटका



अश्विनी वैष्णव। फाइल फोटो इंटरनेट मीडिया

नई दिल्ली, प्रेट्र : नवनियुक्त रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रविवार को अहमदाबाद और मुंबई के बीच महत्वाकांक्षी बुलेट ट्रेन परियोजना की समीक्षा की। समीक्षा बैठक में इस प्रोजेक्ट की कार्यान्वयन एजेंसी, नेशनल हाई स्पीड रेल कार्पोरेशन लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) के प्रबंध निदेशक ने रेल मंत्री को परियोजना की स्थिति से अवगत कराया। समीक्षा बैठक के बाद वैष्णव ने ट्वीट किया कि एनएचएसआर के प्रबंध निदेशक सतीश अग्निहोत्री के साथ अहमदाबाद-मुंबई हाई स्पीड लाइन के कार्यान्वयन की समीक्षा की।

अधिकारियों ने बताया कि इस प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक कुल 1,396 हेक्टेयर में से 1,035 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया जा चुका है। अब तक अधिग्रहीत 74 फीसद का अधिकांश हिस्सा यानी करीब 96 फीसद भूमि गुजरात में है। करीब 25 फीसद भूमि महाराष्ट्र में है।

अधिकारियों ने कहा गुजरात और दादरा नगर हवेली में पांच स्टेशनों और 351 किलोमीटर में 325 किलोमीटर के अलाइनमेंट के काम के ठीके दिए जा चुके हैं। इस क्षेत्र में निर्माण कार्य शुरू हो गया है। करीब 90 फीसद जमीन ठीकेदारों को सौंपी जा चुकी है। इस काम को पूरा करने में लगभग 2,200 लोग और 300 प्रमुख हैवी मशीनरी तेजी से जुटी हैं।

अधिकारियों ने बताया कि ठीकेदारों ने इस प्रोजेक्ट से संबंधित 5,300 से अधिक ड्राइंग एनएचएसआरसीएल को पेश की हैं। प्रोजेक्ट से संबंधित 785 स्थानों पर भू-तकनीकी जांच पूरी कर ली गई है। छह जगह पाइल कास्टिंग का परीक्षण पूरा कर लिया गया है। फिलहाल 10 साइट पर निर्माण कार्य चल रहा है। अधिकारियों ने उम्मीद जताई कि इस साल के अंत तक एलाइनमेंट के शेष आठ प्रतिशत काम और गुजरात के तीन शेष स्टेशनों के लिए ठीके दे दिए जाएंगे। इसी तरह साबरमती रोलिंग स्टाक डिपो के लिए अगले साल की शुरुआत में ठीका दे दिया जाएगा।

237 किलोमीटर के लिए ट्रैक निर्माण कार्य भी इस वर्ष की अंतिम तिमाही तक शुरू होने की उम्मीद है। इसके अलावा गुजरात में शेष ट्रैक का काम अगले साल की शुरुआत तक किए जाने की उम्मीद है। अधिकारियों ने कहा कि महाराष्ट्र में अभी काम भूमि अधिग्रहण के स्तर पर अटका है। अधिकारियों ने कहा कि महाराष्ट्र में जब तक प्रोजेक्ट के लिए जरूरी 80 फीसद जमीन का अधिग्रहण नहीं हो जाता जब तक अलाइनमेंट का ठीका नहीं दिया जा सकता। महाराष्ट्र में चल रही महामारी और धीमी भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया इस प्रोजेक्ट में बड़ी बाधा बनी हुई है। महामारी के असर में कमी आने, भूमि अधिग्रहण और टेंडर प्रक्रिया को अंतिम रूप देने के काम का जायजा लेने के बाद परियोजना के संबंध में नई समयसीमा तय की जाएगी। इस रूट की कुल लंबाई 508 किमी होगी।

सात अगस्त से फिर से चलेगी निजी ट्रेन तेजस

जागरण संवाददाता, लखनऊ

- कोरोना के कारण कम हो गए थे यात्री, चार अप्रैल से थी निरस्त
- अब सप्ताह में सिर्फ चार दिन होगा इस ट्रेन का संचालन

देश की पहली निजी ट्रेन तेजस एक्सप्रेस का संचालन एक बार फिर से भारतीय रेल खानपान एवं पर्यटन निगम (आइआरसीटीसी) ने सात अगस्त से करने का निर्णय किया है। आइआरसीटीसी के प्रस्ताव पर रेलवे बोर्ड ने मुहर लगा दी है। सात अगस्त से ही लखनऊ नई दिल्ली के साथ-साथ मुंबई अहमदाबाद तेजस एक्सप्रेस का संचालन होगा। लखनऊ से नई दिल्ली तेजस एक्सप्रेस का संचालन सप्ताह में चार दिन होगा।

लखनऊ से नई दिल्ली के बीच चलने वाली तेजस का संचालन कभी लगातार नहीं हो पाया। चार अक्टूबर, 2019 को देश की इस पहली प्राइवेट ट्रेन का संचालन शुरू हुआ था। रेलवे अफसरों के मुताबिक, पिछले साल कोरोना में यात्री न मिलने के कारण 19 मार्च से इसका संचालन बंद कर दिया गया था। फिर दशहरे से पहले 17 अक्टूबर से तेजस का संचालन शुरू किया गया। दीपावली बीतने के बाद यात्रियों की कमी के चलते इसका संचालन एक बार फिर बंद कर दिया गया था। आइआरसीटीसी ने 14 फरवरी से फिर तेजस का संचालन आरंभ किया। होली के आसपास तो तेजस को खूब यात्री मिले, लेकिन बाद में यात्रियों का टोटा हो गया। ऐसे में आइआरसीटीसी ने बीते चार अप्रैल से एक बार फिर तेजस का संचालन अगले आदेश तक रद्द कर दिया था। अब तेजस एक्सप्रेस (82501/82502) का संचालन शुक्रवार, शनिवार, रविवार और सोमवार को किया जाएगा। यह ट्रेन लखनऊ जंक्शन से सुबह 6:10 बजे रवाना होकर नई दिल्ली 12:25 बजे पहुंचती है। वापसी में नई दिल्ली से 15:40 बजे चलकर लखनऊ 22:05 बजे पहुंचती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने बनाई सतत विकास प्रणाली : शाह

अहमदाबाद, प्रेट्र : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शायद पहले नेता हैं, जिन्होंने ऐसी प्रणाली विकसित की जिससे उनके पद त्यागने के बाद भी विकास कार्य जारी रहें। गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल इसका बेहतरीन उदाहरण है।

गुजरात के गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में आने वाले अहमदाबाद व आसपास के इलाकों के लिए 244 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का शिलान्यास करते हुए शाह ने कहा, 'राजनीति के इतने वर्षों में मैंने कई प्रकार के नेताओं को देखा है। कुछ ऐसे होते हैं जो कार्यों को उनकी गति में होने देते हैं और फीता काटने जाते हैं। कुछ अपने कार्यकाल में सर्वोत्तम विकास कार्यों के संपादन के लिए कठिन परिश्रम करते हैं, लेकिन कुछ थड़े अलग होते हैं, शायद नरेंद्र भाई की तरह जो ऐसी प्रणाली विकसित करते हैं कि उनके पद छोड़ने के बाद भी विकास कार्य जारी रहें।'

लोगों को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी के 14 साल के शासनकाल में गुजरात को बहुत फायदा हुआ है। उन्होंने पश्चिम रेलवे की कुछ परियोजनाओं का उद्घाटन भी किया।

अर्थव्यवस्था की बेहतरी के लिए जनसंख्या नियंत्रण जरूरी : पवार

मुंबई, एएनआइ : उत्तर प्रदेश सरकार के प्रस्तावित जनसंख्या नियंत्रण विधेयक के मसौदे के मद्देनजर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रमुख शरद पवार ने रविवार को कहा देश की अर्थव्यवस्था की बेहतरी, निरंतरता और लोगों की खुशहाली के लिए जनसंख्या को नियंत्रित करने की जरूरत है। पवार के इस बयान से साफ है कि जनसंख्या नियंत्रण के पक्ष में और पार्टियों में भी माहौल तैयार हो सकता है।

विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर पवार ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था, सकल राष्ट्रीय आय, स्वस्थ जीवन स्तर और संतुलित वातावरण को बनाए रखने के लिए जनसंख्या नियंत्रण का संदेश दूर-दूर तक पहुंचाने की आवश्यकता है। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर हर जागरूक नागरिक को जनसंख्या नियंत्रण में योगदान करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करनी चाहिए।

महाराष्ट्र में सहकारिता आंदोलन पर नए मंत्रालय का नहीं होगा असर : राकांपा प्रमुख शरद पवार ने उन खबरों का खंडन किया, जिनमें दावा किया गया था कि केंद्र में नवगठित सहकारिता मंत्रालय महाराष्ट्र में सहकारिता आंदोलन को ठिकाने लगा सकता है। प्रेट्र के अनुसार रविवार को उन्होंने बारामती शहर में संवाददाताओं से कहा कि यह अवधारणा नई नहीं है, लेकिन केंद्र राज्य के सहकारी क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि केंद्र का नवगठित मंत्रालय बहु-राज्य सहकारी संस्थानों के बारे में है। पवार ने कहा कि एक प्रदेश, अधिक राज्यों में पंजीकृत सहकारी संस्था को नियंत्रित नहीं कर सकता। ऐसे में हाल ही में गठित मंत्रालय कई राज्यों में फैले सहकारी संस्थाओं के लिए है। उल्लेखनीय है केंद्र सरकार ने हाल ही में सहकारिता मंत्रालय गठित कर उसकी कमान अमित शाह को सौंपी है।

महाराष्ट्र विधानसभा का अगला स्पीकर होगा कांग्रेस का : प्रेट्र के अनुसार राकांपा प्रमुख ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि सत्तारूढ़ महा विकास अघाड़ी (एमवीए) के तीन घटक दलों ने फैसला किया है कि महाराष्ट्र विधानसभा का अगला अध्यक्ष कांग्रेस पार्टी का होगा। कांग्रेस जो भी फैसला करेगी उसका हम सभी समर्थन करेंगे। उल्लेखनीय है कांग्रेस विधायक नाना पटोले के इस साल फरवरी में पार्टी की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष का पद संभालने के लिए इस्तीफा देने के बाद यह पद खाली हो गया था।

खन्ना बोले, दंड के बजाए प्रोत्साहनों पर हो जोर

प्रथम पृष्ठ से आगे

कार्यक्रम में उप्र के चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि 1975 में एक सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण को लेकर कार्रवाई की थी। 1977 के बाद कोई सरकार इसे घोषणापत्र में शामिल करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई, क्योंकि माना जाने लगा कि यह आस्थाओं से जुड़ा मुद्दा है। यह निरक्षरता से भी जुड़ा मसला है। देश में बड़ी आबादी ऐसी है जो साक्षर होने के बावजूद इसे आस्था से जोड़कर देखती है। कहा कि यह उनका निजी अनुभव है कि जनसंख्या नियंत्रण में यदि दंडात्मक प्रविधान, प्रतिबंधों के बजाए प्रोत्साहनों और अनुदान पर जोर दिया जाए तो यह ज्यादा कारगर साबित होगा। उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण कानून के ड्राफ्ट पर जनता से सुझाव मांगने की समयसीमा को बढ़ाने का अनुरोध किया। कहा, वह जल्द ही राज्य विधि आयोग के अध्यक्ष से मुलाकात कर प्रस्तावित कानून के बारे में अपने सुझाव देंगे।

जनसंख्या नियंत्रण से होगा नुकसान : सपा सांसद

जागरण संवाददाता, संभल : अपने बयानों से लगातार चर्चा में रहने वाले संभल के सपा सांसद डा. शफीकुर्रहमान बर्क ने रविवार को जनसंख्या नियंत्रण कानून को लेकर भाजपा पर हमला बोला। कहा कि भाजपा ने खुदा के बनाए तौर तरीकों व नियमों पर हमला शुरू कर दिया है। बच्चे कुदरत की देन हैं, जो नियम अल्लाह बनाता है उसे कौन बदल सकता है। खुदा के काम में दखल देना भाजपा की बड़ी भूल होगी। यदि हमारे पास आबादी नहीं होगी तो हम बाकी देश के मुकाबले कमजोर होंगे। यदि पड़ोसी देश ने हमला कर दिया तो और आबादी में हम कमजोर हुए तो जनशक्ति कहां से लाएंगे। भाजपा विचार करे।

अपने आवास पर पत्रकारों से मुलाकात में सांसद ने प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और आरएसएस पर भी तंज कसा। बोले जिनके घर बच्चे होते हैं, उस परिवार की खुशियां देखते ही बनती हैं। इस कानून को बनाने का सुझाव देने वाले कुछ लोग इन खुशियों को महसूस नहीं कर सकते हैं। वे लोग आमजन की खुशियों को छीनना चाहते हैं। सांसद ने कहा कि सरकार जो कानून लाने जा रही है उसकी याद उसे चुनाव के समय ही क्यों आई। सभी जानते हैं कि चुनाव प्रभावित करने के लिए भाजपा नए नए मुद्दों को उठाती है ताकि जनता का ध्यान महंगाई सहित अन्य चीजों से बंट जाए। जनता भाजपा के इस कुचक्र को समझ चुकी है।

सरकार के बाद अब संगठन में बदलाव की तैयारी

- पांच राज्यों में विस चुनावों के मद्देनजर पार्टी अध्यक्ष नड्डा ने सचिवों संग की बैठक
- पीएम मोदी ने भी आवासीय कार्यालय पर पार्टी पदाधिकारियों से की मुलाकात

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय मंत्रिपरिषद में व्यापक फेरबदल के बाद अब भाजपा संगठन में भी बदलाव की तैयारियां शुरू हो गई हैं। इसी क्रम में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को पार्टी के राष्ट्रीय सचिवों के साथ बैठक की। उन्होंने संगठन की गतिविधियों और पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा की। बाद में सभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बुलावे पर उनके आवास पर पहुंचे और उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया।

सूत्रों के अनुसार, पार्टी सचिवों के साथ बैठक में नड्डा ने संगठन की गतिविधियों के साथ-साथ कोविड टीकाकरण अभियान पर भी चर्चा की। हालांकि, करीब एक घंटे तक चली इस बैठक के दौरान चर्चा के केंद्र में वे पांच राज्य रहे, जहां अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। इनमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा व मणिपुर शामिल हैं। उत्तर प्रदेश समेत चार राज्यों में भाजपा की सरकार है, वहीं पंजाब में कांग्रेस सत्ता में है। इस दौरान उपचुनावों पर भी बातचीत हुई। माना जा रहा है कि पार्टी नेतृत्व केंद्रीय मंत्रिपरिषद से इस्तीफा देने वाले नेताओं को संगठन में समायोजित कर संतुलन कायम रखना चाहता है। बैठक में महाराष्ट्र की पूर्व मंत्री पंकजा मुंडे व विनोद तावड़े समेत ज्यादातर सचिव उपस्थित रहे। पंकजा की उपस्थिति इसलिए भी अहम हो जाती है, क्योंकि माना जा रहा था कि वह अपनी सांसद बहन प्रतिमा मुंडे को केंद्रीय मंत्रिपरिषद में जगह नहीं मिलने से नाराज हैं। पार्टी के एक नेता ने बताया कि पिछले महीने नड्डा और पार्टी महासचिवों की बैठक के बाद भी पीएम मोदी ने सभी को मुलाकात के लिए बुलाया था।

उल्लेखनीय है कि सात जुलाई को केंद्रीय मंत्रिपरिषद में व्यापक फेरबदल हुआ था। मंत्रिपरिषद में 36 नए मंत्री शामिल किए गए थे, जबकि सात को प्रोन्नति दी गई थी। इससे पहले रविशंकर प्रसाद व प्रकाश जावडेकर समेत 12 केंद्रीय मंत्रियों ने मंत्रिपरिषद से इस्तीफा दे दिया था।

नड्डा का गोवा दौरा रद

गोवा भाजपा अध्यक्ष सदानंद शेट तनावड़े ने बताया कि दिल्ली में अन्य कार्यक्रमों की व्यस्तता के कारण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का दो दिवसीय दौरा रद कर दिया गया है। राज्य में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर वह गोवा में पार्टी की विभिन्न इकाइयों के नेताओं के साथ बैठक करने वाले थे।

कोरोना के बीच संघ ने भी शुरू किया 'जीवन'

राजीव द्विवेदी, चित्रकूट

- प्रशिक्षित स्वयंसेवक देश भर में दो लाख 50 हजार जगहों पर मदद को पहुंचेंगे
- 27 हजार 166 शाखाएं मैदान में तो 12 हजार 288 ई-शाखाएं हो रहीं संचालित

कोरोना की पहली लहर के दौरान लाकडाउन हटाने के क्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने भविष्य में कोरोना के बीच भी जीवन चलने की बात की थी, उस पर संघ चल पड़ा है। कोरोना के चलते बदले हालात में संघ ने सेवा कार्य के साथ व्यक्ति निर्माण की अपनी गतिविधियों को शुरू कर दिया है। अखिल भारतीय प्रांत प्रचारकों की बैठक के तीसरे दिन तय हुआ कि तीसरी लहर में संक्रमण को थामने के लिए संघ के प्रशिक्षित स्वयंसेवक दो लाख 50 हजार जगह पहुंचेंगे। कोरोना से बचाव के अभियान में संघ तमाम स्वयंसेवी लोगों और संस्थानों को भी अपने से जोड़ेगा।

बैठक के तीसरे दिन सरसंघचालक, सरकार्यवाह और सभी सह सरकार्यवाह देश के 44 प्रांत प्रमुखों सहित 132 स्वयंसेवकों से वर्चुअली मुखातिब हुए। कोरोना की दूसरी लहर से पैदा हुए हालातों पर चर्चा के साथ प्रांतों में उस दौरान हुए सेवा कार्यों की समीक्षा की गई। स्वयंसेवकों द्वारा वैक्सीनेशन के लिए बनाए सुविधा केंद्र और वैक्सीनेशन के लिए चलाए गए अभियानों की भी समीक्षा हुई। राष्ट्रीय टोली ने प्रांतों के हालात समझे और संघ की गतिविधियों को शुरू करने के लिए दिशा-निर्देश दिए। बैठक में तय किया गया कि संभावित तीसरी लहर से पहले 40 वर्ष तक के युवा स्वयंसेवकों को बचाव कार्य में लगाया जाएगा। उनका अगस्त माह में प्रशिक्षण पूरा कर लिया जाएगा। कोरोना से बचाव के प्रशिक्षण में बच्चों व माताओं के लिए विशेष रूप से आवश्यक सावधानियां व उपायों को शामिल किया गया है। प्रशिक्षित स्वयंसेवकों को सरकारी तंत्र का सहयोग करने और कोरोना पीड़ितों की सेवा के लिए देश भर में दो लाख 50 हजार स्थानों पर भेजा जाएगा। सितंबर से जनजागरण में हर गांव व बस्ती में कई स्वयंसेवी लोगों व संस्थाओं को अभियान में जोड़ा जाएगा।

शाखाओं के साथ कुटुंब मिलन व साप्ताहिक मिलन की शुरुआत : संघ की व्यक्ति निर्माण की पहली पाठशाला उसकी शाखाएं कोरोना की दूसरी लहर के शांत होने पर अब खुले मैदानों में लगनी शुरू हो गई हैं। आनलाइन बैठक में शामिल प्रांत प्रचारकों ने बताया है कि वर्तमान में 39 हजार 454 शाखाएं संचालित की जा रही हैं। इनमें 27 हजार 166 शाखाएं खुले मैदान में लग रहीं तो 12 हजार 288 ई-शाखाएं संचालित हो रही हैं। साप्ताहिक मिलन का 10 हजार 130 जगहों पर आयोजन हो रहा है, जिसमें छह हजार 510 का आयोजन मैदान में किया गया, जबकि 3620 जगह ई-मिलन हो रहा है। लाकडाउन के दौरान देश भर में विशेष रूप से शुरू किए गए कुटुंब मिलन 9637 जगह हुए।

इस साल भी नहीं हो सकेगा संघ का शिक्षा वर्ग

जागरण संवाददाता, चित्रकूट : कोरोना महामारी के चलते पिछले दो साल से नहीं हो सका संघ का शिक्षा वर्ग इस वर्ष भी नहीं होगा। अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक से पूर्व कयास लगाए जा रहे थे कि संघ की गतिविधियों में निरंतरता रखने के लिए शायद राष्ट्रीय टोली कोई रास्ता निकाले। कोई वैकल्पिक व्यवस्था की जाए, जिससे कि शिक्षा वर्ग हो सके। बैठक में शिक्षा वर्ग कराने पर फैसला तो नहीं हुआ और कोविड के हालात को देखते हुए अगले साल भी होगा या नहीं, अब उसका फैसला मार्च, 2022 में प्रतिनिधि सभा में ही लिया जाएगा।

संघ के सांगठनिक ढांचे को चलाते रहने के लिए शिक्षा वर्ग का महत्व इस तरह से समझा जा सकता है कि उसमें ही संघ के प्रचारक तैयार होते हैं। प्रचारकों से ही संघ का ढांचा है, उन्हीं से राष्ट्र कल्याण की तमाम गतिविधियों का संचालन होता है। महामारी के चलते संघ के प्राथमिक से लेकर तृतीय वर्ष का शिक्षा वर्ग नहीं हो सका। शिक्षा वर्ग न होने से न नए प्रचारक बने और न ही वह दूसरों का स्थान ले सके, यानी प्रोन्नति और स्थानांतरण की पूरी प्रक्रिया ही ठहर गई। एक साल बाद हो रही अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक में कोई रास्ता राष्ट्रीय टोली निकालेगी, इसकी संभावना थी, लेकिन अब इसका फैसला अगले साल मार्च में होने वाली प्रतिनिधि सभा में होगा।

ट्विटर ने 22,500 से अधिक अकाउंट निलंबित किए

नई दिल्ली, आइएएनएस : माइक्रो-ब्लागिंग प्लेटफार्म ट्विटर ने भारत के नए आइटी नियमों के तहत जारी अपनी पहली रिपोर्ट में बताया कि उसने चाइल्ड पोर्नोग्राफी, नग्नता और आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले 22,564 अकाउंट निलंबित कर दिए हैं। अपनी रिपोर्ट में ट्विटर ने यह भी कहा कि उसने उत्पीड़न और गोपनीयता के उल्लंघन सहित कई कारणों से 133 पोस्ट के खिलाफ कार्रवाई की है। यह डाटा 26 मई, 2021 से 25 जून, 2021 की अवधि में ट्विटर पर की गई पोस्ट से संबंधित है। कंपनी ने कहा कि इसमें अदालत के आदेश के साथ व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं से प्राप्त शिकायतें शामिल हैं। ये शिकायतें हमें भारत स्थित शिकायत अधिकारी के जरिये मिलीं। कंपनी ने कहा कि इस दौरान हमने 56 शिकायतों को प्रोसेस किया जिनमें ट्विटर अकाउंट निलंबन की अपील की गई थी। ये शिकायतें उचित समाधान और प्रतिक्रिया के साथ निस्तारित की गईं। स्थिति की बारीकियों के आधार पर हमने निलंबित किए गए सात अकाउंट का फैसला उलट दिया।



महिला मंत्रियों की चाय पार्टी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रविवार को मंत्रिपरिषद की सभी 11 महिला सदस्यों को चाय पार्टी (हाई टी) दी। मंत्रिपरिषद में गत बुधवार को सात नई महिला मंत्रियों को शामिल किया गया है। वित्त मंत्री ने ट्वीट किया, 'अपने आवास पर आयोजित हाई टी के दौरान मंत्रिपरिषद की महिला सदस्यों के साथ बातचीत हुई।' जिन नई महिला मंत्रियों को मंत्रिपरिषद में शामिल किया गया है, उनमें मीनाक्षी लेखी, अनुप्रिया पटेल, अन्नपूर्णा देवी, प्रतिमा भौमिक, शोभा करंदलाजे, भारती पवार व दर्शना जरदोश शामिल हैं। हाई टी में मंत्रिपरिषद की पुरानी सहयोगी महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति व रेणुका सिंह सरुता भी मौजूद रहीं। प्रेट्र

बदलाव का प्रयास

हरियाली के संकल्प को एक-एक पौधे से सींच रहे शिवराज

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने लिया है प्रतिदिन पौधारोपण का संकल्प, अब तक करीब 200 पौधे रोप चुके हैं शिवराज सिंह

धनंजय प्रताप सिंह, भोपाल

नई पहल से बदलाव लाने की मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहचान में पौधारोपण का अध्याय नए अंदाज में जुड़ चुका है। वर्ष 2017 में मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश में एक दिन में करोड़ों पौधे रोपने का कीर्तिमान बनवाने की कोशिश के बाद अब वह एक वर्ष तक प्रतिदिन पौधारोपण का लक्ष्य पूरा करने में जुटे हुए हैं।

इसी साल नर्मदा जन्मोत्सव (19 फरवरी) को शिवराज सिंह ने धार्मिक नगरी अमरकंटक में गुलबकावली और साल के पौधे रोपते हुए संकल्प लिया कि एक साल तक प्रतिदिन कम से कम एक पौधा जरूर रोपेंगे। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद वह रोज पौधारोपण करते रहे। यह क्रम अभी जारी है। चाहे राजधानी भोपाल में हों या दिल्ली या कहीं अन्य राज्य या शहर में, वह एक पौधा जरूर रोपते हैं। वह पौधा ऐसे सुरक्षित परिसर में रोपते हैं, जहां उसकी देखभाल की व्यवस्था हो। ऐसे पौधों का चयन किया जाता है जो अपेक्षाकृत कम देखभाल और कम समय में पेड़ बन जाएं। रविवार को उन्होंने इंदौर में पूर्व मंत्री लक्ष्मण सिंह गौड़ की स्मृति में पौधा रोपा।

चुनावी दौरे में भी रोपे पौधे: शिवराज सिंह द्वारा प्रतिदिन पौधारोपण की चर्चा अब पूरे देश में होने लगी है। ऐसा करने वाले वे संभवतः इकलौते मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने गुजरात, बंगाल और केरल के चुनावी दौरे में भी यह क्रम जारी रखा। उन्होंने साकर्णी, नारियल, नीम, बरगद, पीपल सहित अन्य पौधे रोपे। दांडी यात्रा के 150 साल पूरे होने पर निकाली गई यात्रा के दौरान शिवराज सिंह ने गुजरात के भरूच, मनन आश्रम में पौधे रोपे।

पौधारोपण की शर्त जोड़ी : शिवराज सिंह ने मध्य प्रदेश में भवन निर्माण अनुमति के साथ पौधारोपण अनिवार्य कर दिया है। यदि गांव में मकान बना रहे हैं तो इस नियम का पंचायतों को भी ध्यान रखना होगा। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बनाए जाने वाले मकान में भी यह शर्त लागू है। सरकारी कार्यालय और भवनों के साथ भी पौधे लगाने की शर्त रहेगी। कोई बहुमंजिला इमारत बन रही है तो जितने फ्लैट हैं, उसके हिसाब से बिल्डर को एक-एक पौधा लगाना होगा।

अब तक ये पौधे रोपे

औषधीय- मौलश्री, सापर्णी, आकाश, नीम।

आक्सीजन देने वाले- गुलमोहर, बरगद, आम, अशोक, बादाम, पीपल, नीम, कदंब, चंदन, कचनार, फाइकस, रूद्राक्ष, बेलपत्र, विद्या, गूलर सहित अन्य पौधे।



भोपाल में रविवार को पौधारोपण करते मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान। सौ. जनसंपर्क विभाग

कह के रहेंगे

माधव जोशी



10 हजार वर्गफीट जमीन भोपाल में लघु उद्योग भारती संस्था को आवंटित किए जाने के खिलाफ प्रदर्शन में मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह समेत दो सौ कांग्रेसियों के खिलाफ बलवा करने और कोरोना गाइडलाइन का उल्लंघन करने का केस दर्ज किया गया है।

चिराग-रजक मुलाकात से नए समीकरण की कवायद

गहमागहमी ▸ राजद नेता ने चिराग को लालू प्रसाद यादव का दिया संदेश

महागठबंधन के विस्तार की पहल का कांग्रेस भी कर रही समर्थन


चिराग पासवान। फाइल


श्याम रजक। फाइल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लोजपा के दो फाड़ होने और पशुपति कुमार पारस के केंद्र सरकार में मंत्री बनने के बाद अब बिहार में नए सियासी समीकरण गढ़ने की कवायद शुरू हो गई है। इस कोशिश के तहत राजद के वरिष्ठ नेता श्याम रजक ने शनिवार रात लोजपा नेता चिराग पासवान से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान रजक ने राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद का संदेश देते हुए सूबे की राजनीति के प्रस्तावित नए समीकरण में चिराग को आने का प्रस्ताव दिया। चिराग को विपक्षी खेमे में लाने की राजद की इस पहल का कांग्रेस भी अंदरखाने पूरा समर्थन कर रही है।

बिहार में विपक्षी खेमे के नेताओं ने रविवार को अनौपचारिक बातचीत में कहा कि चिराग से रजक की मुलाकात सूबे में राजनीति के नई करवट का साफ संकेत है। चाचा पशुपति पारस के झटके से उबरने की कोशिश में जुटे चिराग ने भी इस बातचीत में राजद की अगुआई वाले महागठबंधन के साथ दोस्ती बढ़ाने का साफ संकेत दिया। श्याम रजक से मुलाकात और बातचीत के दौरान चिराग की मां के मौजूद रहने की भी चर्चा गरम है। इस मुलाकात को लेकर ज्यादा सरगर्मी इसलिए भी है कि रजक ने दिल्ली में लालू प्रसाद से मुलाकात के बाद चिराग के घर जाकर उनसे बातचीत की। चिराग भी बिहार में शुरू की गई अपनी आशीर्वाद यात्रा अचानक मुल्तवी कर शनिवार को दिल्ली पहुंचे थे।

बिहार में बन रहे नए समीकरणों को लेकर राजद नेतृत्व से लगातार संपर्क में रहे कांग्रेस के एक रणनीतिकार ने भी पुष्टि की कि चिराग को महागठबंधन से जोड़ने का प्रयास शुरू हो गया है। रजक की मुलाकात से पहले भी विभिन्न माध्यमों के जरिये संवाद शुरू हो गया था। देर सबेर चिराग को भाजपा-जदयू के खिलाफ उतरना ही पड़ेगा।

कांग्रेस नेता ने कहा कि नीतीश कुमार से चिराग की सियासी जंग जगजाहिर है। लोजपा में विभाजन करने वाले पशुपति पारस को भाजपा ने केंद्र में मंत्री बना दिया। ऐसे में चिराग के पास जदयू ही नहीं, भाजपा के खिलाफ मैदान में उतरने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। राजद-कांग्रेस-वामदलों के गठबंधन में उनके आने की बात बस कुछ दिन की रह गई है।

दिल्ली हाई कोर्ट की खंडपीठ में जल्द अपील करेंगे चिराग

राज्य ब्यूरो, पटना : दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा लोकसभा अध्यक्ष के आदेश को चुनौती देने संबंधी याचिका खारिज होने के बाद चिराग पासवान नए सिरे से खंडपीठ में अपील करेंगे। चिराग फिर उस आदेश को चुनौती देंगे, जिसके तहत लोकसभा में पशुपति कुमार पारस को लोजपा के संसदीय दल का नेता नियुक्त किया गया है। लोजपा (चिराग गुट) के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता एके बाजपेयी ने बताया कि चिराग की अध्यक्षता में लीगल सेल की बैठक में यह फैसला लिया गया। कानूनी प्रक्रिया की तैयारी पूरी करने के बाद हाई कोर्ट में जल्द अपील की जाएगी।

बिहार में शत्रुघ्न पर दांव लगाने की तैयारी में कांग्रेस

सुनील राज, पटना

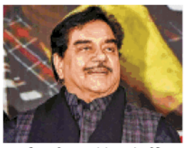
- अगले लोकसभा चुनाव को ध्यान में रख कायस्थ बिरादरी को तरजीह देने की कवायद
- प्रदेश संगठन में बड़े उलटफेर की चल रही तैयारी, सितंबर में पूरा हो रहा प्रदेश अध्यक्ष का कार्यकाल

2024 के लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए बिहार कांग्रेस में बड़ी उलटफेर की कवायद शुरू हो गई है। अनुसूचित जाति, पिछड़ा और मुस्लिम वोट पर केंद्रित बिहार की राजनीति में कांग्रेस एक नया अध्याय लिखने जा रही है। पार्टी के प्रदेश प्रभारी भक्त चरण दास की रिपोर्ट और विधायकों, विधान पार्षदों आदि के साथ सलाह-मशविरे के बाद आलाकमान बिहार कांग्रेस की कमान अभिनेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री शत्रुघ्न सिन्हा को सौंपने की तैयारी कर रहा है।

कई समीकरणों के बाद अब शत्रुघ्न आगे : बिहार में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डा. मदन मोहन झा का कार्यकाल सितंबर में समाप्त होगा। किसी मुस्लिम को उनका उत्तराधिकारी बनाए जाने के कयास के साथ तारिक अनवर का नाम लिया जा रहा था। सवर्ण को तरजीह मिलने की स्थिति में अखिलेश प्रसाद सिंह और अजीत शर्मा के नाम गिनाए जा रहे थे। अनुसूचित जाति के नेताओं में राजेश कुमार का जिक्र था। अब इन सबसे आगे शत्रुघ्न सिन्हा का नाम चल रहा है।

दिल्ली में हुई बैठक में आया बिहारी बाबू का नाम : दिल्ली बुलाए गए बिहार कांग्रेस के नेताओं के मन का हाल राहुल गांधी जान चुके हैं। उसके बाद बिहार प्रभारी से उनकी एकांत में एक दौर की बातचीत हुई है। सूत्रों की मानें तो उसी बैठक में प्रदेश अध्यक्ष के लिए शत्रुघ्न सिन्हा के नाम का सुझाव आया। सूत्र बता रहे हैं कि बिहार प्रभारी के प्रस्ताव से आलाकमान भी सहमत हैं।

भविष्य देख रही कांग्रेस : अभी शत्रुघ्न के सहारे कांग्रेस बिहार में अपना भविष्य देख रही है। आलाकमान भी इस बात से सहमत है कि राज्य की सत्ता से कांग्रेस के बाहर होने और क्षेत्रीय दलों के उभार के साथ कायस्थ हाशिये पर चले गए। अलबत्ता भाजपा ने कायस्थों को मान-सम्मान दिया। इससे पहले कांग्रेस ने कायस्थों को राजनीति में भरपूर मौके दिए। 1952 में कायस्थ जाति के 40 विधायक चुने गए थे। समय के साथ कायस्थों का प्रतिनिधित्व राजनीति में घटता गया। 2010 में बिरादरी के विधायकों की संख्या मात्र चार रह गई।


शत्रुघ्न सिन्हा की फाइल फोटो। इंटरनेट मीडिया

फुल टाइम राजनेता न होना एक समस्या : हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल के विस्तार में पटना साहिब के सांसद रविशंकर प्रसाद को जिस तरह बाहर का रास्ता दिखाया गया, उसके बाद कांग्रेस को लग रहा कि शत्रुघ्न के सहारे वह कायस्थों को अपने पक्ष में कर सकती है। हालांकि, कांग्रेस के लिए एक बड़ी समस्या शत्रुघ्न का फुल टाइम राजनेता नहीं होना है। शत्रुघ्न अपने मन के हिसाब से राजनीति करते हैं, जो परेशानी का सबब बन सकता है। अध्यक्ष बनने के बाद उन्हें बिहार में कम से कम 15 दिन बिताने होंगे। पार्टी नेताओं-कार्यकर्ताओं को समय देना होगा। इन सबके बीच सार्थक बात यह है कि कांग्रेस में शत्रुघ्न सिन्हा की आवाज तो सुनी ही जाएगी, साथ ही सहयोगी दल भी उन्हें नजरअंदाज नहीं कर सकेंगे।

लालू बना रहे तेजस्वी को राजद की बागडोर सौंपने का रोडमैप

अरविंद शर्मा, पटना

- विधायक दल के नेता के बाद अब राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बनाए जाएंगे तेजस्वी

राजद में पीढ़ी परिवर्तन का दूसरा दौर शुरू होने वाला है। राजद प्रमुख लालू प्रसाद ने पांच साल पहले तेजस्वी यादव को विधायक दल का नेता बनवाया था। अब वह बेटे को 25 साल पुरानी पार्टी की पूरी कमान सौंपने की तैयारी में हैं। इसका रोडमैप बन रहा है। पहले चरण में तेजस्वी को राजद का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया जा सकता है। उसके बाद पार्टी की संपूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है।

कोरोना का डर खत्म होते ही पटना आएंगे राजद प्रमुख : कोरोना की तीसरी लहर का डर जैसे ही खत्म होगा, वैसे ही लालू का पटना आने का कार्यक्रम है। राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के इस्तीफे को इसी मकसद से टाल दिया गया है। लालू चाहते हैं कि पूरी प्रक्रिया में तेजस्वी को जगदानंद का साथ मिले।

संगठनात्मक चुनाव 2022 में प्रस्तावित : राजद में अगला संगठनात्मक चुनाव नवंबर 2022 में प्रस्तावित है। लालू के पारिवारिक सूत्रों का दावा है कि तेजस्वी को इसके पहले ही वैकल्पिक तौर पर संगठन की बागडोर सौंपने की तैयारी है। इसकी प्रमुख वजह लालू की सेहत बताई जा रही है।

जमानत पर रिहा होने के बाद लालू प्रसाद अभी दिल्ली में मीसा भारती के सरकारी आवास पर हैं। उनका स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक नहीं है। तेजस्वी का अधिकतर समय दिल्ली में पिता की तीमारदारी में ही गुजर रहा है। इससे उन्हें संगठन के लिए समय निकालना मुश्किल हो रहा है। कोरोना का डर खत्म होते ही लालू प्रसाद को पटना लाने की कोशिश है, ताकि तेजस्वी पार्टी और पिता दोनों को पर्याप्त समय दे सकें। राजद के स्थापना दिवस के मौके पर खुद लालू ने भी इस बात की तस्दीक की है।

ढाई साल के फार्मूले पर बोले बघेल, आलाकमान जब कहेगा हट जाऊंगा

नईदुनिया, रायपुर

- कहा- ढाई-ढाई साल का फार्मूला गठबंधन सरकार में लागू होता है
- दिल्ली में प्रियंका गांधी, संगठन महामंत्री वेणुगोपाल और प्रदेश प्रभारी पुनिया से मिले बघेल

छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने ढाई-ढाई साल के मुख्यमंत्री के फार्मूले पर एक बार फिर कहा कि उन्हें आलाकमान ने जिम्मेदारी सौंपी है। आलाकमान जब हटने का निर्देश देगा, वह हट जाएंगे। उन्होंने कहा कि ढाई-ढाई साल का फार्मूला गठबंधन सरकार में लागू होता है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की तीन चौथाई सीटों के साथ बहुमत की सरकार है। दिल्ली से रविवार की शाम को रायपुर लौटे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से एयरपोर्ट पर पत्रकारों ने ढाई-ढाई साल के फार्मूले पर सवाल किया। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि आलाकमान से जो जिम्मेदारी दी जा रही है, उसका निर्वहन किया जा रहा है। दो और दो चार ही होगा, चाहे हजार बार पूछा जाए।

बता दें कि मुख्यमंत्री बघेल हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के अंतिम संस्कार कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। शनिवार को अचानक उनका कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी से मुलाकात का कार्यक्रम बन गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि एआइसीसी के निर्देश पर हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री के अंत्येष्टि कार्यक्रम में शामिल होने गया था। प्रदेश प्रभारी पीएल पुनिया से छत्तीसगढ़ की राजनीति, कार्यक्रम और निगम-मंडल के संदर्भ में चर्चा हुई है। आलाकमान के आदेश का इंतजार है, जब वहां से आदेश आ जाए, तब सूची जारी कर देंगे।

प्रधानमंत्री का कोई भी कार्यक्रम नहीं हुआ सफल : बघेल ने टीकाकरण के मुद्दे पर केंद्र सरकार को घेरा। कहा कि भाजपा को अपनी गलती दूसरों पर मढ़ने की आदत है। वैक्सीन और लाकडाउन लगाने का काम प्रधानमंत्री ने किया, सारी बैठकें पीएम ने लीं। टीका उत्सव का निर्देश भी पीएम का ही था और टीका बाहर भेजने का निर्णय भी उन्हीं का था। प्रधानमंत्री का कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हुआ, चाहे वो टीकाकरण हो, नोटबंदी हो या कोई अन्य। अब किसानों को रासायनिक खाद भी केंद्र सरकार नहीं पहुंचा पा रही है।


नई दिल्ली में रविवार को मीडिया से मुखातिब छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल। एएनआइ

जनसंख्या नियंत्रण, पलायन और भू-कानून पर जल्द होगा विचार : धामी

राज्य ब्यूरो, देहरादून : उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि जनसंख्या नियंत्रण, पलायन व भू-कानून को लेकर जल्द ही सरकार व पार्टी आपस में विचार-विमर्श करेगी। उत्तराखंड के हित के लिए जो भी कानून उचित होगा, उसे प्रदेश सरकार लेकर आएगी। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रा श्रद्धा व भक्ति से जुड़ा विषय है। भगवान भी यह नहीं चाहेंगे कि उसके किसी भक्त की जान जाए। आमजन की जानमाल की सुरक्षा प्राथमिकता है। सभी राज्यों से आपसी समन्वय स्थापित कर कांवड़ यात्रा के संबंध में निर्णय लिया जाएगा।

रविवार को नई दिल्ली में पत्रकारों के साथ बातचीत में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि कांवड़ यात्रा में उत्तराखंड मेजबान राज्य है। यहां उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली व मध्य प्रदेश से श्रद्धालु आते हैं। धामी ने कहा कि उनके शपथ ग्रहण करने से पहले ही उत्तराखंड सरकार कोरोना संक्रमण को देखते हुए कांवड़ यात्रा स्थगित करने का निर्णय ले चुकी थी। सरकार ने अब कांवड़ यात्रा को लेकर श्रद्धा और आस्था को देखते हुए संबंधित राज्यों से अधिकारी स्तर पर वार्ता करने का निर्णय लिया है। इसके बाद उच्च स्तर की वार्ता होगी। जरूरत पड़ेगी तो उससे भी उच्च स्तर की वार्ता की जाएगी।

बंगाल भाजपा में होगा संगठनात्मक फेरबदल

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

- दिलीप घोष की राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा संग बैठक आज
- कुशल कार्यकर्ताओं और नेताओं को पुरस्कृत करके संगठन को नया रूप देने की होगी कोशिश

विधानसभा चुनाव में अपेक्षित परिणाम न मिलने के बाद बंगाल में भाजपा द्वारा असंतुष्ट नेताओं और चुनाव से पहले पार्टी में शामिल होने वाले एक वर्ग पर कार्रवाई के साथ व्यापक संगठनात्मक फेरबदल करने की संभावना है। केंद्रीय नेतृत्व के बुलावे पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष दिल्ली गए हैं और सोमवार को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा व अन्य नेताओं के साथ इस संबंध में उनकी महत्वपूर्ण बैठक होने वाली है। पहले यह बैठक रविवार को होने वाली थी।

पार्टी सूत्रों ने बताया कि प्रदेश भाजपा अन्य दलों के नेताओं को शामिल करने के लिए एक निगरानी अवधि (स्क्रीनिंग विंडो) बनाने और तृणमूल कांग्रेस के उप-राष्ट्रवाद से मुकाबले के लिए अपनी अखिल भारतीय नीति के साथ बंगाल को लेकर विशिष्ट राजनीतिक लाइन अपनाने पर विचार कर रही है। भाजपा ने पार्टी के कुशल कार्यकर्ताओं और नेताओं को पुरस्कृत करके संगठन को नया रूप देने और स्थानीय और जिला स्तर के कई दलबदलुओं को हटाने का फैसला किया है। पार्टी ने दोतरफा दृष्टिकोण के साथ असंतोष पर लगाम लगाने का भी फैसला किया है। चुनाव में उम्मीद के मुताबिक परिणाम न मिलने, बढ़ती अंदरूनी कलह और नेताओं-कार्यकर्ताओं के पार्टी छोड़ने के मद्देनजर ये कदम उठाए जाएंगे।

बंगाल के वित्त मंत्री ने पद छोड़ने की जताई इच्छा : इस बीच, एक दशक से बंगाल के वित्त मंत्री का पदभार संभाल रहे अमित मित्रा ने अस्वस्थता के कारण पद छोड़ने की इच्छा जताई है। उन्होंने विधानसभा उपचुनाव लड़ने से भी मना कर दिया है। अस्वस्थता के कारण मित्रा ने पिछला चुनाव भी नहीं लड़ा था। ममता बनर्जी के अनुरोध पर उन्होंने नई सरकार के गठन के बाद छह महीने तक वित्त मंत्री का पदभार संभालना स्वीकार किया था।

पार्टी अनुशासन से ऊपर कोई नहीं : दिलीप घोष

प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष ने बताया कि संगठन में बदलाव के लिए चर्चा चल रही है। उन्होंने कहा, कुछ लोग ऐसे हैं जो भाजपा के सत्ता में आने पर कुछ पाने की उम्मीद में पार्टी में शामिल हुए थे, लेकिन अब अलग स्वर में बोल रहे हैं। हम सभी को पार्टी के नियमों और अनुशासन का पालन करना होगा।

बाबुल सुप्रियो के राजनीति से संन्यास लेने की अटकलें

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : भाजपा सांसद बाबुल सुप्रियो केंद्रीय मंत्रिमंडल से हटाए जाने के बाद जिस तरह राजनीति से दूरी बनाते जा रहे हैं, उससे उनके राजनीति से संन्यास लेने की अटकलें शुरू हो गई हैं। बाबुल पिछले सात वर्षों से सक्रिय राजनीति में हैं। मंत्रिमंडल से हटाए जाने के बाद उन्होंने पार्टी नेतृत्व के प्रति क्षोभ जाहिर किया था। बाबुल का राजनीति में पदार्पण जितना नाटकीय रहा, उसी तरह वह इसे अलविदा भी कह सकते हैं। बाबुल बंगाल की आसनसोल सीट से सांसद हैं। राजनीति छोड़ने के लिए उन्हें सांसद पद से इस्तीफा देना होगा। बाबुल के करीबियों का कहना है कि जिस दिन वह राजनीति छोड़ने का इरादा कर लेंगे, सांसद पद छोड़ने में उन्हें जरा भी वक्त नहीं लगेगा।

दिलीप घोष से मतभेद की चर्चा : सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बंगाल भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष के साथ बाबुल के संबंध इन दिनों अच्छे नहीं हैं। कई मुद्दों पर बाबुल के साथ उनकी बहस हो चुकी है। इसे लेकर पार्टी की अनुशासन कमेटी की ओर से उन्हें कारण बताओ नोटिस भेजा जा सकता है।

पंजाब कांग्रेस को इसी हफ्ते मिल सकता है नया अध्यक्ष

कैलाश नाथ, चंडीगढ़

कांग्रेस में जारी अंतर्कलह को खत्म करने के लिए 41 दिन से चल रही कोशिश इस हफ्ते कुछ रंग ला सकती है। कांग्रेस हाईकमान पार्टी में बड़ा फेरबदल करने की तैयारी में है। इसका ब्लू प्रिंट तैयार कर लिया है। इसके अनुसार पंजाब कांग्रेस को इस हफ्ते नया अध्यक्ष मिल सकता है। अब सिर्फ प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश रावत की औपचारिक घोषणा का इंतजार है। वह इन दिनों बीमार चल रहे हैं। उनके ठीक होते ही तस्वीर साफ हो पाएगी।

कांग्रेस में तीन स्तर पर बदलाव होने हैं। एक तो पंजाब कांग्रेस को नया अध्यक्ष दिया जाएगा। दूसरा, नवजोत सिंह सिद्धू को समायोजित किया जाएगा। इसके बाद पंजाब कैबिनेट में भी फेरबदल किया जाना है। सिद्धू के मामले में हाईकमान ने कैप्टन की बात मान ली है। सिद्धू को प्रदेश अध्यक्ष बनाने की कोई संभावना नजर नहीं आ रही।

सोनिया गांधी से हुई मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कर दिया था कि अगर पार्टी सिद्धू को अध्यक्ष बनाती है, तो पंजाब का हिंदू वर्ग कांग्रेस से छिटक सकता है। पार्टी हाईकमान भी कैप्टन की इस बात से सहमत है। यही कारण है कि सिद्धू को न तो सरकार में और न ही संगठन में एडजस्ट किया जाएगा। उन्हें आगामी चुनाव को देखते हुए स्क्रीनिंग कमेटी का सदस्य या चुनाव प्रचार कमेटी का चेयरमैन बनाया जा सकता है। प्रदेश अध्यक्ष सुनील जाखड़ की छुट्टी तय मानी जा रही है।

केजरीवाल का उत्तराखंड में भी 'बिजली दांव'

राज्य ब्यूरो, देहरादून

- भाजपा और कांग्रेस ने बताया केजरीवाल का चुनावी शोशा
- आप की सरकार बनने पर हर परिवार को 300 यूनिट मुफ्त बिजली का वादा

उत्तराखंड विधानसभा चुनाव से आठ महीने पहले दिल्ली की तर्ज पर उत्तराखंड में भी आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मुफ्त बिजली का पासा फेंका है। केजरीवाल ने उत्तराखंड में आप की सरकार बनने पर हर परिवार को 300 यूनिट मुफ्त बिजली का वादा किया है। उन्होंने कहा कि बिजली के पुराने बिल माफ किए जाएंगे, किसानों को मुफ्त बिजली दी जाएगी और 24 घंटे बिजली आपूर्ति होगी। उधर, उत्तराखंड में सत्तारूढ़ भाजपा व मुख्य विपक्ष कांग्रेस ने केजरीवाल के मुफ्त बिजली के वादे को चुनावी शोशा करार दिया।

देहरादून में पत्रकारों से बातचीत में अरविंद केजरीवाल ने कहा कि उत्तराखंड बिजली का उत्पादन करता है, बिजली बेचता है, फिर भी जनता को महंगी बिजली मिल रही है। हाल ही में सरकार के एक मंत्री ने 200 यूनिट मुफ्त बिजली देने की घोषणा की तो अगले ही दिन उनके मुख्यमंत्री ने ऐसी किसी संभावना से मना कर दिया। आप का वादा चुनावी नहीं है। वह सत्ता में आते ही इस पर अमल करेगी। इस पर 1200 करोड़ का व्यय भार पड़ेगा, जो 50 हजार करोड़ के सालाना बजट से आसानी से निकाला जा सकता है। इसकी प्रतिपूर्ति भ्रष्टाचार पर लगाम लगाकर की जाएगी। भाजपा व कांग्रेस को निशाने पर लेते हुए उन्होंने कहा कि दोनों पार्टियां दो पाट की तरह हैं, जिसमें उत्तराखंड की जनता पिस रही है। बार-बार मुख्यमंत्री बदले जा रहे हैं, तो विपक्ष कांग्रेस नेता चुनने के लिए दिल्ली के चक्कर काट रहा है। ऐसे में उत्तराखंड की जनता और विकास के बारे में कौन सोचेगा।

इससे पहले प्रदेशभर से आए पदाधिकारियों ने अरविंद केजरीवाल से राज्य से जुड़े मुद्दों को लेकर बातचीत की। पदाधिकारियों में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जोनल प्रभारी व प्रकोष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान आप प्रभारी दिनेश मोहनिया, प्रदेश अध्यक्ष एसएस कलेर, कर्नल (सेनि) अजय कोठियाल भी उपस्थित थे।

दूसरी तरफ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक ने कहा कि केजरीवाल के लुभावने वादे और चुनावी आडंबर से उत्तराखंड में कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष प्रीतम सिंह ने कहा कि उत्तराखंड में आप का कोई वजूद नहीं है।

दिल्ली माडल बस्ते में बंद रखें केजरीवाल : हरीश रावत

राज्य ब्यूरो, देहरादून

- कोरोना की दूसरी लहर में दिल्ली की बदहाली का किया जिक्र

कांग्रेस ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के उत्तराखंड दौरे और चुनाव जीतने पर मुफ्त बिजली देने की घोषणा पर तंज कसा है। पूर्व मुख्यमंत्री व पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव हरीश रावत ने कोरोना की दूसरी लहर में दिल्ली की बदहाली का जिक्र करते हुए कहा कि केजरीवाल मेहरबानी कर अपने दिल्ली माडल को बस्ते में बंद रखें। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड का बजट दिल्ली के वार्षिक बजट के बराबर हो तो कांग्रेस 400 यूनिट तक बिजली माफ कर देगी। वहीं, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रीतम सिंह ने कहा कि आप का प्रदेश में अस्तित्व नहीं है। इसलिए जनता को लुभाने के लिए बिजली मुफ्त देने की घोषणा करनी पड़ रही है।

केजरीवाल के उत्तराखंड में मुफ्त बिजली देने की घोषणा पर पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने इंटरनेट मीडिया में पोस्ट कर कहा कि दिल्ली में पूरा बिल वसूल किया जाता है। दिल्ली में वाणिज्यिक पर 7.45 रुपये प्रति यूनिट बिजली बिल वसूल किया जाता है, जबकि उत्तराखंड में 5.80 रुपये पैसे देने पड़ते हैं। दिल्ली की आमदनी और उत्तराखंड की आमदनी का कोई मुकाबला नहीं है। राज्य के संसाधनों को देखकर उनका वादा है कि सत्ता में आने के वर्ष 100 यूनिट और दूसरे वर्ष में 200 यूनिट तक बिजली मुफ्त देंगे।

कांग्रेस के हाथ से फिसल रही रायबरेली!

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- पंचायत चुनाव में प्रदर्शन ने खोली मिशन-2022 की तैयारियों की कलई
- सोनिया के क्षेत्र में ब्लाक प्रमुख चुनाव लड़ने तक की नहीं रही स्थिति

उत्तर प्रदेश की सत्ता में वापसी के सपने संजो रही कांग्रेस को त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव ने करारा झटका दिया है। संगठन सृजन अभियान से संगठन मजबूती का दावा करने वाली इस राष्ट्रीय पार्टी की स्थिति यह रही कि कांग्रेसी गढ़ कहे जाने वाले राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के संसदीय क्षेत्र रायबरेली में भी जिला पंचायत अध्यक्ष न बनवा सकी। हार ने ऐसा झटका दिया कि ब्लाक प्रमुख चुनाव लड़ने की हिम्मत ही न जुटा सकी। जिस अमेठी के सांसद राहुल गांधी लगातार पंद्रह वर्ष रहे, वहां सिर्फ दो ब्लाक प्रमुख पद कांग्रेस के खाते में आए। इन हालात से तो अमेठी के बाद रायबरेली भी कांग्रेस के हाथ से फिसलती नजर आ रही है।

कांग्रेस लगातार दावा कर रही है कि 2022 में प्रदेश में पार्टी सरकार बनाने जा रही है। प्रदेश प्रभारी प्रियंका गांधी वाड्रा भी आश्वस्त हैं, क्योंकि संगठन को उन्होंने अपने हिसाब से तैयार किया है। खुद ही समीक्षा कर रही हैं। इसी भरोसे पार्टी ने हुंकार भरी थी कि पंचायत चुनाव पूरी ताकत से लड़ेंगे और जीतेंगे, लेकिन मैदान सजा तो कांग्रेस बाहर खड़ी नजर आई। पूरे प्रदेश में जो हाल रहा, वह तो ठीक, लेकिन रायबरेली और अमेठी का जिक्र यहां अहम है। चूंकि, यह दोनों गांधी-नेहरू परिवार के पारंपरिक संसदीय क्षेत्र हैं और इन्हें पार्टी का मजबूत किला माना जाता रहा है। हालांकि, अब यहां भी सेंध लग चुकी है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की स्मृति ईरानी ने राहुल गांधी को यहां से हरा दिया। कांग्रेस यूपी में मात्र रायबरेली की सीट जीत सकी, जहां से राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी सांसद हैं। अब इस अंतिम किले की ईंटें भी दरकती महसूस हो रही हैं। यह इशारा पंचायत चुनाव के परिणाम कर रहे हैं। रायबरेली में कांग्रेस ने जिला पंचायत अध्यक्ष प्रत्याशी मैदान में तो उतारा, लेकिन जीत न सकी। यह हार पार्टी को आत्मसमर्पण जैसी स्थिति में ले आई और कांग्रेस ब्लाक प्रमुख चुनाव लड़ने की हिम्मत तक न जुटा पाई। वहीं, अमेठी में जिला पंचायत अध्यक्ष लड़ाने लायक जिला पंचायत सदस्य ही जीत सके। ब्लाक प्रमुख चुनाव की बात करें तो अमेठी संसदीय क्षेत्र में 17 ब्लाक आते हैं। इनमें से मात्र दो सीट बहादुरपुर और शाहगढ़ पर चुनाव लड़ने की हिम्मत पार्टी जुटा सकी। जीती दोनों, लेकिन जिलाध्यक्ष की करीबी कही जा रहीं बहादुरपुर की ब्लाक प्रमुख रविवार को भाजपा में शामिल हो गईं।

मिशन यूपी की अगुआई कर रहे प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू के ब्लाक सेवरही में कांग्रेस को ब्लाक प्रमुख प्रत्याशी तक नहीं मिले।

अलग-अलग हैं जम्मू और कश्मीर के मुद्दे : फारूक

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- नेकां अध्यक्ष ने मां बेगम अकबर जहां की पुण्यतिथि पर सार्वजनिक रूप से स्वीकारा

नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री डा. फारूक अब्दुल्ला जिस सच्चाई को झुठलाते हुए आए हैं, उसे उन्होंने रविवार को मां बेगम अकबर जहां की 21वीं पुण्यतिथि पर सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया। वह सच्चाई जम्मू और कश्मीर संभाग के एक दूसरे से भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आधार पर सर्वथा भिन्न होने की है। नेकां हमेशा यही कहती आई है कि दोनों संभाग एक समान हैं। अलबत्ता, डा. फारूक ने कहा कि जम्मू और कश्मीर दोनों ही एक दूसरे से अलग हैं और उनके मुद्दे भी अलग हैं।

गौरतलब है कि बीते दिनों प्रदेश के दौरे पर आए परिसीमन आयोग के समक्ष जम्मू में नेशनल कांफ्रेंस की स्थानीय इकाई ने जम्मू संभाग के साथ राजनीतिक भेदभाव का मुद्दा उठाते हुए परिसीमन की प्रक्रिया में इसे दूर करने का आग्रह किया था। नेकां ने जम्मू में स्थानीय परिवेश के मुताबिक निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया है। नेकां ने जम्मू में परिसीमन के मुद्दे पर कमोबेश भाजपा की लाइन ही पकड़ी है। इससे कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस के विरोधी मुखर हो गए हैं और वह कह रहे हैं कि नेकां की बोली हर जगह अलग है। कश्मीर में वह एक बात करती है, जम्मू में दूसरी और दिल्ली में तीसरी।

रविवार को हजरतबल के पास नसीमबाग मे अपनी मां के मकबरे पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद डा. फारूक ने पत्रकारों से कहा कि यह कोई बड़ा मसला नहीं है। जम्मू और कश्मीर में अगर नेकां के नेताओं ने अलग अलग मुद्दे उठाएं तो उनसे लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है। जम्मू का एक अलग मुद्दा है और कश्मीर के अपने मुद्दे हैं। दोनों की अपनी समस्याएं हैं। इसलिए लोगों को इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है।

अफगानिस्तान के हालात पर उन्होंने कहा कि मेरा उससे कोई वास्ता नहीं है। वहां के राजनीतिक घटनाक्रम पर मैं कुछ नहीं कह सकता।

महबूबा ने विकास योजनाओं को लेकर उठाए सवाल

राज्य ब्यूरो, जम्मू : जम्मू-कश्मीर में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की खिसकती जमीन को बचाने की कवायद के बीच पार्टी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती अब केंद्र और राज्य सरकार पर आरोप लगाने पर उतर आई हैं। रविवार को जम्मू में उन्होंने विकास योजनाओं और परियोजनाओं के मामले में सरकार को सवालों के घेरे में खड़ा करने की कोशिश की। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर के संसाधनों को खुली बिक्री पर लगा दिया है। इसके चलते जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था ढहने के कगार पर है। बिजली परियोजनाओं से लेकर रेत खनन सेक्टर हर चीज को सोची समझी साजिश के तहत नीलामी की जा रही है ताकि जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाया जाए। महबूबा ने चिनाब घाटी से आए पार्टी के प्रतिनिधिमंडल से बातचीत करते हुए कहा कि बिजली की जिन परियोजनाओं को जम्मू-कश्मीर चला सकता था, उन परियोजनाओं को एनएचपीसी के हवाले कर दिया गया है। रतले पनबिजली परियोजना का उदाहरण है, जिसे संयुक्त उपक्रम को सौंप दिया गया और पावर डेवलपमेंट कारपोरेशन का हिस्सा कम कर दिया गया।

21 जुलाई को दिल्ली समेत देशभर में मनाया जाएगा ईद-उल-अजहा। भारत-ए-शरिया हिंद की ओर से इस संबंध में बयान जारी किया गया है।

न्यूज गैलरी

महंत रामेश्वर पुरी को ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम में दी गई भू समाधि

वाराणसी : अन्नपूर्णा मठ-मंदिर के महंत रामेश्वर पुरी को रविवार सुबह शिवपुर स्थित अन्नपूर्णा ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम में भू समाधि दी गई। सुबह पांच बजे उनके पार्थिव शरीर का पंचोपचार विधि से अभिषेक किया गया। भष्म स्नान करा कर आरती उतारी गई। गेरुआ वस्त्र धारण कराकर पगड़ी बांधी गई। संत पालकी में पद्मासन मुद्रा में बैठाया गया। शंखनाद और घंटा-घड़ियाल की टंकार के बीच मां अन्नपूर्णा दरबार की परिक्रमा कराई गई। करीब 6:30 बजे अंतिम यात्रा निकली जो 7:30 बजे शिवपुर स्थित अन्नपूर्णा ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम पहुंची। उपमहंत शंकर पुरी ने भू समाधि की रस्म पूरी की। लंबे समय से अस्वस्थ महंत रामेश्वर पुरी का शनिवार दोपहर महमूरगंज स्थित एक निजी अस्पताल में निधन हो गया था। ब्रह्मलीन होने के बाद पार्थिव शरीर मंदिर परिसर में दर्शनार्थ रखा गया था। उप्र के सीएम योगी आदित्यनाथ के प्रतिनिधि के तौर पर धर्मार्थ कार्य मंत्री डा. नीलकंठ तिवारी ने भू समाधि के समय महंत को पुष्पांजलि अर्पित की। (जासं)

हुड़दंगियों पर कार्रवाई के बजाए पुलिस ने दिलाया संकल्प

हरिद्वार : हरकी पैड़ी पर हुड़दंग करने वालों को सुधारने के लिए पुलिस ने कार्रवाई के बजाय गांधीवादी तरीका अपनाया है। रविवार को हुड़दंग करते पकड़े गए नौ आरोपितों को पुलिस ने मां गंगा के समक्ष यह संकल्प दिलाया कि दोबारा कभी ऐसी गलती करके तीर्थ की गरिमा को ठेस नहीं पहुंचाएंगे। नैतिकता का पाठ पढ़ाने के बाद उन्हें हिदायत देकर छोड़ दिया गया। खास बात यह है कि हुड़दंग करने वालों में श्री गंगा सभा के दो कर्मचारी भी शामिल हैं। पिछले कुछ दिनों से हरकी पैड़ी पर हुड़दंग के मामले इंटरनेट मीडिया पर सुर्खियों में छाए हुए हैं। पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। हुक्का पीकर हुड़दंग करने वालों को तीर्थ पुरोहितों के गुस्से का शिकार भी होना पड़ा है। पुलिस ने अब अपराधी नहीं, अपराध समाप्त करने की थीम पर नया प्रयोग किया है। (जासं)

कोलकाता के पांच सितारा होटल में पार्टी, 37 गिरफ्तार

कोलकाता : कोलकाता के पांच सितारा होटल में कोविड संबंधी पाबंदियों का उल्लंघन करते हुए पार्टी करने पर शनिवार देर रात 37 लोगों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बताया कि कोलकाता के पार्क स्ट्रीट स्थित पार्क होटल में छापा मारकर दो महंगी कार और 38 मोबाइल फोन समेत अन्य सामान भी जब्त किया गया हैं। छापे के दौरान गिरफ्तार लोगों में से कुछ ने पुलिस अधिकारियों से दुर्व्यवहार व धक्का-मुक्की की। पुलिस ने तीन हुक्के, शराब की चार बोतलें और एक गांजे की पुड़िया भी जब्त की है। (राब्यू)

आइएस के नए माड्यूल का पर्दाफाश, कश्मीर में सात जगहों पर छापे

शिकंजा ▶ एक महिला सहित नौ लोगों से पूछताछ, छह को हिरासत में लिया

बड़ी संख्या में आपत्तिजनक दस्तावेज, लैपटाप, मोबाइल फोन, टेबलेट भी बरामद

▶ आइएस द्वारा किए जा रहे आनलाइन दुष्प्रचार के मामले में की गई कार्रवाई

▶ हिरासत में लिए लोगों में श्रीनगर के हवल इलाके में दारुल उलूम का चेयरमैन भी

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) ने आनलाइन दुष्प्रचार के मामले में इस्लामिक स्टेट (आइएस) के नए माड्यूल का पर्दाफाश करते हुए रविवार को दक्षिण से लेकर उत्तरी कश्मीर तक सात जगहों पर ताबड़तोड़ छापेमारी की। इस दौरान एक महिला समेत नौ लोगों से पूछताछ की गई। जबकि छह लोगों को हिरासत में लिया है। इनमें श्रीनगर के हवल इलाके में एक दारुल उलूम का चेयरमैन अदनान अहमद नदवी और अनंतनाग का एक एमबीए डिग्रीधारक भी है।

छापों के दौरान बड़ी संख्या में आपत्तिजनक दस्तावेज, लैपटाप, मोबाइल फोन, टेबलेट, हार्ड डिस्क, आइएस के चिह्न वाली टीशर्ट भी बरामद की हैं। फिलहाल एनआइए ने अधिकारिक तौर पर किसी को गिरफ्तार करने या पूछताछ के लिए हिरासत में लेने की पुष्टि नहीं की है।

यह कार्रवाई आइएस द्वारा किए जा रहे आनलाइन दुष्प्रचार, भारतीय मुस्लिम युवाओं में जिहादी मानसिकता पैदा कर उन्हें भर्ती करने और भारत के खिलाफ जिहाद के लिए तैयार करने से संबंधित मामले में की है। एनआइए ने 29 जून को मामला दर्ज किया था। एनआइए अधिकारियों ने पुलिस और सीआरपीएफ की मदद से रविवार तड़के अनंतनाग, श्रीनगर, बारामुला में संदिग्ध तत्वों के ठिकानो पर छापा मारा। बारामुला में किसी को गिरफ्तार नहीं किया। कथित तौर पर उन चार-पांच युवकों को पूछताछ के लिए बुलाया गया, जो कुछ समय पहले पासपोर्ट के आधार पर मुल्क से बाहर गए थे।

किस-किस को किया गिरफ्तार : श्रीनगर में एनआइए ने हवल में स्थित कश्मीर के नामी दारुल उलूम की तलाशी ली। इसके चेयरमैन अदनान अहमद नदवी को पूछताछ के लिए एनआइए की टीम अपने साथ ले गई।

बताया जा रहा है कि उन्हें गिरफ्तार किया है। उनका दारुल उलूम, उत्तर प्रदेश की एक नामी इस्लामिक संस्था से जुड़ा है। अनंतनाग के सुनसुमा से जावेद अहमद मीर को पकड़ा है। पेशे से दुकानदार जावेद एमबीए डिग्री धारक है। मागरे मोहल्ला अच्छाबल से उमर बट को पकड़ा है। उसकी अच्छाबल मे रेडीमेड कपड़ों की दुकान है।

उमर बट का एक पड़ोसी उवैस अहमद बट को भी एनआइए टीम अपेन साथ ले गई है। वह ग्रेजुएट है और लैब टैक्निशियन के रूप में काम करता है। अच्छाबल के गोरी मोहल्ला से मैट्रिक पास दुकानदार तनवीर अहमद बट और पुशरु नौगाम से जीशान अमीन मलिक को पकड़ा है। जीशान भी एक ग्रेजुएट है और पेशे से एक दवा विक्रेता है। इसके अलावा एक महिला से भी पूछताछ की सूचना है। वह मारे गए एक पूर्व आतंकी की रिश्तेदार बताई जा रही है। इसके अलावा यह भी पता चला है कि हिरासत में लिए सभी लोग अफगानिस्तान और इराक में कुछ लोगों के संपर्क में थे। एक अन्य युवक भी कश्मीर से पकड़ा गया है।

दुष्प्रचार के लिए शुरू की मैगजीन

एनआइए प्रवक्ता ने बताया कि आइएस ने दुष्प्रचार के लिए भारत पर केंद्रित एक आनलाइन मैगजीन द वायस आफ हिंद शुरू की है। इससे वह भारत में मुस्लिम युवाओं में जिहादी मानसिकता पैदा कर उन्हें देश में हिंसा फैलाने के लिए उकसा रहा है। वह अपने नेटवर्क को फैलाने के लिए वित्तीय मदद भी संबंधित लोगों तक पहुंचा रहा है। प्रवक्ता ने बताया कि देश विदेश में सक्रिय आइएस का कैडर फर्जी नाम से आनलाइन दुष्प्रचार अभियान चला रहा है।

जम्मू-एयरफोर्स स्टेशन पर ड्रोन हमले में पाकिस्तानी सेना का हाथ

राज्य ब्यूरो, जम्मू

जम्मू एयरफोर्स स्टेशन पर ड्रोन हमले में पाकिस्तान की सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ का पूरा हाथ था। यह हमला लश्कर-ए-तैयबा के आतंकियों ने किया था। इसमें आतंकियों को पाकिस्तानी सेना ने तकनीकी सहयोग दिया था।

उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार, ड्रोन द्वारा जम्मू एयरफोर्स स्टेशन पर गिराए गए दोनों बमों में ऐसे प्रेशर फ्यूज लगे थे, जो पाकिस्तानी सेना द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं। यह साबित करता है कि 27 जून की तड़के हुए इस हमले में पाकिस्तानी सेना का हाथ था। हमले में ढाई किलोग्राम आरडीएक्स का इस्तेमाल हुआ था। एक बम एयरफोर्स स्टेशन में भारतीय वायुसेना के एक भवन की छत को तोड़ता हुआ अंदर गिरा था। इसमें एक किलो से आरडीएक्स के कुछ अन्य रसायन का इस्तेमाल हुआ था। दूसरे बम में डेढ़ किलो से ज्यादा आरडीएक्स के साथ अधिक नुकसान करने के लिए बाल बियरिंग डाले गए थे। यह बम एयरफोर्स स्टेशन के मैदान में गिरा था। ड्रोन हमले के बाद जम्मू कश्मीर पुलिस के महानिदेशक दिलबाग सिंह ने स्पष्ट किया था कि इस हमले में आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा शामिल है। उन्होंने यह भी कहा था कि हो सकता है कि जम्मू में हमले करने के लिए ये ड्रोन सीमा पार से आए हों।

प्रेशर फ्यूज का इस्तेमाल आतंकी नहीं करते : सूत्रों के अनुसार, इस तरह के प्रेशर फ्यूज का इस्तेमाल आतंकी संगठन नहीं करते हैं। इसका इस्तेमाल पाकिस्तान सेना द्वारा दागे जाने वाले मोर्टार शेल, बारूदी सुरंगों, एंटी टैंक माइन और वायुसेना द्वारा गिराए जाने वाले बमों में होता है। आसमान से गिरने पर प्रेशर फ्यूज वाला हिस्सा जमीन, भवन की छत, किसी वाहन या व्यक्ति से टकराने के बाद दब जाता है। इससे विस्फोट हो जाता है। प्रेशर फ्यूज के कारण ही दागा बम हवा में नहीं, बल्कि टकराने के बाद फटता है।

पाक ने चीन और तुर्की से खरीदे हैं आधुनिक ड्रोन

जम्मू एयरफोर्स स्टेशन पर ड्रोन हमले की जांच राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) कर रही है। हमले में इस्तेमाल किए गए ड्रोन तीन घंटे तक हवा में रहे सकते थे। उन्हें जीपीएस के जरिये दूर से संचालित करना संभव था। जिस स्थान पर हमला किया गया, उसकी अंतरराष्ट्रीय सीमा से दूरी सिर्फ 14 किलोमीटर है। बता दें कि पाकिस्तान ने हाल ही में चीन व तुर्की से आधुनिक ड्रोन खरीदे हैं।

पुलिस से साइबर अपराधियों का बच पाना होगा मुश्किल

▶ एनएफएसयू ने पुलिसकर्मियों के लिए विकसित किया विशेष फोरेंसिक प्रशिक्षण माड्यूल

गांधीनगर, आइएएनएस

तकनीक में विकास के साथ अपराध के तरीके भी बदल रहे हैं। साइबर अपराध, वित्तीय साइबर धोखाधड़ी जैसे मामले लगातार बढ़ रहे हैं। दुनिया के किसी एक कोने में बैठा अपराधी किसी दूसरे कोने में वारदात को अंजाम दे देता है। ऐसी वारदातों को रोकने और अपराधियों की नकेल कसने के लिए पुलिसकर्मियों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी (एनएफएसयू) ने इसके लिए एक विशेष फोरेंसिक प्रशिक्षण माड्यूल विकसित किया है।

एनएफएसयू के गांधीनगर और दिल्ली कैंपस के निदेशक एसओ जुनारे ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्रालय की सिफारिश पर यह माड्यूल तैयार किया गया है। हालांकि एनएफएसयू के लिए यह कोई नया माड्यूल नहीं है। एनएफएसयू राष्ट्रीय दर्जा हासिल करने से पहले गुजरात पुलिस के लिए इस तरह का माड्यूल तैयार कर चुका है और 13 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों को इसका प्रशिक्षण भी दिया है। इसमें साइबर अपराध, डीएनए निष्कर्षण, डीएनए प्रोफाइलिंग, वित्तीय साइबर धोखाधड़ी, इनके तरीके, फोरेंसिक जांच और कई अन्य पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई है।

जुनारे ने कहा कि पुलिसकर्मी अपराध की जांच में प्रशिक्षित होते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि उन्हें अपराध के सुराग का पता लगाने, जांच करने, साक्ष्य संग्रह, साक्ष्य हस्तांतरण, डाटा हस्तांतरण इत्यादि के फोरेंसिक तरीके के बारे में जानकारी हो। अपराधी वारदात को अंजाम देने के लिए नए-नए तरीके अपनाते हैं, इसलिए जरूरी है कि पुलिसकर्मियों को भी ऐसे अपराध की जांच का तौर तरीका पता हो। इसी को ध्यान में रखते हुए यह माड्यूल अंग्रेजी और हिंदी भाषा में तैयार किया गया है और आठ अन्य भाषाओं में भी इसे तैयार किया जा रहा है। एनएफएसयू में सेंटर आफ एक्सिलेंस के उद्घाटन कार्यक्रम के बारे में जानकारी देने के लिए बुलाए गए संवाददाता सम्मेलन के दौरान जुनारे ने यह जानकारी दी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सोमवार को इस केंद्र का उद्घाटन करेंगे।

सीएम से अपनी पुस्तक का विमोचन कराने वाला ठगी में गिरफ्तार

जासं, ऋषिकेश : शहर के एक नामी ज्वेलर की पत्नी के इलाज के बहाने लाखों रुपये के जेवरात ठगने वाले फर्जी बाबा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। साधु भेषधारी आरोपित के पास से करीब नौ लाख के जेवर बरामद हुए हैं। पुलिस के अनुसार, उसकी पहचान योगी प्रियव्रत अनिमेश उर्फ महेंद्र रोड उर्फ रोबिन खलीफा निवासी पानीपत (हरियाणा) के रूप में हुई। वह यहां देहरादून में लालतप्पड़ स्थित नेचर विला में किराये का फ्लैट लेकर रहा था।

पुलिस पूछताछ में आरोपित ने विभिन्न राज्यों के कई नेताओं और नौकरशाहों से जान पहचान होने का दावा किया। तीन रोज पहले उसने यहां उत्तराखंड में सीएम पुष्कर सिंह धामी और विधानसभा अध्यक्ष प्रेम चंद अग्रवाल से अलग-अलग कार्यक्रमों में अपनी पुस्तक का विमोचन भी करवाया था। ऋषिकेश के पुलिस उपाधीक्षक डीसी ढौंडियाल के अनुसार, ज्वेलर हितेंद्र सिंह पंवार ने कोतवाली पुलिस को शिकायती पत्र दिया था। इसमें कहा गया कि उनकी पत्नी को मानसिक समस्या है। दिसंबर 2019 में उनकी पत्नी लालतप्पड़ स्थित नेचर विला में रहने वाले साधु भेषधारी व्यक्ति के संपर्क में आई।

आतंकी के घर के करीब है केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर का आवास

300 मीटर दूरी पर रहते हैं मोहनलालगंज के सांसद कौशल किशोर

▶ स्थानीय अभिसूचना इकाई को नहीं लगी आतंकियों की भनक

जागरण संवाददाता, लखनऊ

आतंकी मिनहाज का मकान मोहनलालगंज के सांसद और केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर के आवास के पास है। करीब 300 मीटर की दूरी पर वह रहते हैं। सूत्रों का कहना है कि आतंकियों के निशाने पर कई बड़े नेता थे। हालांकि इनकी लिस्ट में कौन-कौन था, इस बारे में पुलिस अधिकारी कुछ भी बोलने से कतरा रहे हैं।

आतंकी लखनऊ में कुछ भाजपा नेताओं पर हमला करना चाहते थे। ऐसे में केंद्रीय राज्य मंत्री की सुरक्षा को लेकर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। एटीएस यह पता लगा रही है कि आतंकी कहां और कब विस्फोट करने की योजना बना रहे थे। बताया जा रहा है कि 15 अगस्त से पहले लखनऊ को दहलाने की साजिश रची गई थी। इसके पीछे पाकिस्तान के नापाक मंसूबे भी बताए जा रहे हैं। मिनहाज और मुशीर पाकिस्तान के आतंकी संगठनों के संपर्क में थे। दोनों के पकड़े जाने के बाद लखनऊ में सार्वजनिक स्थानों पर चेकिंग बढ़ा दी गई है। संदिग्ध लोगों के बारे में पता लगाया जा रहा है। उधर, लखनऊ पुलिस और स्थानीय अभिसूचना इकाई की कार्यशैली पर भी सवाल खड़े हो गए हैं। लखनऊ में लंबे समय से दोनों आतंकी देश विरोधी गतिविधियों में संलिप्त थे और स्थानीय पुलिस को इसकी भनक भी नहीं लगी।

उत्तर प्रदेश में रेल धमाकों को लेकर अलर्ट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : खुफिया एजेंसियों ने आइएसआइ (पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी) के देश में रेल धमाका कराने की गहरी साजिश रचे जाने की सूचना दी है। इसके बाद उप्र में भी ट्रेनों की सुरक्षा को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। पुलिस, प्रशासन व रेलवे सुरक्षा बल को सामंजस्य से चेकिंग बढ़ाने व सक्रियता बरते जाने के निर्देश दिए गए हैं। सूत्रों का कहना है कि पाक खुफिया एजेंसियों ने आइएसआइ एजेंट के जरिये पंजाब में अपने संपर्क के युवक के माध्यम से ट्रेन में बम धमाके की साजिश रची है। उन ट्रेन को निशाना बनाने के लिए कहा गया है, जिनमें यूपी, बिहार और अन्य राज्यों मजदूरों को आना-जाना हो।

अंसार गजवातुल हिंद के जरिये युवाओं की भर्ती कर रहा अलकायदा

जासं, कानपुर : अंसार गजवातुल हिंद युवाओं को भ्रमित करके जिहाद के नाम पर आतंकी संगठन अलकायदा से जोड़ रहा है। इन युवाओं को बम बनाने व हथियार चलाने की आनलाइन ट्रेनिंग दी जा रही है। लखनऊ में दो आतंकियों की गिरफ्तारी के बाद ऐसी जानकारी मिली है। यह संगठन 2019 से सक्रिय है।

सूत्रों ने बताया कि अंसार गजवातुल हिंद ने इस्लामिक स्टेट (आइएस) के खुरासान माड्यूल के खत्म होने के बाद उसमें जुड़े युवकों को भी बरगला कर अपने गिरोह में शामिल किया था। ये संगठन धीरे-धीरे तमाम इलाकों में अपनी जड़ें जमा रहा है। गिरोह को खुरासान माड्यूल की तर्ज पर फंड व ट्रेनिंग उपलब्ध कराने की भी जानकारी मिली है। बता दें कि 2017 में लखनऊ के ठाकुरगंज इलाके में मुठभेड़ में मारा गया जाजमऊ चकेरी का निवासी सैफुल्लाह भी खुरासान माड्यूल का ही सक्रिय सदस्य था। उसके मारे जाने के बाद एटीएस व अन्य खुफिया टीमों ने सर्च अभियान चलाकर जाजमऊ व अन्य स्थानों से सैफुल्लाह के चार और साथियों को भी गिरफ्तार कर जेल भेजा था। कुछ समय बाद ही खुरासान माड्यूल की गतिविधियां बंद हो गई थीं।

कश्मीर से मिनहाज के घर आते थे संदिग्ध लोग

▶ स्थानीय लोगों ने कहा, शुरू से संदिग्ध गतिविधियों में लिप्त था

जागरण संवाददाता, लखनऊ

गिरफ्तार आतंकी मिनहाज की गतिविधियां शुरू से ही संदिग्ध थीं। मिनहाज के घर पर अक्सर कश्मीर से संदिग्ध युवक आते थे। यही नहीं, कपड़े और ड्राई फ्रूट बेचने वाले कश्मीरी युवक भी मिनहाज के घर पर रुकते थे। स्थानीय लोगों का कहना है कि मिनहाज की हरकतें संदिग्ध प्रतीत होती थीं। हालांकि किसी ने इसकी शिकायत पुलिस से नहीं की थी।

एटीएस ने दुबग्गा चौराहे के पास बरावन कला स्थित मिनहाज के मकान से सटे दो अन्य घरों में भी सर्च आपरेशन चलाया। मिनहाज के पिता सिराज अहमद अपने भाई रियाज के साथ वहां रहते हैं। सिराज और रियाज सरकारी कर्मचारी थे, जो अब सेवानिवृत हो चुके हैं। एटीएस ने मिनहाज के घरवालों से कश्मीर कनेक्शन और उसकी गतिविधियों के बारे में कई घंटे पूछताछ की। घर में मौजूद महिलाओं से भी टीम ने मिनहाज और मसीरुद्दीन उर्फ मुशीर से मिलने वालों के बारे में जानकारी ली। एटीएस यह पता लगा रही है कि दोनों आतंकी कब-कब कश्मीर गए थे। दोनों ने लखनऊ को दहलाने के लिए किन जगहों पर प्रशिक्षण लिया था। इसके बारे में खुफिया एजेंसियां सुराग लगा रही हैं। माना जा रहा है कि फेरी वाले बनकर मिनहाज के घर पर आने वाले कश्मीरी युवकों का भी आतंकी संगठनों से संबंध है। पड़ोस में रहने वाले एक युवक ने बताया कि मिनहाज आसपास के लोगों से बहुत कम मिलता था। वह सऊदी अरब भी गया था। पांच साल पहले वह सऊदी से लौटकर आया था, जिसके बाद से उसके व्यवहार में काफी अंतर आ गया था। स्थानीय निवासियों का कहना था कि बातचीत से उन्हें कभी नहीं लगा कि मिनहाज देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त है। वह कम बोलता था और अपने काम से मतलब रखता था। स्थानीय लोगों ने बताया कि मिनहाज बरावन कला में करीब 15 साल से रह रहा था। पहले वह इंटीग्रल यूनिवर्सिटी में काम करता था, जहां उसकी पत्नी प्रोफेसर है। मिनहाज के घर के बाहर खड़ी कार पर यूनिवर्सिटी का कार पास भी लगा है।

नासिर और इमरान को रिमांड पर फिर दिल्ली ले गई एनआइए

दरभंगा पार्सल विस्फोट

राज्य ब्यूरो, पटना

बिहार के दरभंगा रेलवे जंक्शन पर 17 जून को हुए पार्सल विस्फोट मामले में हैदराबाद से पकड़े गए भाइयों नासिर मलिक और इमरान मलिक को राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनआइए) की टीम पूछताछ के लिए अपने साथ दोबारा दिल्ली ले गई है। दोनों भाइयों को शुक्रवार को ही पटना स्थित एनआइए की विशेष अदालत में पेश किया गया था, जहां अदालत ने सात दिनों की रिमांड मंजूर की थी। इसी मामले में उत्तर प्रदेश के कैराना से पकड़े गए कफील और सलीम को पटना में ही बेऊर जेल में रखा गया है।

हवाई यात्रा से पहले हुई मेडिकल जांच : दिल्ली रवाना होने से पहले दोनों संदिग्ध आतंकियों की पुलिस की मेडिकल टीम ने सेहत की जांच की। मेडिकल रिपोर्ट के बाद इन्हें दोपहर बाद विमान से दिल्ली ले जाया गया। नासिर और इमरान की रिमांड 16 जुलाई तक है। ऐसे में रिमांड अवधि पूरी होते ही एनआइए दोनों को अगले सप्ताह गुरुवार या शुक्रवार को वापस पटना लाएगी। इसके पहले भी नासिर, इमरान और कफील को एनआइए एक सप्ताह की रिमांड पर दिल्ली ले गई थी। उसके बाद गुरुवार को टीम तीनों को लेकर पटना लौटी थी।

कई बार पाकिस्तान जा चुका है नासिर

एनआइए की अब तक हुई पूछताछ में कई महत्वपूर्ण सुराग हाथ लगे हैं। सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तान में बैठा आतंकी इकबाल काना की नासिर और इमरान से रिश्तेदारी है। नासिर तीन बार पाकिस्तान भी गया है और लगातार इकबाल काना के संपर्क में रहा है। उससे लगातार इनकी फोन पर बातचीत भी होती रही है। एनआइए दोनों भाइयों से इसी मसले पर अगले एक सप्ताह में और गहन पूछताछ करेगी।

कोलकाता से जेएमबी के तीन संदिग्ध आतंकी गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

कोलकाता पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने बांग्लादेशी आतंकी संगठन जमात-उल-मुजाहिदीन (जेएमबी) बांग्लादेश के तीन संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया है। तीनों बांग्लादेश के गोपालगंज के रहने वाले हैं। एसटीएफ ने गुप्त सूचना के आधार पर दक्षिण कोलकाता के अलीपुर क्षेत्र के एमजी रोड इलाके में सघन तलाशी अभियान चलाने के बाद रविवार दोपहर तीनों को दबोच लिया। गिरफ्तार आतंकियों के नाम नाजीउर रहमान उर्फ जयराम, शेख शब्बीर उर्फ निखिल खांत और रबीउल इस्लाफ बताए गए हैं। तीनों मच्छरदानी व फल बेचा करते थे और पिछले दो माह से कोलकाता में रह रहे थे। एसटीएफ के उपायुक्त अपराजिता राय ने यह जानकारी दी।

एसटीएफ को पता चला है कि ये तीनों जेएमबी के लिए फंड जुटाने और भर्ती का कार्य कर रहे थे। नाजीउर बांग्लादेश की जेल में कुछ समय बंद रह चुका है। इनके पास से एक डायरी और जिहादी सामग्री व मोबाइल फोन मिले हैं। डायरी में कई जेएमबी कमांडरों के नाम व नंबर हैं।

स्पेशल टास्क फोर्स के मुताबिक ये तीनों जेएमबी के नए माड्यूल से जुड़े हो सकते हैं और स्लीपर सेल के गुर्गे हैं। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि ये कोलकाता क्यों आए और कैसे पहुंचे। यह भी पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि कितने अन्य लोग कोलकाता में जेएमबी स्लीपर सेल के रूप में सक्रिय हैं व इन लोगों की यहां कौन मदद कर रहा है।

बता दें, वर्ष 2014 में बर्द्धमान जिले के खागड़ागढ़ में एक घर में इंम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) धमाके के बाद जेएबमी के एक बड़े माड्यूल का भंडाफोड़ हुआ था। इसके बाद राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) ने बंगाल, असम, झारखंड समेत कई और राज्यों से जेएमबी से जुड़े दो दर्जन से अधिक आतंकियों को गिरफ्तार किया था।

हवाओं के बदले रुख से गड़बड़ाया मौसम विज्ञानियों का गणित

नई दिल्ली, प्रेट्र : मौसम विज्ञानियों का कहना है कि उत्तर भारत के कुछ इलाकों के लिए मौसम विभाग के पूर्वानुमान में गड़बड़ के पीछे पूर्वानुमान माडलों के गलत संकेत और पूर्वी व पश्चिमी हवाओं के बीच पारस्परिक प्रभाव के आकलन में कठिनाई जैसे कारण हैं। अगले 24 घंटों में उत्तर भारत में बारिश होने का शनिवार को जारी पूर्वानुमान गलत निकलने के बाद रविवार को मौसम विभाग ने कहा कि दिल्ली समेत उत्तर भारत के कई इलाकों में सोमवार सुबह से भारी से बहुत भारी बारिश होने का अनुमान है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून देश के लगभग सभी हिस्सों में पहुंच गया है, लेकिन यह अभी तक उत्तर भारत के कुछ हिस्सों से दूर है जिनमें दिल्ली, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से और पश्चिम राजस्थान शामिल हैं। मौसम विभाग ने इन इलाकों में मानसून जून तक पहुंचने का अनुमान व्यक्त किया था। विभाग ने 13 जून को अनुमान व्यक्त किया था कि दक्षिण-पश्चिम मानसून 15 जून तक दिल्ली पहुंच जाएगा, लेकिन एक दिन बाद ही विभाग का कहना था कि इस क्षेत्र में मानसून के आगे बढ़ने के लिए स्थितियां अनुकूल नहीं हैं।

एक जुलाई को मौसम विभाग ने फिर कहा कि सात जुलाई तक मानसून के आगे बढ़ने के लिए स्थितियां अनुकूल हो सकती हैं। उसका कहना था कि बंगाल की खाड़ी से आने वाली निम्नस्तरीय नमी वाली पूर्वी हवाओं के आठ जुलाई तक पूर्वी भारत पर अपना प्रभाव स्थापित करने की संभावना है। पांच जुलाई को विभाग ने कहा कि 10 जुलाई तक उत्तर-पश्चिम मानसून के पंजाब और उत्तर हरियाणा के ऊपर छा जाने की संभावना है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। केरल में मानसून पहुंचने को लेकर भी विभाग ने इसके 31 मई तक पहुंचने का अनुमान जताया था। 30 मई तक अपने दैनिक बुलेटिन में विभाग यही कहता रहा, लेकिन 31 मई को उसने अपने अनुमान में संशोधन करते हुए मानसून के तीन जून तक केरल पहुंचने की संभावना जताई थी।

मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि विभाग ने पूर्वानुमान माडल के संकेतों के मुताबिक दिल्ली समेत उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में 15 जून तक मानसून छा जाने का अनुमान जारी किया था, लेकिन अगले ही दिन (14 जून) इसे बदल दिया था जब लगा कि उसके आगे बढ़ने के लिए स्थितियां अनुकूल नहीं हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वानुमान माडल ने दो प्रमुख हवा पैटर्नों पूर्वी और पश्चिमी हवाओं के प्रभाव में निरंतरता नहीं दिखाई।

उत्तराखंड में बारिश और भूस्खलन से चार की मौत, दो लापता

जागरण टीम, हल्द्वानी : उत्तराखंड में शनिवार रात से जारी बारिश जिंदगी पर भारी पड़ने लगी है। कुमाऊं में अलग-अलग हादसों में चार लोगों की मौत हो गई, जबकि दो लापता हैं। बागेश्वर जिले में एक मकान भूस्खलन की चपेट में आ गया। हादसे में पति-पत्नी और मासूम समेत तीन की मौत हो गई है। चंपावत के टनकपुर में बरसाती नदी पार कर रही महिला बह गई। अल्मोड़ा में भी रामगंगा नदी में नहा रहे पिता-पुत्र भी बह गए। ये लोग परिवार के साथ मुरादाबाद से घूमने आए थे। दोनों लापता हैं।

बागेश्वर जिले की कपकोट तहसील के सुमगढ़ गांव में रविवार तड़के पहाड़ी से हुए भूस्खलन का मलबा एक मकान पर आ गिरा। मकान में रह रहे परिवार को जान बचाने का मौका तक नहीं मिल पाया। उस वक्त गोविंद सिंह पांडा उनकी पत्नी खष्टी देवी और आठ साल का पुत्र हिमांशु नींद में थे।

उप्र में आकाशीय बिजली गिरने से 41 की मौत, 32 लोग झुलसे

जागरण टीम, लखनऊ

उप्र में विभिन्न स्थानों पर हुई तेज बारिश के दौरान बिजली गिरने से 41 लोगों की मौत हो गई। 32 लोग झुलस गए।

प्रयागराज के कोरांव थाना क्षेत्र में तीन, बारा में तीन और करछना में दो लोगों की जान गई। सोरांव तहसील में विभिन्न स्थानों पर छह लोग जान गवां बैठे। एडीएम (वित्त एवं राजस्व) एमपी सिंह ने बताया कि वज्रपात से मरने वालों का विवरण और नुकसान की रिपोर्ट शासन को भेज दी गई है। मृतक आश्रितों को चार-चार लाख रुपये मुआवजा दिया जाएगा। कौशांबी के चायल व मंझनपुर तहसील में दो-दो लोगों की मौत हुई। अपर जिलाधिकारी मनोज कुमार ने यह जानकारी दी। प्रतापगढ़ में वज्रपात से लालगंज तहसील क्षेत्र में धान की रोपाई कर रहे युवक की जान चली गई।

कानपुर और आसपास के जिलों में रविवार को बिजली गिरने से जिलों में 16 लोगों की मौत हो गई और 14 झुलस गए। वज्रपात में फतेहपुर में तीन महिलाओं सहित पांच, कानपुर देहात में महिला सहित पांच, हमीरपुर में महिला और एक वृद्ध किसान, उन्नाव में चचेरे भाई-बहन, घाटमपुर में एक युवक और बांदा में एक युवती की मौत हो गई। फर्रुखाबाद में वज्रपात से नौ और फतेहपुर में पांच ग्रामीण झुलस गए। वज्रपात से फीरोजाबाद के गांव नगला ऊमर में दो की मौत हो गई।

जनहानि पर सीएम दुखी : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज जिले की तहसील कोरांव, बारा, करछना तथा सोरांव में बिजली गिरने की घटना से हुई जनहानि पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने दिवंगतों के स्वजन को अनुमन्य राहत राशि तत्काल वितरित किए जाने के निर्देश दिए हैं। मृतकों के शोकसंतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

मुकुल ने सारधा समूह के प्रमुख से 80 करोड़ रुपये लिए : नागेल

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : सारधा समूह के निदेशक मनोज नागेल ने भाजपा छोड़कर तृणमूल कांग्रेस में लौटे मुकुल रॉय पर सारधा समूह के प्रमुख सुदीप्त सेन से 80 करोड़ रुपये लेने का सनसनीखेज आरोप लगाया है। नागेल ने कहा कि जरूरत पड़ने पर वह इस बाबत बयान दर्ज कराने को भी तैयार हैं। नागेल ने सवाल किया कि सुदीप्त से करोड़ों रुपये लेने के बावजूद मुकुल रॉय कैसे घूम-फिर रहे हैं? केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) उनके खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं कर रहा? गौरतलब है कि अरबों रुपये के सारधा चिटफंड घोटाले का खुलासा होने के बाद 19 अप्रैल, 2013 को मनोज नागेल को गिरफ्तार किया गया था।

गिरफ्तार होने के बाद नागेल ने अपने बयान में कहा था कि सुदीप्त सेन के फरार होने के बाद मैंने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की थी। उन्होंने मुझे मुकुल रॉय से मिलने को कहा था।

आर-फैक्टर बढ़ने से सक्रिय मामलों में गिरावट धीमी पड़ी

मई में आर फैक्टर 0 .78 था जो जून के अंत तक बढ़कर 0 .88 हो गया

पिछले कई दिनों से देश भर में प्रतिदिन 40 हजार के आसपास मिल रहे हैं नए मामले

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना महामारी की दूसरी लहर एक बार फिर तेज होने लगी है। हालांकि यह वृद्धि अभी मामूली है। केरल और महाराष्ट्र में जहां मामले कम नहीं हो रहे हैं वहीं पूर्वोत्तर के राज्यों में नए केस बढ़ रहे हैं। हाल के दिनों में संक्रमण की रफ्तार का संकेत देने वाले आर-फैक्टर में मामूली वृद्धि देखी गई है जिससे सक्रिय मामलों में गिरावट की गति भी धीमी पड़ गई है।

चेन्नई स्थित गणितीय विज्ञान संस्थान (आइएमएस) के शोधकर्ताओं द्वारा किए विश्लेषण में आर-फैक्टर में वृद्धि पाई गई है। मई के मध्य में आर-फैक्टर 0.78 पर था जो जून के आखिर में बढ़कर 0.88 पर आ गया। आर-फैक्टर यह बताता है कि एक संक्रमित व्यक्ति औसतन कितने लोगों में संक्रमण फैला रहा है। आर-फैक्टर के 0.88 का मतलब है कि 100 संक्रमित व्यक्ति औसतन 88 लोगों में संक्रमण फैला रहे हैं।

रविवार सुबह आठ बजे तक कोरोना की स्थिति

नए मामले	41,506
कुल मामले	3,08,37,222
मौतें	895
कुल मौतें	4,08,040
कुल सक्रिय मामले	4,54,118
ठीक होने की दर	97.20 फीसद
पाजिटिविटी दर	2.25 फीसद
मृत्यु दर	1.32 फीसद
जांचें (शनिवार)	18,43,500
कुल जांचें	43,08,85,470

आर-फैक्टर के एक से कम होने का मतलब है कि संक्रमण दर में गिरावट है। जब कोरोना महामारी की दूसरी लहर चरम पर थी तब नौ मार्च से 21 अप्रैल के बीच आर-फैक्टर 1.37 था। इसका मतलब है कि उस समय हर 100 संक्रमित व्यक्ति 137 लोगों में संक्रमण फैला रहे थे। उसके बाद से इसमें लगातार गिरावट आती गई।

केरल में आर-फैक्टर 1.10 के करीब है। जबकि, पूर्वोत्तर के राज्यों में से त्रिपुरा में 1.15, अरुणाचल प्रदेश में 1.14, मणिपुर में 1.07, मेघालय में 0.92, सिक्किम में 0.88 और असम एवं मिजोरम में 0.86 है।

आर-फैक्टर बढ़ने से ही केरल में लगातार 10 हजार से ज्यादा नए मामले पाए जा रहे हैं। पिछले 24 घंटे में भी राज्य में 14 हजार से ज्यादा नए केस मिले हैं। यही हाल पूर्वोत्तर के राज्यों में भी है। असम में तो पहले से ही ज्यादा मामले मिल रहे थे, अब क्षेत्र के दूसरे राज्यों में भी नए मामले बढ़ रहे हैं। इसी आर-फैक्टर में वृद्धि के चलते सक्रिय मामलों में गिरावट की रफ्तार धीमी पड़ गई है। पहले जहां रोजाना हजारों की संख्या में सक्रिय मामले कम हो रहे थे, वहीं पिछले 24 घंटे में इसमें 915 की गिरावट आई है।

त्रिपुरा में डेल्टा प्लस वैरिएंट का कोई मामला नहीं : समाचार एजेंसी प्रेट्र के मुताबिक केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि त्रिपुरा में कोरोना वायरस के डेल्टा प्लस वैरिएंट का कोई मामला नहीं मिला है।

कोविड से मृतकों की विधवाओं को 2.5 लाख रुपये देगी असम सरकार

गुवाहाटी, प्रेट्र : असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने उन विधवाओं को 2.5 लाख रुपये की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए योजना लांच की है जिनके पति की कोविड-19 के कारण मौत हो गई है। योजना के तहत जिनकी पारिवारिक आय पांच लाख रुपये से कम है, उन विधवाओं को राज्य सरकार एक बार में 2.5 लाख रुपये की वित्तीय सहायता देगी। गुवाहाटी में रविवार को एक कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने आठ जिलों की 176 पात्र लाभार्थियों को 'मुख्यमंत्री कोविड-19 विधवा समर्थन योजना' के तहत चेक सौंपे।

सरमा ने कहा कि इस योजना के तहत करीब 873 लाभार्थियों की पहचान की गई है और अगले सप्ताह राज्यमंत्रियों द्वारा उन्हें चेक सौंपे जाएंगे। उन्होंने कहा, 'यह हमारे लिए खुशी का कार्यक्रम नहीं है। जब हम लाभार्थियों को सरकारी योजना के लिए आमंत्रित करते हैं तो हमें हमेशा गर्व होता है, लेकिन आज के कार्यक्रम में हमें न तो गर्व हो रहा है और न ही खुशी।'

उन्होंने कहा कि असम में 6,159 कोरोना वायरस पाजिटिव लोगों की मौत हो गई। इनमें से 1,347 की कोरोना से जुड़ी जटिलताओं के कारण जान गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने 873 विधवाओं की पहचान की है, लेकिन हमारा अनुमान है कि ऐसी दो से ढाई हजार विधवा महिलाएं हो सकती हैं। सरकार उनकी मदद कर रही है।

बदलाव : कुछ ही सेकंड में आएगी कोरोना संक्रमण की जांच रिपोर्ट

जेएनएन, नई दिल्ली

- जांच की नई तकनीकें जल्द ही कम कर देगी इंतजार की घड़ियां
- सबसे प्रामाणिक आरटी-पीसीआर जांच में भी अब लगता है आधा समय

कोरोना का नैदानिक परीक्षण एक मिनट से भी कम समय में संभव हो सकेगा। देश में यह तकनीक अगले सप्ताह से शुरू हो जाएगी। देश में पिछले करीब डेढ़ साल से पसरी कोरोना महामारी की चपेट में आने वाले लोगों के बारे में शीघ्रता से पता करने के लिए ये तकनीक बड़ा बदलाव साबित होंगी।

बहुराष्ट्रीय कंपनी एबट जहां नया रैपिड टेस्ट शुरू करने जा रही है वहीं मुंबई स्थित कंपनी, मेडीसर्किल हेल्थ प्राइवेट लिमिटेड, कुछ सेकंड के भीतर लार के स्वाब या गरारे के पानी कोरोना की जांच की तकनीक लांच करने जा रही है। यह तकनीक इजरायल ने ईजाद की है और इसे बहुत कारगर माना गया है। इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च (आइसीएमआर) और नेशनल इंस्टीट्यूट आफ वायरोलाजी ने भी अपनी नई तकनीक आरटी-एलएएमपी को स्थानांतरित कर दी है। इस तकनीक से आरटी-पीसीआर जांच में अब मात्र तीन घंटे लगेंगे जबकि अभी तक इस तरह की जांच में चार से छह घंटे का समय लग रहा था।

मेट्रोपोलिस लेबोरेटरी के विज्ञान और नवाचार के प्रमुख डा.नीलेश शाह ने कहा कि पिछले 15 से 16 महीनों में कोरोना की जांच में काफी बदलाव आया है। आरटी-पीसीआर जांच अभी भी सबसे प्रामाणिक है। लेकिन उसमें भी पहले की अपेक्षा काफी बदलाव आया है। इस जांच में अब कम समय और जनशक्ति लग रही है।

नए तरीके से आरटी-पीसीआर जांच का नतीजा पांच मिनट में भी दिया जा सकता है। हालांकि इसके लिए जेब ज्यादा ढीली करनी पड़ेगी। इसके लिए फिलहाल 4,500 रुपये तक की फीस ली जा रही है। यूएई जैसे कुछ देशों में आरटी-पीसीआर रिपोर्ट की मांग की जाती है। यह बोर्डिंग से चार घंटे पहले ली जाती है। यात्रा के लिए लोग इस तरह की की जांच कराते हैं।

हालांकि भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में आरटी-पीसीआर जांच के लिए जरूरी बुनियादी ढांचे और भारी निवेश के कारण बड़े पैमाने पर उपयोग में नहीं लाई जा सकती। भारत में शीघ्रता से परिणाम देने वाली रैपिड जांच जरूरी है जिसका परिणाम 15 मिनट के भीतर आ जाता है।

मेडी-सर्कल हेल्थ के प्रणव कोहली ने कहा कि जांच के नये तरीके से न केवल परिणाम एक मिनट से भी कम समय में मिलेंगे बल्कि उन्हें आइसीएमआर के कोविड पोर्टल पर तत्काल अपलोड भी किया जा सकेगा।

उन्होंने कहा कि नई तकनीक संक्रमण के मामलों का पता लगाने और किसी भी प्रसार को रोकने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों को पूरा करने में मदद करेगा। 207 नमूनों के बीच दिल्ली में किए गए एक पायलट अध्ययन से पता चला है कि परीक्षण में 93.5 फीसद संवेदनशीलता है। कोहली ने कहा, चूंकि जांच और नतीजे एक जगह पर तेजी से उपलब्ध होने के कारण इस तकनीक का उपयोग हवाई अड्डे, रिसार्ट्स, कार्यालयों, माल आदि में बड़े पैमाने पर स्क्रीनिंग के लिए किया जा सकता है।

वायरस से संक्रमित शरीर एक निश्चित तरंग दैर्ध्य का उत्सर्जन करने वाला रसायन उत्पन्न करता है। इजराइली परीक्षण इसी सिद्धांत पर काम करता है। एक बयान के अनुसार जब रोगी से लिए गए नमूने को हैंडहेल्ड डिवाइस (हाथ से पकड़े हुए उपकरण) में डाला जाता है, तो एक स्पेक्ट्रम उत्पन्न होता है, जो तत्काल विश्लेषण देता है।

मंत्रालय के दो सलाहकार, डीजीसीए के दो अफसरों की कोरोना से मौत

नई दिल्ली, प्रेट्र : नागरिक उड्डयन मंत्रालय के दो सलाहकार और उड्डयन नियामक डीजीसीए के दो अधिकारियों की कोविड-19 से मौत हो चुकी है। सरकारी अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।

सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त हो चुके दोनों सलाहकारों को मंत्रालय ने अनुबंध के आधार पर रखा था। दोनों की 2020 में कोविड-19 की पहली लहर के दौरान मौत हो गई। अधिकारियों ने कहा कि नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) के दो अधिकारियों की 2021 में कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान मौत हुई। डीजीसीए के दोनों अधिकारी क्रमशः निदेशक और सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत थे।

इस साल अप्रैल-मई के दौरान देश कोरोना वायरस संक्रमण की दूसरी लहर से बुरी तरह प्रभावित हुआ। इस साल जनवरी से मई के बीच नागरिक उड्डयन मंत्रालय के कुल 44 कर्मचारी पाजिटिव पाए गए।

राज्यों के पास अभी कोरोना वैक्सीन की 1.44 करोड़ डोज

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोरोना वायरस के खिलाफ देश में टीकाकरण का महाभियान चल रहा है। इसके लिए केंद्र सरकार की तरफ से राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कोरोना रोधी वैक्सीन उपलब्ध कराई जा रही है। रविवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि अभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पास वैक्सीन की 1.44 करोड़ डोज उपलब्ध हैं।

मंत्रालय के मुताबिक केंद्र की तरफ से अभी तक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कुल 38.60 करोड़ डोज मुहैया कराई जा चुकी हैं। सुबह आठ बजे के आंकड़ों के मुताबिक इनमें से 37.16 करोड़ डोज का इस्तेमाल किया गया है, जिसमें बर्बाद हुई डोज भी शामिल हैं।

वहीं, समाचार एजेंसी आइएएनएस के मुताबिक जल्द ही राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 11.25 लाख डोज और मिल जाएंगी। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि सरकार पूरे देश में टीकाकरण की गति और उसका दायरा बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है।



असम के सोनीतपुर जिले के तेजपुर में रविवार को वैक्सीन लगवाने के लिए वैक्सीनेशन सेंटर के बाहर कतार में खड़ी महिलाएं। प्रेट्र

बरेलवी उलमा ने कहा, वैक्सीन जरूर लगवाएं

जासं, बरेली : कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए सभी को वैक्सीन लगे, इस बाबत सुन्नी बरेलवी मरकज के धर्मगुरुओं ने भी पहल की। दरगाह आला हजरत से पहले ही एलान हो चुका कि टीकाकरण जरूर कराएं। मुस्लिम क्षेत्रों में कैंप भी लगाए जा रहे हैं। बरेली में सुन्नी जामा मस्जिद के शहर इमाम मुफ्ती खुर्शीद आलम सहित अन्य धर्मगुरुओं ने कहा कि वैक्सीन किसी भी तरह से इस्लामिक मान्यताओं के खिलाफ नहीं है। इसको लेकर भ्रम फैलाया जा रहा है।

रविवार रात 11 बजे तक किस राज्य में कितने टीके लगे

गुजरात	2.25 लाख
महाराष्ट्र	1.76 लाख
राजस्थान	74,840
जम्मू-कश्मीर	32,039
हरियाणा	27,604
पंजाब	27,280
झारखंड	18,605
उत्तराखंड	17,405
बिहार	17,109
छत्तीसगढ़	14,325
दिल्ली	10,852
उत्तर प्रदेश	8,540

कोविन प्लेटफार्म पर उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक रविवार को रात 11 बजे तक 12.22 लाख डोज लगाई गईं और इसके साथ ही अब तक दी गई कुल डोज की संख्या 37.22 करोड़ हो गई है। इनमें से 30.04 करोड़ लोगों को पहली और 7.17 करोड़ लोगों को दूसरी डोज दी गई हैं। रविवार को कुल 14,717 केंद्रों पर टीके लगाए गए।

एक घंटे में फंगस का पता लगाएगी दुनिया की सबसे सस्ती देसी टेस्ट किट

इंद्रजीत सिंह, कोलकाता

देश में कोरोना वायरस के संक्रमण के साथ पिछले दिनों फंगस (म्यूकरमाइकोसिस) के भी अनेक मामले सामने आए। विशेषज्ञ इस बीमारी को काफी गंभीर मान रहे हैं। देश में 40 हजार से ज्यादा लोग फंगस की चपेट में आ चुके हैं। म्यूकरमाइकोसिस के परीक्षण की लागत अधिक है। बाजार में फिलहाल मौजूद आयातित फंगस टेस्ट किट की कीमत 7,000 रुपये है। अब बाजार में भारत में निर्मित दुनिया की सबसे सस्ती फंगस टेस्ट किट आ गई है जिसकी कीमत महज 1,000 रुपये है। दावा है कि यह एक घंटे से भी कम समय में फंगस संक्रमण की जांच कर सकती है। अभी बाजार में मौजूद विदेशी टेस्ट किट से जांच का नतीजा मिलने में 24 घंटे का समय लगता है।

कोलकाता की जैव प्रौद्योगिकी कंपनी जीसीसी बायोटेक के शोधकर्ताओं ने यह किट बनाई है। यह फंगस टेस्ट किट बनाने वाली देश की पहली कंपनी है।

कलकत्ता विवि के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने की जांच : जीसीसी बायोटेक के प्रबंध निदेशक राजा मजूमदार ने दावा किया कि कंपनी के शोधकर्ताओं ने घातक फंगस की पहचान के लिए दुनिया की सबसे सस्ती परीक्षण किट बनाने में कामयाबी हासिल की है। शोध के दौरान कलकत्ता विश्वविद्यालय के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने किट की गुणवत्ता की जांच कर इसकी पुष्टि की है। नई टेस्ट किट को ड्रग काउंसिल ने भी मंजूरी दे दी है। किट का नाम डायगश्योर म्यूकरमाइकोसिस डिटेक्शन किट है।

राजा मजूमदार ने कहा कि बाजार में फिलहाल मौजूद म्यूकरमाइकोसिस के परीक्षण की आयातित किट (डच किट) की कीमत से नई देसी किट की कीमत काफी कम है। कंपनी ने इसका वाणिज्यिक उत्पादन शुरू कर दिया है और उसके पास लगभग 10 लाख किट तैयार हैं। किट बाजार में भी उपलब्ध हैं।

प्रदर्शनकारियों का फिर उपद्रव, भाजपा नेताओं पर हमला

जागरण टीम, नई दिल्ली

- सिरसा में हरियाणा विस उपाध्यक्ष की गाड़ी पर पत्थर फेंके, सांसद सुनीता को मुश्किल से निकाला

भारतीय जनता पार्टी के नेताओं व मंत्रियों के कार्यक्रमों का विरोध कर रहे किसान प्रदर्शनकारियों ने रविवार को जमकर उपद्रव किया। हरियाणा के सिरसा में उन्होंने विधानसभा उपाध्यक्ष रणबीर गंगवा की गाड़ी पर हमला कर दिया। पथराव होने से गाड़ी के शीशे टूट गए और उसमें बैठे गंगवा सहित अन्य बाल-बाल बच गए। सांसद सुनीता दुग्गल को एसडीएम की गाड़ी में बैठाकर कार्यक्रम स्थल से बाहर निकाला गया। वहीं, पंजाब के राजपुरा में देर रात तक स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई थी। किसानों ने दिन में बैठक कर रहे भाजपाइयों के साथ मारपीट की और शाम को जिलाध्यक्ष के घर पहुंचे वरिष्ठ नेताओं को बंधक बना लिया। पुलिस देर तक भाजपा नेताओं को मुक्त नहीं करा सकी थी।

रविवार को राजपुरा में भाजपा के कई कार्यक्रमों का आयोजन था। पार्टी नेता सुबह भारत विकास परिषद भवन में बैठक कर रहे थे। उसी समय किसान पहुंच गए और मारपीट करने लगे। एक भाजपा नेता का कुर्ता फाड़ दिया। पुलिस ने मुश्किल से भाजपाइयों को वहां से सुरक्षित निकाला। इसके बाद दोपहर करीब तीन बजे जब पार्टी के प्रदेश महासचिव सुभाष शर्मा लायंस भवन में बैठक करने पहुंचे तो किसान वहां पहुंचकर हंगामा करने लगे। शाम साढ़े पांच बजे स्थिति उस समय गंभीर हो गई जब करीब 250-300 किसानों ने भाजपा के जिला सचिव डा. अजय चौधरी के घर को घेर लिया। घर की बिजली सप्लाई भी काट दी और प्रदेश महासचिव सुभाष शर्मा, जिला प्रभारी भूपेश अग्रवाल, जिलाध्यक्ष ग्रामीण विकास शर्मा, शहरी जिलाध्यक्ष हरिंदर कोहली, जिला उपाध्यक्ष प्रदीप नंदा सहित करीब 15 नेताओं को घर में बंधक बना लिया। पटियाला के डीआइजी विक्रमजीत दुगल, एसएसपी संदीप गर्ग, एसपी केसर सिंह व अन्य अधिकारियों ने किसानों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन वे नहीं माने। एसएसपी डा. संदीप गर्ग ने कहा कि जल्द ही समाधान निकाला जाएगा।

सूचना के बावजूद पुलिस नहीं कर पाई सुरक्षा : सुभाष शर्मा

भाजपा के प्रदेश महासचिव सुभाष शर्मा ने कहा कि सूचना के बावजूद पुलिस भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं को सुरक्षा नहीं दे सकी। किसानों के भेष में हमलावर लाठियां और राड लेकर आए थे। यह पंजाब सरकार की सोची समझी साजिश का हिस्सा है।



पंजाब के राजपुरा में गुरु अर्जन देव कालोनी स्थित भाजपा जिला सचिव अजय चौधरी के घर चाय पीने पहुंचे भाजपा नेताओं का घेराव करते किसान। किसानों ने घर की बिजली सप्लाई भी काट दी थी। प्रिंस तनेजा

सिरसा में दिनभर रहे टकराव के हालात : भाजपा ने सिरसा स्थित चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय (सीडीएलयू) में कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया था। इसमें सुनीता दुग्गल, रणबीर सिंह गंगवा, जिलाध्यक्ष आदित्य देवीलाल, महासचिव अमन चोपड़ा व अन्य नेता पहुंचे थे। दिनभर पुलिस व किसानों के बीच टकराव के हालात रहे और कई बार किसानों ने बैरिकेड तोड़कर प्रवेश का प्रयास किया लेकिन पुलिस उन्हें पीछे करती रही। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद भाजपा नेता निकलने लगे तो टकराव हो गया।

विरोध में 21 को पैदल मार्च

जासं, सोनीपत : कुंडली बार्डर पर किसानों के धरने के कारण पिछले सात माह से जीटी रोड बंद होने से परेशान स्थानीय लोगों ने 21 जुलाई को पैदल मार्च निकालने का फैसला किया है।

सुप्रीम आदेश : दहेज प्रताड़ना के आरोपित पति पर चलेगा हत्या का मुकदमा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

दहेज प्रताड़ना के आरोपित पति पर हत्या का भी मुकदमा चलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने लड़की के पिता की याचिका पर हत्या का मुकदमा रद करने का हाई कोर्ट का आदेश खारिज कर दिया है। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि हाई कोर्ट को पुनरीक्षण शक्ति का इस्तेमाल उन मामलों में नहीं करना चाहिए जिसमें आइपीसी की धारा 302 में लगे अतिरिक्त आरोपों पर ट्रायल चल रहा हो और अभियोजन पक्ष के सभी गवाहों का परीक्षण हो चुका हो।

यह आदेश जस्टिस आरएफ नरीमन, केएम जोसेफ और बीआर गवई की पीठ ने दिया। राजस्थान भरतपुर के इस मामले में लड़की का शव फांसी पर लटका मिला था। पति पर दहेज प्रताड़ना, चोट पहुंचाने और आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा चल रहा था लेकिन सत्र अदालत ने रिकार्ड पर मौजूद साक्ष्यों को देखते हुए 16 मई 2016 को पति पर आइपीसी की धारा 302 में हत्या का भी अतिरिक्त आरोप तय कर मुकदमा चलाने का आदेश दिया था। लेकिन हाई कोर्ट ने 10 जनवरी 2018 को पति की पुनरीक्षण याचिका पर सत्र अदालत का धारा 302 में मुकदमा चलाने का आदेश रद कर दिया।

गत गुरुवार को याचिकाकर्ता के वकील डीके गर्ग ने बहस के दौरान सुप्रीम कोर्ट में कहा कि हत्या में ट्रायल शुरू होने के करीब 14 महीने बाद हाई कोर्ट ने सत्र अदालत का 302 में मुकदमा चलाने का आदेश रद किया। हाईकोर्ट ने जब आदेश रद किया तब तक हत्या के ट्रायल में अभियोजन पक्ष के सभी 12 गवाहों के बयान और जिरह हो चुकी थी। गर्ग ने कोर्ट को मृतका की पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी दिखाई जिसमें शव पर चोट के निशान पाए जाने की बात दर्ज है। उन्होंने कहा कि शव के पास सुसाइड नोट भी मिला था लेकिन यह साबित नहीं हुआ कि सुसाइड नोट पर हस्ताक्षर मृतका के ही हैं। दूसरी ओर आरोपित पति की ओर से पेश वकील का कहना था कि सुप्रीम कोर्ट को अभी मामले में दखल नहीं देना चाहिए क्योंकि अभियोजन पक्ष को छूट मिली है कि पर्याप्त सुबूत मिलने पर वह अलग से इस बारे में अर्जी दे सकता है। पीठ ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद हाई कोर्ट का आदेश रद करते हुए कहा कि हाईकोर्ट को उन मामलों में पुनरीक्षण शक्ति का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जहां धारा 302 में लगाए गए अतिरिक्त आरोपों पर ट्रायल चल रहा हो और अभियोजन पक्ष के सभी गवाहों का परीक्षण हो चुका हो। सुप्रीम कोर्ट ने लंबित मुकदमा जल्द से जल्द निबटाने का आदेश देते हुए विशेष अनुमति याचिका निस्तारित कर दी।

केस के मुताबिक याचिकाकर्ता की बेटी नीरज की शादी 1999 में कृष्णवीर उर्फ पिंटू से हुई थी। शादी के कुछ दिन बाद से ही उसे पति और सास ने सताना शुरू कर दिया। 2012 में नीरज के पिता के रिटायर होने के बाद पति और सास उस पर पिता से पांच लाख रुपये लाने का दबाव डालने लगे। जब वह इसके लिए राजी नहीं हुई तो उसके साथ बुरा बर्ताव होने लगा। 10 जून 2014 को नीरज का शव फांसी पर लटका मिला।

पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का स्वास्थ्य पहले से बेहतर

जासं, लखनऊ : लखनऊ के संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआइ) में भर्ती उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का स्वास्थ्य अब पहले से बेहतर है। रविवार को केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण, उद्योग एवं जल शक्ति राज्य मंत्री प्रह्लाद पटेल ने संस्थान पहुंचकर कल्याण सिंह से भेंट की और डाक्टरों से उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। डाक्टरों के अनुसार कल्याण सिंह का रक्तचाप और ब्लड शुगर नियंत्रण में है। स्वास्थ्य खराब होने पर उन्हें चार जुलाई को संस्थान के क्रिटिकल केयर मेडिसिन (सीसीएम) विभाग की आइसीयू में भर्ती कराया गया था। क्रिटिकल केयर मेडिसिन, नेफ्रोलाजी, न्यूरोलाजी, एंडोक्रिनालाजी एवं कार्डियोलाजी विभागों के वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम उनकी जांच और उपचार पर नजर रखे हुए है। उनकी स्थिति बेहतर है।

उत्तराखंड पहुंचे पर्यटकों के 4050 वाहनों को लौटाया

जागरण संवाददाता, देहरादून

उत्तराखंड में पुलिस की सख्ती के बाद रविवार को मसूरी, नैनीताल और लैंसडौन में सीमित संख्या में ही पर्यटक पहुंच पाए। बिना होटल बुकिंग, आरटीपीसीआर की निगेटिव रिपोर्ट और रजिस्ट्रेशन कराए बिना आने वाले पर्यटकों को बार्डर से ही लौटा दिया गया। वहीं, उत्तराखंड की सीमाओं पर चेकिंग के कारण पूरे दिन जाम जैसी स्थिति बनी रही। जांच में सभी दस्तावेज पाए जाने के बाद 1950 वाहनों को ही मसूरी जाने दिया गया। वहीं, हरकी पैड़ी में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। इस दौरान श्रद्धालु शारीरिक दूरी का पालन करते नजर नहीं आए।

देहरादून के एंट्री प्वाइंट आशारोड़ी चेकपोस्ट से 250, कुठालगेट से 2050, किमाड़ी से 770, सहस्रधारा से 550 और गुच्चूपानी से 430 वाहनों को लौटाया गया। इससे मसूरी में भीड़ काफी सीमित रही। हालांकि जाम की स्थिति फिर भी बनी। रविवार को बड़ी संख्या में सैलानी नैनीताल घूमने पहुंचे। हालांकि शहर के एंट्री प्वाइंट रूसी बाइपास व नारायणनगर में जांच के दौरान बिना होटल बुकिंग और कोविड जांच के आए पर्यटकों को शहर में एंट्री नहीं दी गई।

> पुलिस की सख्ती के बाद पर्यटक स्थलों पर भीड़भाड़ सीमित रही। पिछले सप्ताह के मुकाबले काफी कम वाहन ही पर्यटक स्थलों पर पहुंचे। मसूरी, सहस्रधारा व गुच्चुपानी में गहनता से चेकिंग करवाई गई। ऐसे में वही पर्यटक पहुंच सके, जिनके पास पूरे दस्तावेज थे। सख्ती के बाद काफी संख्या में लोग दस्तावेज लेकर भी आ रहे हैं।
>
> – डा. योगेंद्र सिंह रावत, एसएसपी, देहरादून



गश्त पर गजराज, जाम हुआ राजमार्ग...

उत्तराखंड में कोटद्वार के नजीबाबाद–बुआखाल राष्ट्रीय राजमार्ग के बीचोंबीच हाथी के आने से मार्ग जाम हो गया। इससे सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। करीब पौन घंटे तक सड़क पर जाम लगा रहा। सूचना पर पहुंची वन विभाग की टीम ने हाथी को जंगल की ओर खदेड़ा। अजय खंतवाल

करंट से एक ही परिवार के छह लोगों की मौत

नईदुनिया, ग्वालियर : मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के महुआझाला गांव में रविवार की सुबह करंट लगने से एक परिवार के छह लोगों की मौत हो गई। दो लोगों को गंभीर रूप से झुलसी हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। गांव में अहिरवार परिवार के एक निर्माणाधीन मकान में बने बड़े टैंक की शटरिंग को खोलने के लिए घर का एक सदस्य उसमें उतरा। इससे पहले भरे पानी को निकालने के लिए टैंक में पहले से एक पंप डालकर उसकी केबल बोर्ड से जोड़कर बिजली सप्लाई चालू कर दी गई थी। केबल में कट लगे होने से करंट पानी में आ गया। परिवार का सदस्य टैंक में जैसे ही उतरा, वैसे ही उसे करंट का जोरदार झटका लगा। चीख सुनकर दूसरा सदस्य उसे बचाने के लिए दौड़कर टैंक में कूद गया जिससे वह भी करंट की चपेट में आ गया। इसी तरह चीखें सुनकर बचाने की कोशिश में एक के बाद एक बाकी लोग भी टैंक में कूदते गए।

अनुच्छेद 14 : भारत के सभी नागरिकों को समान अधिकार हैं। इसके तहत जाति, धर्म, समुदाय, नस्ल, लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है। सभी को समान अधिकार सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है।

अनुच्छेद 15 : किसी के साथ जाति, धर्म, समुदाय, नस्ल और लिंग के आधार पर भेदभाव न हो, राज्य ये सुनिश्चित करेगा।

अनुच्छेद 21 : जीवन जीना और आजादी से जीना हर व्यक्ति का अधिकार है। यह सबका मूल अधिकार है। इसमें किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता।

अनुच्छेद 25 : सभी को अपने धर्म का पालन करने की आजादी है। व्यक्ति को उसके धर्म से जुड़े रीति-रिवाज नियम कानूनों को मानने की आजादी है।

मुद्दा से संबंधित अपनी राय, सुझाव और प्रतिक्रिया mudda@jagran.com पर भेज सकते हैं।

समझ के साथ बढ़ने का समय



राकेश सिन्हा
सदस्य, राज्यसभा, राष्ट्रवादी विचारक

किसी समाज में स्थानीयता और सामुदायिकता का भाव अहम होता है। वही उसे स्थिरता और सद्भाव देता है। समान नागरिक कानून स्थानीयता व सामुदायिकता को पर्सनल लॉ के स्थान पर अधिक महत्व देता है और यह दोनों पक्ष संविधान की प्रस्तावना में प्रतिबिंबित होते हैं।

भारत एक उदार, पंथनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक देश है, लेकिन समान नागरिक कानून के बिना ये तीनों अपूर्ण और बाधित हैं। संविधान निर्माताओं को अपेक्षा थी कि भारतीय राज्य इसे मूर्त रूप देंगे, किंतु हुआ उसका एकदम उलटा। पिछले सात दशकों से समान नागरिक कानून सत्तावादी स्वार्थ की राजनीति की न सिर्फ बलि चढ़ता रहा, अपितु राजनीति ने एक सहज, सरल विषय को जटिल बना दिया है। जिस कानून से पंथनिरपेक्षता को प्रबलता मिलेगी, उसे सांप्रदायिकता का हथियार बनाकर राजनीतिज्ञ और बुद्धिजीवी पेश करते रहे हैं। तीन तलाक, जनसंख्या कानून और समान नागरिक कानून इसकी बानगी हैं।

सात दशकों में सर्वोच्च न्यायालय सहित लगभग आधे दर्जन से अधिक उच्च न्यायालयों ने इस कानून को लागू करने के पक्ष में तर्कपूर्ण निर्णय दिया है। परन्तु ये सभी दरकिनार कर दिए गए। इनमें 1985 का सर्वोच्च न्यायालय का शाहबानो मामले में दिया गया ऐतिहासिक फैसला भी है। भारत की संविधान सभा में 23 नवंबर, 1948 को इस प्रश्न पर सारगर्भित बहस हुई थी। इसमें मुस्लिम सदस्यों नजीरुद्दीन अहमद, महबूब अली बेग साहब बहादुर, पोकर साहब बहादुर व हुसैन इमाम ने कई आशंकाएं उठाईं और अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यंगर, कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी और भीमराव आंबेडकर ने इनके स्पष्टता से जवाब भी दिए थे। नजीरुद्दीन अहमद ने संविधान सभा से कहा, 'जिसे ब्रिटिश 175 साल तक करने में विफल रहे या करने से डरते रहे और जिसे मुस्लिम पिछले 500 वर्षों में करने से कतराते रहे, उसे अचानक करने के लिए हमें राज्य को शक्ति नहीं देनी चाहिए।' इसके उत्तर में मुंशी ने कहा, 'उस मानसिकता को जिसे ब्रिटेन और ब्रिटेन की सरकार ने पोषित किया कि वैयक्तिक कानून धर्म पर आधारित है, उसे हमें अवश्य समाप्त करना चाहिए।' इमाम हुसैन ने एक सवाल उठाया, जो आज भी उठता है। इतने बड़े देश के लिए एक कानून संभव नहीं है। इसका उत्तर आंबेडकर ने दिया कि नागरिकता कानून तो देश का, समाज का एक छोटा कोना मात्र है। उन्होंने कहा कि ऐसे गौरवाजिब तर्क से उन्हें आश्चर्य हुआ। विवाह और उत्तराधिकार को छोड़कर देश के सभी मामलों में समान कानून तो बना ही हुआ है। इसी में क्रिमिनल लॉ भी है। अय्यंगर ने सरल तरीके से संविधान सभा को आगाह किया कि हमेशा भूतकाल से दबे रहने से कोई उपयोगिता नहीं है।

आज की विरोधमूलक बहस तथ्य और तर्क दोनों से परे है। आजादी से पूर्व के अनेक उदाहरण हैं, जब अलग-अलग स्थानों में मुस्लिम समाज पर्सनल लॉ को न मानकर स्थानीय कानूनों और मान्यता से चलता था। औपनिवेशिक सरकार ने 1937 में शरई कानून बनाकर जबर्दस्ती स्थिति को बदलने का सांप्रदायिक काम किया था। उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत (एनडब्लूएफपी) में मुसलमान सिविल मामलों में वही कानून अथवा मान्यता मानते थे जिसे हिंदू मानते थे। गुजरात में खोजा मोमीन मुसलमानों में भी वही था। केरल के मालाबार में मरुमक्कथायम कानून से हिंदू-मुस्लिम संचालित थे। आजादी के बाद नेहरू के पास अवसर था और उनसे अपेक्षा थी कि शरई कानून को हटाकर समान नागरिक कानून बनाएं, पर उन्होंने नहीं किया। तभी तो आचार्य जेबी कृपलानी ने हिंदू कोड बिल पर बहस में हिस्सा लेते हुए संसद में कहा था, 'एक समुदाय के लिए कानून बनाना और दूसरे को छोड़ देना राज्य की सांप्रदायिक सोच और दृष्टि का प्रतीक है।'

इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के दूसरे सरसंघचालक गोलवलकर का मत प्रासंगिक हो जाता है। उन्होंने संघ के अखबार 'मदरलैंड' को 23 अगस्त, 1972 को दिए साक्षात्कार में मुस्लिम समाज में समान नागरिकता कानून के लिए विमर्श और मानसिक तैयारी के लिए प्रयास की बात कही थी। परंतु 1972 से 2021 तक न उनके बीच बहस हुई, न ही मानसिक तैयारी का प्रयास। ऐसा नहीं है कि विवेकवादी और उदार चिंतकों की उनके बीच कमी रही है। एएए फैजी, मोइन शकीर, हुमायूं कबीर, जस्टिस एमएच बेग, तजामुल हुसैन, आरिफ मुहम्मद खान जैसे प्रगतिशील चिंतक रहे हैं। परंतु कोई राजा राम मोहन राय या ईश्वरचंद विद्यासागर नहीं बन पाया।

समान नागरिक कानून का तात्पर्य विवाह और उत्तराधिकार के प्रश्न पर वैज्ञानिकता व विवेक को आधार बनाना है। हर समाज अपने संदर्भों, उत्थान, पतन एवं विरोधाभासों के आधार पर कुछ मान्यताएं विकसित करता है, यही पर्सनल लॉ है। परंतु देश काल और संदर्भ बदलने से उसमें बदलाव समाज के विकास को सुनिश्चित करता है। समान नागरिक कानून के विपक्ष में बोलने वाले चाहे धार्मिक नेता हों या राजनीतिज्ञ, वे प्रतिक्रियावादी माने जाएंगे।

किसी समाज में स्थानीयता और सामुदायिकता का भाव अहम होता है। समान नागरिक कानून दोनों भावों को पर्सनल लॉ के स्थान पर अधिक महत्व देता है और यह दोनों पक्ष संविधान की प्रस्तावना में प्रतिबिंबित होते हैं। जब कोई समुदाय परिवर्तन को, प्रगतिशीलता को, वैज्ञानिक सोच को लंबे समय तक नकारता है, तो वह पिछड़ता है। राज्य का नैतिक और संवैधानिक दोनों दायित्व बनता है कि प्रत्यक्ष और निर्भयता के साथ हस्तक्षेप कर कानून बनाए। लोकतांत्रिक विमर्श हमेशा ही राह को आसान बनाता है और कानून की जन पक्षधरता व वैधानिकता को स्थापित करता है।

भारत संवैधानिक रूप से एक पंथनिरपेक्ष देश है, लेकिन यह आश्चर्य ही है कि यहां कुछ कानून धर्म और समुदाय के आधार पर बंटे हुए हैं। मुस्लिम पर्सनल लॉ और हिंदू कोड बिल इसका ही उदाहरण हैं। कानून के स्तर पर इस विभाजन को खत्म करना समय की जरूरत है। इसका एकमात्र समाधान है समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी)। यूसीसी एक देश, एक कानून की अवधारणा का ही मूर्तरूप है। विगत शुक्रवार को तलाक के एक मामले में सुनवाई करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट ने यूसीसी को वक्त की जरूरत बताते हुए इस विषय पर चल रही चर्चा को नई ताकत दी है। कुछ साल पहले तत्काल तीन तलाक के मामले में कानून बनने के बाद से यूसीसी को लेकर उम्मीद बढ़ी है। देश को असल मायने में पंथनिरपेक्ष यानी सेक्युलर बनाने की दिशा में यूसीसी अहम कड़ी है। आश्चर्य की बात है कि खुद को सेक्युलर कहने वाले राजनीतिक दल यूसीसी का पुरजोर विरोध करते हैं और हमेशा से इसकी पैरवी करती रही भाजपा को सांप्रदायिक माना जाता है। असल में यह केवल वोट की राजनीति है, जहां कुछ दल मुस्लिम वर्ग को वोट बैंक की तरह इस्तेमाल करते हैं और उस समुदाय में किसी भी सुधार में उनकी कोई रुचि नहीं है। तत्काल तीन तलाक के मामले में भी ऐसा ही विरोध देखने को मिला था। यूसीसी का विरोध करने वाला कोई पक्ष यह नहीं बताता है कि आखिर देश के हर नागरिक के लिए समान कानून होने से किसी वर्ग विशेष का नुकसान कैसे हो सकता है। सवाल यह भी है कि यहां इस मसले पर बखेड़ा खड़ा करने वाले यह भी नहीं बताते कि अमेरिका या अन्य देशों में जाकर वहां के कानून का पालन करने से जब किसी पंथनिरपेक्षता पर संकट नहीं आता है, तो भारत में सबके लिए समान कानून होना सांप्रदायिक मसला कैसे है? समान नागरिक संहिता की व्यापकता, जरूरत और इस दिशा में हुए प्रयासों की पड़ताल आज बड़ा मुद्दा है।



स्त्री अधिकारों को मिले कानूनी संरक्षण



जकिया सोमन
संस्थापक, भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन

शरई कानून में स्त्री को हलाला, बहुविवाह, संतान की सरपरस्ती जैसे मामलों में संरक्षण नहीं प्राप्त है। देश की हर स्त्री को कानूनी संरक्षण का पूर्ण अधिकार है, फिर वह हिंदू स्त्री हो या मुस्लिम। समान नागरिक संहिता से इसकी राह निकल सकती है।

समान नागरिक संहिता हमेशा से राजनीति एवं विवादों में लिपटा विषय रहा है। यह भले ही भाजपा के घोषणा पत्र का हिस्सा हो, लेकिन इसका मूल विचार पंडित जवाहर लाल नेहरू और बाबासाहेब आंबेडकर ने रखा था। उनकी असल चिंता स्त्री समानता और स्त्री अधिकारों के बारे में थी। उन्हें फिक्र थी कि हमारे समाज में धर्म की आड़ में पुरुष प्रधानता के चलते देश की आधी आबादी को समान न्याय मिलना मुश्किल होगा। आजादी के सात दशक बाद आज यह मुद्दा धर्म की राजनीति और पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के बीच अटका पड़ा है। अब जब देश की शीर्ष अदालत से लेकर राज्यों की तमाम उच्च अदालतें इसे वक्त की जरूरत बता रही हैं, तो इसे लागू करना ही बेहतर कदम होगा।

संविधान के मुताबिक हर भारतीय नागरिक को समान अधिकार हासिल है, लेकिन जब घर एवं परिवार की बात आती है, तो स्त्री गौण हो जाती है और धार्मिक रीति-रिवाज हावी हो जाते हैं। शादी, तलाक, मिल्कियत, बच्चों की सरपरस्ती जैसे मामलों में हमेशा स्त्री को अन्याय झेलना पड़ता है। इन मामलों में तथाकथित धर्म आधारित रीतियों का जोर रहता है, जहां पुरुष को सर्वोपरि और स्त्री दोयम दर्जे की है। ऐसा हर धर्म और मजहब में दिखता है। इस मामले में हिंदू कोड बिल से हिंदू स्त्रियों को पर्याप्त अधिकार मिले। समय-समय पर इसमें और भी सुधार हुआ।

वहीं मुस्लिम समाज आज भी 1937 के शरीयत एप्लीकेशन एक्ट से संचालित होता है। देश में मुस्लिम पारिवारिक कानून में व्यापक सुधार की जरूरत है। पिछले कुछ वर्षों में मुस्लिम औरतों ने जुबानी तीन तलाक के खिलाफ व्यापक मुहिम छेड़ी, जिसके चलते सुप्रीम कोर्ट ने इसे अवैध करार दिया। इस दौरान संघर्षरत महिलाओं ने निकाहनामा, मेहर समेत अन्य स्त्री अधिकारों को भी उजागर किया, जिन्हें मजहब के ठेकेदार सामने नहीं आने देते। शाहबानो मामले से लेकर आज तक वे मुस्लिम कानून में हर सुधार का विरोध करते रहे हैं। आज भी हलाला, बहुविवाह, शादी की उम्र, संतान की सरपरस्ती, तलाक का सही तरीका जैसे मसले मौजूद हैं। शरई कानून में स्त्री को हलाला, बहुविवाह, संतान की सरपरस्ती जैसे मामलों में संरक्षण नहीं प्राप्त है। देश की हर स्त्री को कानूनी संरक्षण का पूर्ण अधिकार है, फिर वह हिंदू स्त्री हो या मुस्लिम। समान नागरिक संहिता से इसकी राह निकल सकती है।

हालांकि समान नागरिक संहिता को लेकर राजनीति सही नहीं है। इसे स्त्री न्याय की तरह समझना चाहिए, चुनावी गणित की तरह नहीं। मुस्लिम समाज के सामने गरीबी, शैक्षिक और सामाजिक पिछड़ेपन जैसी कई समस्याएं हैं, जिन्हें दूर किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास जीतने की बात कही थी, जिस पर अमल होना चाहिए। किसी भी कानून के गठन में सूझ-बूझ, विचार-विमर्श एवं सभी की राय शामिल करना जरूरी है। व्यापक सामाजिक स्वीकृति के बिना कानून निरर्थक हो जाता है। वैसे भी समान नागरिक संहिता सिर्फ मुसलमानों का मामला नहीं है, यह पारसी, हिंदू समेत सभी समाजों से जुड़ा है। स्त्री समानता लोकतंत्र का ध्येय होता है, जिसके बिना प्रगति संभव नहीं। इस पर निष्ठा, ईमानदारी, खुलेपन और सूझ-बूझ से कदम उठाने की जरूरत है।

समानता की दरकार

कानून के समक्ष सब समान और सबके लिए समान कानून जीवंत लोकतंत्र की आधारशिला हैं। कई बार कोई समान कानून नहीं होने का कुछ लोग अनुचित लाभ भी लेना चाहते हैं। हाल में दिल्ली हाई कोर्ट में आया तलाक का एक मामला कुछ ऐसा ही था। हिंदू रीति-रिवाज से शादी होने के बावजूद जब तलाक की बात आई, तो महिला ने यह दलील दी कि राजस्थान के जनजातीय मीणा समुदाय से होने के कारण उस पर हिंदू विवाह अधिनियम के प्रविधान लागू नहीं होते। अदालत ने महिला के तर्क को तो खारिज किया ही, देश में समान नागरिक संहिता की जरूरत को भी रेखांकित किया।

यूसीसी की अवधारणा

समान नागरिक संहिता मूलत: धार्मिक मान्यताओं से जुड़े अलग-अलग कानूनों को समाप्त करने और इसकी जगह एक समान कानून लागू करने की अवधारणा पर केंद्रित है। यह संहिता शादी, तलाक, संपत्ति, उत्तराधिकार, बच्चा गोद लेने और गुजारा भत्ता जैसे मामलों में लागू होगी।

संविधान में भी जताई गई जरूरत

तत्कालीन परिस्थितियों में समान नागरिक संहिता को लागू भले न किया गया हो, लेकिन संविधान में इसकी जरूरत जरूर जताई गई है। संविधान सभा में इस पर चर्चा भी हुई। 1951 से 1954 के बीच संसद में इस पर तीखी बहस हुई थी। मसले पर एक राय नहीं बन पाने के बाद इसे संविधान के नीति निदेशक तत्व के अनुच्छेद 44 में शामिल कर दिया गया।

गोवा ने प्रस्तुत किया उदाहरण

गोवा एकमात्र राज्य है, जहां गोवा फैमिली लॉ के नाम से समान नागरिक संहिता लागू है।

मौजूदा स्थिति : फिलहाल देश में विभिन्न धर्मों व मान्यताओं के लोग अपने रीति-रिवाजों के आधार पर शादी, संपत्ति, तलाक और बच्चा गोद लेने संबंधी फैसले करते हैं। मामला दो अलग-अलग समुदाय के लोगों से जुड़ा हो, तो अक्सर विवाद की स्थिति बन जाती है। ऐसे विवादों के सर्वमान्य निपटारे के लिए कोई कानून नहीं है।



कानून एक फायदे अनेक

कानूनों का सरलीकरण : यूसीसी से विवाह, संपत्ति और उत्तराधिकार जैसे मुद्दों पर कानूनों को सरल बनाने में मदद मिलेगी। किसी भी धर्म को मानने वाले नागरिक पर एक जैसा ही कानून लागू होगा, जिससे न्यायपालिका पर अनावश्यक दबाव कम होगा।

लैंगिक न्याय : इसका एक बड़ा लाभ स्त्री-पुरुष समानता के मोर्चे पर मिलेगा। यूसीसी से पर्सनल लॉ जैसी व्यवस्थाएं समाप्त होंगी, जिससे इनमें मौजूद लैंगिक पक्षपात को खत्म किया जा सकेगा।

पंथनिरपेक्षता को बल : देश के संविधान की प्रस्तावना में 'पंथनिरपेक्ष' शब्द जुड़ा है। एक पंथनिरपेक्ष व्यवस्था में धार्मिक मान्यताओं के आधार पर अलग-अलग नियम कतई स्वीकार नहीं किए जा सकते हैं।

चर्चित मामले

मुहम्मद अहमद खान बनाम शाहबानो बेगम : इस मामले में 1985 में सुप्रीम कोर्ट ने संसद को समान नागरिक संहिता बनाने का आदेश दिया।



शाहबानो को उसके पति ने तीन बार तलाक बोलकर तलाक दे दिया था। शाहबानो ने पति से हक मेहर के इतर गुजारा भत्ते की मांग की और मामला अदालत पहुंचा। अदालत ने आदेश दिया कि धारा 125 के तहत मुस्लिम महिला को भी गुजारा भत्ते का अधिकार है।

सरला मुद्गल केस

हिंदू पति ने पत्नी को तलाक दिए बिना ही इस्लाम कुबूल किया और दूसरी शादी कर ली, इससे दूसरी शादी की कानूनी मान्यता पर सवाल उठे। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हिंदू मैरिज एक्ट, 1955 के तहत हुई शादी रद तभी मानी जाएगी, जब कानून के तहत ही उसे खत्म किया जाए। ऐसा किए बिना धर्म परिवर्तन कर हुई शादी भारतीय दंड संहिता की धारा 494 (5) के तहत अपराध मानी जाएगी। यह मामला 1995 का है।

हंगामा है क्यों बरपा?

संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 में अल्पसंख्यकों को अपनी संस्कृति, धार्मिक रीति-रिवाज के संरक्षण का अधिकार सुनिश्चित किया गया है। वे अपने धर्म के हिसाब से शिक्षण संस्थानों का संचालन करते हैं। समान नागरिक संहिता को इन



अधिकारों के लिए खतरे के तौर पर देखा जाता है। यूसीसी के पक्षकारों का कहना है कि रीति-रिवाज के नाम पर किसी पर अत्याचार या किसी के अधिकारों के हनन की मंजूरी नहीं दी जा सकती है। मुस्लिम महिलाओं के मामले में ऐसे कई किस्से सामने आते हैं। तत्काल तीन तलाक भी ऐसी ही कुरीति थी, जिस पर सरकार ने अंतत: कानून बनाया। बहु विवाह भी ऐसी ही प्रथा है, जो मुस्लिम महिलाओं पर अत्याचार को बढ़ावा देती है।

कई देशों में है यूसीसी

अमेरिका, आयरलैंड, मलेशिया, तुर्की, इंडोनेशिया, सूडान जैसे कई देशों में यूसीसी लागू है।

पुराना इतिहास



अंग्रेजों की व्यवस्था

1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स ने उत्तराधिकार, शादी-विवाह और अन्य धार्मिक मामलों में दिए आदेश में कहा कि मुस्लिमों से संबंधित कुरान के कानून और हिंदुओं के लिए शास्त्र से जुड़े नियम-कानूनों का पालन किया जाए।

निष्प्रभावी हुआ फतवा

1817 में ब्रिटिश जजों ने फतवों की व्यवस्था को निष्प्रभावी कर दिया। एक प्रस्ताव पारित कर उन फतवों की बाध्यकारी प्रकृति को खत्म किया गया।

मुस्लिम पर्सनल लॉ

1937 के शरई कानून के तहत मुस्लिमों के लिए कुछ पर्सनल कानून बनाए गए लेकिन अंग्रेजों ने मुस्लिमों पर इन कानूनों को थोपा नहीं। इसके सेक्शन तीन के अनुसार यह उन्हीं मुस्लिम पर लागू होता था जिन्होंने लिखित में इसके दायरे में आने की बात मानी थी।

स्पेशल मैरिज एक्ट, 1954

अलग-अलग धर्मों के लोग इसके तहत अपनी शादी को पंजीकृत करवा सकते हैं। इसमें यह भी प्रावधान है कि किसी अन्य रूप में की गई शादी को भी स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत पंजीकृत किया जा सकता है (अगर यह इस कानून की जरूरतों को पूरा कर रहा हो)।

आजाद भारत में पहल

आजादी के बाद संविधान सभा के अध्यक्ष और देश के पहले कानून मंत्री डॉ बीआर आंबेडकर ने समान नागरिक संहिता लागू करने की कोशिश की तो इस प्रयास को संविधान सभा में भारी विरोध का सामना करना पड़ा। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने उस समय हिंदू कोड बिल तक ही इस सुधारवादी कदम को सीमित रखा। यह बिल हिंदुओं, सिखों, जैनियों और बौद्धों पर लागू होता है। इससे द्विपत्नी और बहुपत्नी प्रथा को समाप्त किया गया। महिलाओं को तलाक और उत्तराधिकार का अधिकार मिला। शादी के लिए जाति को अप्रासंगिक बनाया गया।

मौजूद नियम-कानून

शादी-तलाक को लेकर विभिन्न धर्मों के लोगों के लिए अब तक कई कानून बनाए जा चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं-

- द कनवर्ट्स मैरिज डिसोल्युशन एक्ट, 1866
- द इंडियन डिवोर्स एक्ट, 1869
- द इंडियन क्रिश्चियन मैरिज एक्ट, 1872
- द काजी एक्ट, 1880
- द आनंद मैरिज एक्ट, 1909
- द इंडियन सक्सेशन एक्ट, 1925
- द चाइल्ड मैरिज रेस्ट्रेंट एक्ट, 1929
- द पारसी मैरिज एंड डिवोर्स एक्ट, 1936
- द डिसोल्युशन ऑफ मुस्लिम मैरिज एक्ट, 1939
- द स्पेशल मैरिज एक्ट, 1954
- द हिंदू मैरिज एक्ट, 1955
- द फॉरेन मैरिज एक्ट, 1969
- द मुस्लिम वीमेन (प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन डिवोर्स) एक्ट, 1986

कंक्रीट कानून के रूप में सामने आए यूसीसी



शाइस्ता अंबर
अध्यक्ष, ऑल इंडिया मुस्लिम महिला पर्सनल लॉ बोर्ड

समान नागरिक संहिता पर पिछले कई दशक से चर्चा चल रही है। इस संबंध में सबको साथ लेकर ही एक मजबूत कानून बनाया जा सकता है। सभी पक्षों को इस पर एक मत होना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि समान नागरिक संहिता की देश को जरूरत है। हालांकि यह राजनीतिक मुद्दा बना हुआ है। संविधान निर्माताओं ने सभी की आपसी सहमति से समान नागरिक कानून बनाने की बात कही थी। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में भी इस पर चर्चा चली थी, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला था। अब फिर यह मुद्दा चर्चा में है। यूसीसी से सभी समुदायों के लिए विवाह, तलाक, विरासत, गोद लेने संबंधी कानूनों में एकरूपता आएगी।

हिंदू समाज ने समय-समय पर कई सुधार किए हैं और अन्य समाज को भी ऐसा करना चाहिए। मुस्लिम समुदाय में एक समय बिना दहेज शादी होती थी, लेकिन अब वहां भी यह कुरीति आ गई है। बेटी को माता-पिता की संपत्ति में अधिकार नहीं मिलना भी ऐसा ही मसला है। ऐसे बहुत से बिंदु हैं, जिन पर महिलाओं को उचित अधिकार मिलना चाहिए।

विधि आयोग के अनुसार, समाज में असमानता की स्थिति उत्पन्न करने वाली समस्त रूढ़ियों की समीक्षा की जानी चाहिए। इसलिए सभी निजी कानूनी प्रक्रियाओं को संहिताबद्ध करने की जरूरत है, जिससे उनसे संबंधित पूर्वाग्रह और रूढ़िवादी तथ्य सामने आ सकें। वैश्विक स्तर पर प्रचलित मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से सर्वमान्य व्यक्तिगत कानूनों को वरीयता मिलनी चाहिए। हम चाहते हैं कि कोई कंक्रीट कानून बने, जिससे हर वर्ग के लोगों को समानता मिले। लैंगिक भेदभाव पूरी तरह खत्म हो। महिलाओं के लिए समान अधिकार बहुत जरूरी हैं। जिस तरह से मजहबी मान्यताओं के नाम पर उनके अधिकारों का हनन होता है, वह बहुत चिंताजनक है। महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण के बिना कोई भी देश आगे बढ़ने के बारे में नहीं सोच सकता है।

इसी तरह लिंग भेद और जाति एवं संप्रदाय के आधार पर भेद किए बिना सबको समान अधिकार मिलना चाहिए। कानून सबके लिए एक जैसा हो और कानून के सामने सभी लोग बराबर हों, यही ध्येय होना चाहिए। साथ ही इस दिशा में कोई भी कदम उठाते समय देश की सामाजिक संरचना को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इस दिशा में बढ़ते हुए हमेशा यह लक्ष्य होना चाहिए कि सभी वर्गों की आम सहमति बने।

यह देश विविधता से भरा है। किसी भी एक वर्ग को पीछे छोड़कर किसी भी सर्वमान्य कानून को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। समान नागरिक संहिता ऐसा ही मसला है। हर वर्ग को साथ लेकर चलना जरूरी है। हर मजहब और संप्रदाय के विचारकों एवं बुद्धिजीवियों को इस संबंध में समान राय बनाने का भी प्रयास करना चाहिए। सबको साथ लेकर ही ऐसा कंक्रीट कानून बनाना संभव होगा, जिसकी देश को जरूरत है। दशकों से चर्चा में चल रहे यूसीसी को लेकर किसी भी तरह की कमजोर कड़ी नहीं छोड़ी जा सकती है। हर कड़ी को जोड़कर ही एक मजबूत कानून को अंतिम रूप देना संभव हो सकता है। ऐसा करके ही हम अपने संविधान निर्माताओं की उम्मीदों पर खरा उतर सकते हैं।

जनमत

	हां	नहीं
क्या भारत जैसे देश में समान नागरिक संहिता अब वक्त की जरूरत है?	97%	03%
क्या समाज को प्रभावित करने वाली कुरीतियों को किसी समुदाय का आंतरिक मामला माना जा सकता है?	05%	95%

आपकी आवाज

आज विभिन्न समुदाय और धर्म के लोग आपसी सौहार्द के साथ देश में रह रहे हैं। ऐसे में समान नागरिक संहिता को चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाना चाहिए। — राजीव रंजन राणा

समान नागरिक संहिता को लागू करने से एक राष्ट्र-एक कानून का सपना ना केवल साकार होगा बल्कि देश को मजबूती भी मिलेगी। — रमेश मिश्रा

समान नागरिक संहिता लागू करने से कोर्ट को अपना फैसला देने में भी मदद मिलेगी। — गुलाब सिंह पाडवी

देश की खुशहाली और विकास के लिए समान नागरिक संहिता अति आवश्यक है। — शबनम कुमारी

समय-समय पर शीर्ष न्यायालय समान नागरिक संहिता की वकालत करता रहा है। ऐसे में अब समय आ गया है कि मौजूदा बहुमत की सरकार को इस दिशा में निर्णायक कदम उठाना चाहिए। — मनोज कुमार गोयल

समान नागरिक संहिता से किसी की स्वतंत्रता का हनन होने की बात पूरी तरह गलत है। — अनुज यादव

किसी समाज में व्याप्त कुरीति उसे पीछे धकेलती है। अन्य समुदायों से वह इस क्रम में पीछे छूटता जाता है जिसका खामियाजा आने वाली पीढ़ियों को उठाना पड़ता है। इसलिए जरूरी है कि किसी समाज की कुरीति को तुरंत दूर किया जाए। — पवन तिवारी

दैनिक जागरण

कल्पना ज्ञान से कम महत्वपूर्ण नहीं

अफगानिस्तान के हालात

भारत ने कंधार में अपने वाणिज्यिक दूतावास को जिस तरह अस्थायी तौर पर बंद करने और वहां के कर्मचारियों को निकालने का फैसला किया, उससे यही स्पष्ट हो रहा है कि तालिबान लड़ाके अफगानिस्तान में अपनी बढ़त कायम करते जा रहे हैं। हालांकि अफगान सेना तालिबान लड़ाकों को आगे बढ़ने से रोकने के हरसंभव जतन कर रही है, लेकिन अभी तक की स्थितियां यही बयान करती हैं कि वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पा रही है। यह किसी से छिपा नहीं कि तालिबान एक के बाद एक शहर अपने कब्जे में लेते चले जा रहे हैं। यदि वे इसी तरह आगे बढ़ते रहे तो आने वाले दिनों में अफगानिस्तान के अन्य बड़े शहरों और राजधानी काबुल के लिए भी खतरा बन सकते हैं। यदि ऐसी स्थिति बनती है तो इसके लिए अमेरिका जिम्मेदार होगा, जिसने सब कुछ जानते-समझते हुए अपनी सेनाओं को वहां से वापस बुलाने का फैसला लिया। अमेरिकी प्रशासन को यह बताना चाहिए कि क्या उसके और तालिबान के बीच यही समझौता हुआ था कि अमेरिकी सेनाएं शांति एवं स्थिरता सुनिश्चित किए बिना वहां से निकल आएंगी? अभी तो ऐसा लगता है कि उसने जानबूझकर तालिबान लड़ाकों को अफगानिस्तान पर कब्जा करने का मौका दे दिया।

अमेरिका ने अपने स्वार्थों को पूरा करने के फेर में अफगानिस्तान में जिस तरह तालिबान के समक्ष आत्मसमर्पण किया, उससे उसकी साख पर सवाल उठने स्वाभाविक हैं। यदि अमेरिका को अफगानिस्तान को तालिबान के ही हवाले करना था तो फिर उसकी सेनाएं वहां दो दशक तक क्यों डटी रहीं और क्यों उसने वहां अरबों डॉलर खर्च किए? अमेरिका ने अफगानिस्तान को उसके हाल पर छोड़कर खुद को केवल अविश्वसनीय ही नहीं बनाया, बल्कि इस पूरे क्षेत्र की शांति को भी खतरे में डालने का काम किया है। उसने अफगानिस्तान को तालिबान और उन्हें पालने-पोसने वाले पाकिस्तान के भी हवाले करने का जो काम किया, उसके बाद अंतरराष्ट्रीय मामलों और खासकर आतंकवाद से लड़ने के उसके दावों पर भरोसा करना कठिन होगा। अमेरिका अफगानिस्तान में इसीलिए नाकाम हुआ, क्योंकि उसने तालिबान को समर्थन और संरक्षण देने के लिए पाकिस्तान को कभी जवाबदेह नहीं बनाया। यदि पाकिस्तान अफगानिस्तान में तालिबान के बढ़ते वर्चस्व पर इतरा रहा है तो अमेरिका की नाकाम नीति के कारण। भारत की चिंता का विषय केवल यह नहीं कि अफगानिस्तान में उसके हितों के लिए खतरा बढ़ रहा है, बल्कि यह भी है कि पाकिस्तान तालिबान का इस्तेमाल उसके खिलाफ कर सकता है। इसकी भरी-पूरी आशंका है कि इसके लिए चीन पाकिस्तान को उकसाने का काम कर सकता है। भारत इसकी अनदेखी नहीं कर सकता कि तालिबान सरगना किस तरह चीन को अपना मित्र बताने में लगे हुए हैं।

पर्यटक स्थलों पर भीड़

वैश्विक महामारी के कारण लगी बंदिशों में छूट मिलने पर मैदानी क्षेत्र के लोगों ने पहाड़ों का रुख किया है। हिमाचल प्रदेश में हर रोज हजारों लोग पहुंच रहे हैं। वीकेंड पर तो पर्यटक स्थल पूरी तरह गुलजार हैं। होटल पैक हैं। पर्यटकों की आमद से मंदी की मार झेल रहे पर्यटन उद्योग को संबल मिला है। कोरोना के कारण पर्यटन उद्योग पूरी तरह ठप हो गया था। होटल कारोबारियों के अलावा इससे जुड़े कई लोगों की रोजी रोटी पर संकट आ गया था। अब पर्यटन उद्योग के रफ्तार पकड़ने से होटल कारोबारियों को ही नहीं, परोक्ष रूप से कई लोगों को राहत मिली है। इस सबके बीच देखा गया है कि लोग कोविड नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं। यह गंभीर चिंतन का विषय है। पर्यटन स्थलों पर उमड़ी भीड़ के मुंह से मास्क गायब हैं और शारीरिक दूरी के नियम का पालन भी नहीं किया जा रहा। केंद्र सरकार ने भी पर्यटक स्थलों और बाजार में भीड़ उमड़ने और कोविड नियमों का पालन न करने को गंभीरता से लिया है। चेतावनी भी जारी की गई है कि कोविड प्रोटोकाल का पालन नहीं किया है तो छूट को वापस लिया जाएगा। हिमाचल ने भी इसे गंभीरता से लिया है। मुख्यमंत्री ने संबंधित जिला प्रशासन को सख्त हिदायत दी है कि कोविड नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए। पुलिस प्रशासन को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके बाद ऐसे स्थलों पर पुलिस भी बढ़ा दी गई है। समझना होगा कि कोरोना वायरस का खतरा अभी टला नहीं है। शनिवार एवं रविवार को पड़ोसी राज्यों के हजारों लोग हिमाचल आते हैं। पर्यटकों का आना सुखद है, लेकिन महामारी से बचने के लिए हिदायतों का गंभीरता से पालन किया जाए। ऐसा कतई नहीं होना चाहिए कि पुलिस कार्रवाई से बचने के लिए ही मास्क लगाया जाए। ऐसा कर बेशक व्यक्ति चालान इत्यादि से बच जाए, लेकिन महामारी से बचना मुश्किल है। जब पांच साल का बच्चा लोगों को मास्क पहनने के लिए संदेश दे तो समझना चाहिए कि खतरा अभी टला नहीं है, सतर्कता में ही बचाव है। इसलिए नियमों का पालन हर किसी के लिए जरूरी है।

नई करवट लेती दलित राजनीति



डॉ. एके वर्मा

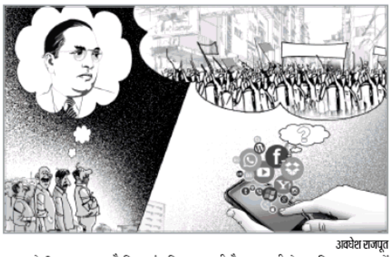
दलित समाज ने अतीत में जैसे कांग्रेस को छोड़ दिया, उसी की पुनरावृत्ति वह आज अस्मिता की राजनीति करने वाले दलों के साथ कर रहा है

बीते दिनों बिहार और उत्तर प्रदेश में घटित घटनाएं दलित राजनीतिक विमर्श में नए रुझान का संकेत करती हैं। इसमें एक प्रश्न यही उभरा है कि क्या अब दलितों को अस्मिता से अधिक आकांक्षाएं आकर्षित कर रही हैं? बिहार में दलित राजनीति की अगुआ मानी जाने वाली लोक जनशक्ति पार्टी में आंतरिक उठापटक चल रही है। वहीं उत्तर प्रदेश में रामअचल राजभर और लालजी वर्मा जैसे कई कई दलित नेताओं को मायावती ने पार्टी से निकाल दिया। यह महज एक इत्तेफाक है या इसके पीछे कोई 'अंडर करंट' है? विगत 74 वर्षों में बाबू जगजीवनराम को छोड़ कोई दलित नेता राष्ट्रीय स्तर पर पनप नहीं पाया। उत्तर प्रदेश में मायावती और बिहार में रामविलास पासवान को आंशिक सफलता ही मिली। वैसे मायावती ने 2007 में प्रभावी 'सोशल इंजीनियरिंग' द्वारा समावेशी राजनीति की ओर कदम बढ़ाया और सभी वर्गों के वोट से प्रदेश में सरकार बनाई। हालांकि अपने प्रयोग को वह बहुत आगे नहीं ले जा सकीं और राष्ट्रीय राजनीति की राह में भटक गईं। वहीं पासवान स्वयं निर्वाचित होते रहे, पर बिहार में दलितों को लामबंद नहीं कर सके और पासी-समाज तक ही सीमित होकर रह गए। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कोई दलित नेता राष्ट्रीय राजनीति तो दूर अपने प्रदेश में ही पूरी तरह स्थापित क्यों नहीं हो पाता? इसके तीन कारण तो बिल्कुल स्पष्ट हैं।

पहला यही कि दलित समाज बेहद विभक्त है। उसकी आंतरिक सामाजिक संरचना में उतना ही भेदभाव है जितना बाह्य समाज में। जाटव और पासी, पासी और वाल्मीकि, वाल्मीकि और डोम और ऐसे ही अनेक दलित समुदाय एक मंच पर नहीं आते। अधिकांश विमर्श दलित बनाम गैर-दलित पर ही केंद्रित रहता है। विश्लेषक 'दलित राजनीति' की बात करते हैं, लेकिन उनके विश्लेषण गलत हो जाते हैं, क्योंकि वे दलितों को समरूप समाज मानकर चलते हैं। कोई भी दलित या गैर-दलित नेता दलितों की आंतरिक सामाजिक संरचना की पदसोपानीयता और विसंगतियों को नहीं उठाता। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक 'दलित राजनीति' केवल सहयोगी राजनीति के रुप में ही क्रियाशील हो पाएगी, 'स्वायत्त-राजनीति' के रूप में नहीं।

दूसरा कारण यही है कि दलित समाज की आंतरिक पदसोपानीयता उसे समरूप समाज के रूप में लामबंद नहीं होने देती। यदि उप्र में जाटव केंद्रित दलित राजनीति है तो बिहार में पासी या मुसहर केंद्रित। पंजाब में सर्वाधिक 32 फीसद दलित हैं, लेकिन कोई दलित राजनीति की बात नहीं करता? कांशीराम तो होशियारपुर, पंजाब से थे। फिर भी वह वहां दलितों में पैठ नहीं बना सके? कारण स्पष्ट है कि वहां दलित समाज वाल्मिकी, रविदासी, कबीरपंथी, मजहबी सिख आदि में बंटे हुए हैं, जिनमें रोटी-बेटी का संबंध भी नहीं होता। क्या ऐसे विभक्त समाज में दलितों को लामबंद कर 'अस्मिता' आधारित राजनीति हो सकती है? क्या इसीलिए मायावती को पंजाब में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए अकाली दल के साथ गठबंधन करना पड़ा? संभवतः इसी कारण भाजपा ने तुरुप का पत्ता चला है। भाजपा ने राज्य में दलित मुख्यमंत्री बनाने की घोषणा की है। यदि दलितों की राजनीतिक लामबंदी और सशक्तीकरण से उनके आंतरिक सामाजिक भेदभाव को खत्म किया जा सके तो यह घाटे का सौदा नहीं होगा।

तीसरा पहलू यही है कि दलित राजनीति स्वभाव से ही अस्मिता अर्थात 'पहचान की राजनीति' को स्वीकार करती है। किसी दल पर जब यह ठप्पा लग जाता है कि वह दलित अस्मिता को ही तरजीह देता है तो समाज के अन्य वर्ग उससे कटने लगते हैं। इससे समावेशी राजनीति की संभावना खत्म हो जाती है। मायावती ने यह मिथक 2007 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में तोड़ा जब उन्होंने सोशल इंजीनियरिंग द्वारा 'सैंडविच' गठबंधन बनाया। इसमें उन्हें सैंडविच के दो छोर की तरह न केवल ब्राह्मणों और दलितों का समर्थन मिला, वरन अंदरूनी फिलिंग के रूप में समाज के अन्य वर्गों का भी समर्थन मिला। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में व्याख्यान के दौरान मायावती की सोशल इंजीनियरिंग के प्रति मुझे श्रोताओं में काफी उत्सुकता, आशा और रोमांच दिखा। उनमें मायावती को भावी राष्ट्रीय नेता के रूप में देखने की इच्छा थी, लेकिन मायावती अपनी सोशल इंजीनियरिंग को आगे न ले जा सकीं। वह अस्मिता की राजनीति और समावेशी राजनीति में समन्वय न कर सकीं। दलितों को लगा कि उनकी 'अपनी' सरकार बनने के बावजूद वे सत्ता से बाहर हो गए, क्योंकि मायावती ने ब्राह्मणों, मुस्लिमों आदि को सत्ता में ज्यादा भागीदारी दे दी थी। वहीं से दलितों का 'अस्मिता' से मोहभंग हो गया और उन्हें अपनी आकांक्षाएं अधिक महत्वपूर्ण लगने लगीं। पिछले एक-डेढ़ दशक में यह प्रवृत्ति बढ़ी है और आज दलित समाज अस्मिता से ऊब चुका है। उसे अब अपनी आकांक्षाएं पूरी करनी हैं।



अवधेश राजपूत

इससे भारतीय राजनीति में नई संभावनाएं बनी हैं। दलित समाज ने अतीत में जैसे कांग्रेस को छोड़ा, उसी की पुनरावृत्ति वह आज दलित पार्टियों के साथ कर रहा है। कांग्रेस में दलितों की न कोई पहचान थी, न सत्ता में भागीदारी, न ही नेतृत्व में कोई प्रतिनिधित्व। दलित पार्टियों में उन्हें पहचान तो मिली, पर ये पार्टियां सत्ता से कोसों दूर हैं। यानी वे दलित आकांक्षाओं की पूर्ति करने में असमर्थ हैं। इसी कारण दलित समाज और राजनीति में कशमकश है जिससे आज का दलित सत्ता की कुंजी रखने वाले दल भाजपा की ओर आकृष्ट हो रहा है। देश में एक 'भाजपा सिस्टम' उभर रहा है जो सत्ता पर वैसा ही एकाधिकार चाहता है जैसा कभी कांग्रेस का था।

अभी तक दलों की सोच थी कि दलितों का सामाजिक सशक्तीकरण होगा तो उनका राजनीतिक सशक्तीकरण स्वतः हो जाएगा। भाजपा ने इस सोच को उलट दिया है। वह दलितों के राजनीतिक सशक्तीकरण से ही उनका सामाजिक सशक्तीकरण करना चाहती है। इससे न केवल उनका राजनीतिक सामाजिक सशक्तीकरण होगा, वरन भाजपा मजबूत होगी और हिंदू समाज के विभाजन की प्रवृत्ति भी घटेगी। इस प्रयोग से आज उप्र के लगभग सभी दलित विधायक और दलित सांसद भाजपा के हैं, जो प्रमाणित करता है कि दलित राजनीति करवट ले चुकी है और अस्मिता की दीवार तोड़ दलित आकांक्षाएं हिलोरें मार रही हैं।

(लेखक सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक और राजनीतिक विश्लेषक हैं)

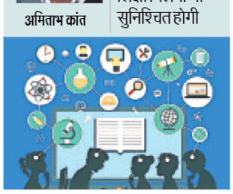
response@jagran.com

शिक्षा को चाहिए तकनीक का सहारा



अमिताभ कांत

एडु-टेक नीति से शिक्षा को सही गति मिलने के साथ ही सबको गुणवत्तापरक शिक्षा मिलनी भी सुनिश्चित होगी



शिक्षा की राह में बाधाएं दूर करेगी तकनीक। फाइल

देश में स्कूली शिक्षा इन दिनों कठिन चुनौतियों का सामना कर रही है। हालांकि यह क्षेत्र कोविड-19 महामारी से पहले भी पढ़ाई के विकट संकट से जूझ रहा था। तब दस साल की उम्र वाले दो में से एक बच्चे में पढ़ने की बुनियादी दक्षता की कमी थी। महामारी ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है, क्योंकि 15.5 लाख स्कूल भौतिक रूप से बंद हो गए हैं। इससे 24.8 करोड़ से अधिक छात्र एक वर्ष से अधिक समय तक कक्षीय पठन-पाठन से वंचित हैं। अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में पाया गया है कि स्कूलों के बंद हो जाने के चलते प्राथमिक विद्यालयों के 82 से 92 प्रतिशत छात्रों ने कम से कम एक गणितीय और भाषा कौशल खो दिया है। यह स्थिति शिक्षा में तकनीक को एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दे रही है। इससे हर बच्चे की शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने में मदद मिलेगी। यद्यपि केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों, लाइव व्याख्यानों के साथ-साथ ऑनलाइन एप्लीकेशंस के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा और अध्ययन की निरंतरता बनाए रखने के लिए कई प्रयोग किए हैं, परंतु इस दिशा में अभी भी कुछ चुनौतियां बनी हुई हैं। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर)-2020 से पता चला है कि घरेलू स्तर पर लगभग 60 प्रतिशत छात्रों के पास ही टेलीविजन और स्मार्टफोन की सुविधा उपलब्ध है।

ऐसे में एक एडु-टेक (तकनीक संचालित शिक्षा) नीति की अनिवार्यता तेजी से स्पष्ट होती जा रही है, ताकि प्रत्येक बच्चे को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जा सके। वैसे हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 शिक्षा के हर स्तर पर तकनीक को एकीकृत करने की बात करती है। इसके लिए एक स्वायत्त निकाय के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी मंच (एनईटीएफ) की स्थापना करने की परिकल्पना भी की गई है। वास्तव में भारत तकनीक आधारित संरचना, बिजली और सस्ती इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुंच के साथ इस दिशा में छलांग लगाने के लिए तैयार है, जिसे डिजिटल इंडिया जैसे प्रमुख कार्यक्रमों और शिक्षा मंत्रालय की पहल से प्रोत्साहन मिल रहा है। इसके तहत स्कूली शिक्षा के लिए डिजिटल अवसंरचना (दीक्षा) नामक ओपन सोर्स लर्निंग प्लेटफॉर्म तैयार किया गया है, जो दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा प्रबंधन सूचना प्रणालियों (ई-एमआइएस) में से एक है। इसमें प्रत्यक्ष रूप से व्यापक संभावनाएं नजर आ रही हैं।

एडु-टेक नीति के चार प्रमुख उद्देश्य जैसे-वंचित समूहों की शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना, शिक्षण, अध्ययन और मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को सक्षम बनाना, शिक्षक प्रशिक्षण को सुगम बनाना, शासन की प्रणालियों-नियोजन, प्रबंधन और निगरानी की प्रक्रियाओं में सुधार करना होना चाहिए। इस पर आगे बढ़ने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होगा। जैसे-तकनीक एक उपकरण है, रामबाण नहीं। इसका उपयोग अध्ययन की सेवा में होना चाहिए। इसके लिए एक योजना बनाई जानी चाहिए। इसके बगैर डिजिटल संरचना प्रदान करने में जोखिम है। तकनीक स्कूलों को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती है या शिक्षकों की जगह नहीं ले सकती है। यह शिक्षक बनाम तकनीक नहीं, बल्कि शिक्षक और तकनीक है। तकनीकी समाधान तभी प्रभावशाली होते हैं जब इन्हें शिक्षकों द्वारा अपनाया जाता है और प्रभावी ढंग से इनका लाभ उठाया जाता है।

वैसे भी आज भारत में एडु-टेक का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। इस क्षेत्र में अभी 4,500 से अधिक स्टार्ट-अप काम कर रहे हैं। इनका कुल बाजार मूल्य करीब 70 करोड़ डॉलर है। अगले 10 वर्षों में इसका आकार 30 अरब डॉलर पर पहुंच जाने का अनुमान है। जमीनी स्तर अरुणाचल प्रदेश के नामसाई जिले में 'हमारा विद्यालय' और असम का 'करियर मार्गदर्शन' पोर्टल छात्रों की पढ़ाई में सहायक बनकर उभर रहे हैं। गुजरात में 'समर्थ' लाखों शिक्षकों को ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षित कर रहा है। झारखंड का 'डिजीसाथ' अभिभावकों-शिक्षकों-छात्रों के संबंधों में मजबूती ला रहा है। हिमाचल प्रदेश की 'हर घर पाठशाला' बच्चों को डिजिटल शिक्षा प्रदान कर रही है। उत्तराखंड का सामुदायिक रेडियो 'बाइट' प्रारंभिक पठन को बढ़ावा दे रहा है। मध्य प्रदेश का 'डिजीएलईपी' विद्यालयों में शैक्षणिक सामग्री वितरित कर रहा है। केरल की 'अक्षरवृक्षम पहल' बच्चों का कौशल विकास कर रही है।

देश में एडु-टेक को बढ़ावा देने के लिए कई मोर्चों पर एकसाथ कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले देश में एडु-टेक की पहुंच और प्रभाव का आकलन करने के लिए एक खाका तैयार किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत अवसंरचना, शासन, शिक्षकों एवं छात्रों की चुनौतियों की पहचान की जानी चाहिए। लघु से मध्यम अवधि में, इन चुनौतियों को दूर करने के लिए सभी हितधारकों (छात्र, शिक्षक, स्थानीय समुदाय, प्रशासक, क्षेत्र विशेषज्ञ) को शामिल करते हुए नीति निर्माण और योजनाएं बनाई जानी चाहिए। सार्वजनिक-निजी भागीदारी का मॉडल इसमें सहायक हो सकता है। देश में मौजूद डिजिटल खाई को पाटने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। दीर्घ अवधि में, जब सभी योजनाएं पूरे देश में एकसमान रूप से जमीन पर उतर जाएं तो सभी शैक्षणिक सामग्रियों का भंडारण और समय-समय पर उनका परिष्करण करते रहना चाहिए। कुल मिलाकर आज शिक्षा को तकनीक के सहारे की जरूरत है। एडु-टेक नीति देश की शिक्षा तकनीक को पंख लगाने में सक्षम है। इससे सबको समान रूप से गुणवत्तापरक शिक्षा मिलनी सुनिश्चित हो सकेगी। छात्रों में सीखने की प्रक्रिया तेज और अच्छी होगी, शिक्षा की लागत में कमी आएगी और शिक्षकों के समय का बेहतर उपयोग हो सकेगा। इन सबसे अंततः शैक्षिक उत्पादकता बढ़ेगी।

(लेखक नीति आयोग के सीईओ हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

मार्गदर्शन

स्वयं के निश्छल प्रयासों से दूसरों के जीवन को सही दशा देना ही मार्गदर्शन है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीवनयात्रा के हर पड़ाव पर मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ती है। मार्गदर्शन की प्रक्रिया मानव जीवन के शुरुआती वर्षों से ही प्रारंभ हो जाती है। इंसान को सबसे पहला मार्गदर्शन माता-पिता से मिलता है। बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे गुरु का सान्निध्य प्राप्त होता है। गुणवान गुरु के मार्गदर्शन को कौन झुठला पाया है। गुरुर ब्रह्मा, गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरः मंत्र में गुरु को ईश्वर समान माना गया है। एक योग्य मार्गदर्शक प्रार्थी पर अपने विचार थोपता नहीं है, उसके लिए निर्णय नहीं लेता, अपितु उसे निर्णय लेने के योग्य बनाता है।

मार्गदर्शन एक प्रगतिशील निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति को जीवन लक्ष्य की ओर जाने में मदद करती है। बिना मार्गदर्शन के व्यक्ति एक कटी हुई पतंग जैसा लक्ष्यहीन हो जाता है। यह तो निश्चित है कि यदि ज्ञानी पुरुष एक भटके हुए व्यक्ति का हाथ पकड़ उचित मार्ग की ओर ले चले तो वह उसके समग्र उत्थान में योगदान कर सकता है। मार्गदर्शन सही अर्थों में एक सेवा है। ऐसी सेवा जो असीमित है। एक शिक्षक कितने ही छात्रों को शिक्षा देकर एवं प्रोत्साहित कर उनको आगे बढ़ने में मदद करता है। इस प्रक्रिया में मार्गदर्शक भी खाली हाथ नहीं रहता। ऐसा कर वह सच्चे आनंद एवं संतुष्टि का अनुभव कर समाज में आदर का पात्र बनता है। इससे उसकी स्वयं की क्षमता और सामाजिक उपयोगिता भी विकसित होती है।

हालांकि केवल प्राणी ही नहीं, बल्कि गीता, श्रीरामचरितमानस जैसे महान ग्रंथ, महापुरुषों की जीवनियों का पठन-पाठन भी आम लोगों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत बनते आए हैं। प्रकृति भी हमें बहुत कुछ सिखाती है। माता-पिता, शिक्षक, धर्म ग्रंथ और प्रकृति की सीखों की जो लोग अवहेलना करते हैं उन्हें जीवन में बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

छाया श्रीवास्तव

अच्छे विचारों को प्रवाह देने का वक्त

डॉ. महेश परिमल

अंधेरा वहीं होता है, जहां प्रकाश नहीं होता। अर्थात प्रकाश की अनुपस्थिति ही अंधेरे का संकेत है

जीव विज्ञान में एक विशेष प्रजाति के झींगुर का नाम है कैंपिओला शंकराइटिस। यह झींगुर अंधा होता है। इस झींगुर की सबसे पहले जानकारी छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में कुटुंबसर गुफा से मिली थी। ऐसा नहीं है कि इसकी आंखें थीं ही नहीं। वास्तव में गुफा में सघन अंधेरे के कारण इसको कभी आंखों की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। अंधेरा यानी प्रकाश की अनुपस्थिति। अंधेरा वहीं होता है, जहां प्रकाश नहीं होता। प्रकाश की अनुपस्थिति ही अंधेरे का संकेत है। अंधेरे के कारण वहां आंख का कोई काम ही नहीं है, इसलिए उस गुफा में पाए जाने वाले झींगुर अंधे थे। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि शरीर में जिस अंग की आवश्यकता नहीं होती, वह स्वतः ही समाप्त हो जाता है। मानव ने अपने मस्तिष्क का जितना अधिक उपयोग किया, वह उतना ही विकसित होता गया।

जिस तरह से बहते रहने वाला पानी ठहरे हुए पानी से अधिक शुद्ध माना जाता है, उस तरह यदि किसी विचार को बार-बार सामने न लाया जाए तो वह वहीं जम जाता है। विचारों में प्रवाह तभी आता है, जब उसमें नए विचारों का समावेश होता रहे। इसे एक तरह से वर्तमान को विचारों से जोड़ा जाना भी कह सकते हैं। युवा पीढ़ी के लिए यह अपडेट होना हो सकता है। एक पुराने विचार में यदि नए विचार को शामिल कर लिया जाए तो वह विकसित रूप में हमारे सामने आता है।

इस सोच को विस्तार देते हुए कह सकते हैं कि दुख वहां है, जहां सुख की अनुपस्थिति है। ठीक इसी तरह प्रसन्नता की अनुपस्थिति चिंता और तनाव को जन्म देती है। जहां आनंद है, वहां तनाव हो ही नहीं सकता। ठंड की अनुपस्थिति गर्मी को जन्म देती है। पूरी बात उपस्थिति और अनुपस्थिति पर निर्भर करती है। इसलिए जब हम किसी गहन विषय पर विचार-विमर्श करते हैं तो सबसे पहले हमें इसी उपस्थिति-अनुपस्थिति पर विचार करना चाहिए। कई राज्यों में जो फसलों का उत्पादन होता है, वह इसी सिद्धांत पर काम करता है। कहीं अल्प तो कहीं अतिवृष्टि, कहीं कम गर्मी तो कहीं अधिक गर्मी। कहीं गर्मी-ठंडी एक समान। कई फसलें इन्हीं वातावरण को अपना लेती हैं, फिर उसमें पल्लवित होती हैं। इसमें संतुलन बिगड़ने लगता है तो फसलें प्रभावित होती हैं। कुछ इसी तरह से जीवन का क्रम है। जीवन के हर क्षेत्र में हमें इसका आभास होता है। जीवन के बारे में यदि गहराई से विचार करें तो हम पाएंगे कि जीवन में चुनौतियां हमारी परीक्षा लेने आती हैं, ताकि हमारा चयन इससे भी कठिन परीक्षा के लिए हो। यदि सभी चुनौतियों का हम मुकाबला करते जाएं तो हम इसके आदी हो जाएंगे। फिर चुनौतियां हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएंगी। हमारे साहस की अनुपस्थिति ही हमें कामयाब नहीं होने देती। साहस आते ही हम फिर सफल होने लगते हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

एकतरफा विश्लेषण

'नियंत्रण से बाहर जाता बंगाल' शीर्षक से लिखे अपने लेख में सुरेंद्र किशोर ने बंगाल की राजनीति का एकतरफा विश्लेषण किया है। उन्होंने प्रदेश को संपूर्णता में देखने के बजाय, उसके एक हिस्से को देखकर अपनी बात रखी है। राष्ट्रीय मीडिया बंगाल के हाल को कश्मीर बताने पर आमादा है, परंतु हकीकत में ऐसा नहीं है। निःसंदेह कुछ हिंसक घटनाओं के बाद समाज के एक वर्ग का पलायन हुआ है। खुद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की बयानबाजी ने बंगाल की छवि को धूमिल किया है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि बंगाल में बस अराजकता ही है या तृणमूल पार्टी सिर्फ अल्पसंख्यकों की वजह से चुनाव जीती है। इसमें दो राय नहीं कि अल्पसंख्यकों की ओर उसका विशेष झुकाव है, परंतु समाज के अन्य वर्गों में भी उसने पैठ बनाने का भरसक प्रयास किया है। खासकर महिलाओं में ममता का समर्थन अन्य दलों से अधिक है। कोरोना काल में राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली राहत सामग्री से लोग संतुष्ट नजर आ रहे हैं और कई तरह की पेंशन और छात्र छात्राओं के लिए बनी योजनाओं ने दीदी की राज्य में पकड़ मजबूत बनाई है। घुसपैठ की समस्या जरूर है। कुछ क्षेत्रों में घुसपैठिये बहुसंख्यकों पर भारी पड़ रहे हैं। यह निश्चित तौर पर चिंता का विषय है, लेकिन इतने भर से बंगाल की तुलना कश्मीर से करना अभी ठीक नहीं है। एक बात तो स्पष्ट है कि सिर्फ लोगों को डराकर, धमकाकर कुछ क्षेत्रों में चुनाव जीते जा सकते हैं, परंतु किसी राज्य में किसी पार्टी का पूर्ण बहुमत के साथ आना यह भी बतलाता है कि राज्य का एक बड़ा हिस्सा उसके साथ है। इन सबके बावजूद ममता की सरकार को ऐसे कदम नहीं उठाने चाहिए, जिससे राष्ट्रीय अस्मिता पर सवाल खड़े हों। वहीं ममता बनर्जी को हराने के लिए भाजपा को अभी और मेहनत करनी पड़ेगी। उसे नए स्थानीय नेता और नेतृत्व तलाशकर उसे तराशना होगा।

devanand158@gmail.com

मेलबाक्स

जनसंख्या नियंत्रण जरूरी

'जरूरी है आबादी पर नियंत्रण की पहल' नामक आलेख में डॉ. कुलदीप मलिक ने भारत की निरंतर बढ़ती हुई आबादी को लेकर अपना गहन विमर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने बढ़ती आबादी के चलते सीमित होते संसाधनों को जनसंख्या वृद्धि के लिए एक अभिशाप माना है। इसे जाहिर तौर पर हम बढ़ती हुई बेरोजगारी, घटते संसाधन, जनसंख्या एवं विकास के मध्य असंतुलित अनुपात के रूप में देख सकते हैं। आज भारत चीन के बाद दुनिया की दूसरी बड़ी आबादी वाला देश है। यही स्थिति तो एक अनुमान के अनुसार साल 2025 तक भारत चीन को भी पीछे छोड़ देगा। यही नहीं 2030 तक अब के मुकाबले 1.6 गुना धरती की आवश्यकता होगी। इन हालात को सुधारने के लिए अब कड़े कदम उठाने का वक्त आ गया है। इसकी शुरुआत उत्तर और पूर्वी भारत के राज्य उत्तर प्रदेश और असम से हो चुकी है। आज आबादी सुरसा के मुख की तरह बढ़कर संसाधनों को इस प्रकार से निगल रही है कि आने वाला समय और प्रलयकारी हो सकता है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए विशेष फोकस करने की जरूरत है।

पवन कुमार मुरली, गुरुग्राम

मतांतरण पर लगे रोक

मतांतरण को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताने वाले दिव्य कुमार सोती के आलेख में सदियों पुराने उस सत्य को ही उजागर किया गया है कि जिस-जिस क्षेत्र में मतांतरण हुआ, वहीं भारत विरोधी अलगाववाद भी पनपा। हजार साल पूर्व अफगानिस्तान भारत का भाग था। इसका प्राचीन नाम उपगणस्थान था। प्राचीन पुरुषपुर (अब पेशावर) और भरत के पुत्र तक्ष द्वारा बसाया गया तक्षशिला इसी क्षेत्र में है। गांधीवादी विचारक जे सी कुमारप्पा ने लिखा है कि पश्चिमी ईसाई विस्तारवाद की सेना के चार अंग हैं, थल सेना, वायुसेना, नौसेना और ईसाई मिशनरी। सऊदी अरब इस्लाम के फैलाव हेतु पैसा देता है तो अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली आदि ईसाइयत के लिए। यदि भारत को स्वयं को महजबी विस्तारवाद से बचाना है तो मतांतरण प्रतिबंधित करने वाला एक सख्त केंद्रीय कानून इस समय बेहद जरूरी है। उसके क्रियान्वयन की बड़ी जिम्मेदारी एनआइए जैसी केंद्रीय एजेंसी की होगी।

अजय मित्तल, मेरठ

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

52 से अधिक देशों की यात्रा कर चुके हैं दलाई लामा, जहां वे अनेक सभाओं व गोष्ठियों को संबोधित कर चुके हैं। साथ ही, 50 से अधिक पुस्तकें भी अब तक वे लिख चुके हैं।

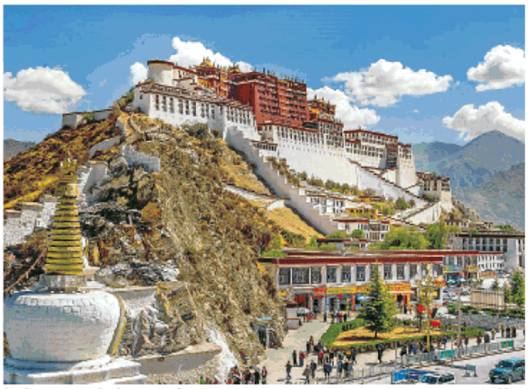
आजकल

तिब्बत के संदर्भ में बदले विदेश नीति

चीन का अपने सभी पड़ोसी देशों से कमोबेश सीमा संबंधी विवाद है। म्यांमार और नेपाल जैसे देश भी अब उस पर पूरी तरह से भरोसा नहीं कर रहे हैं। ऐसे में चीनी विस्तारवाद के खिलाफ भारत एक वैश्विक जनमत तैयार कर सकता है, जिसमें मंगोलिया से वियतनाम तक के हर पड़ोसी देश चीनी अतिक्रमण के खिलाफ साथ आ सकते हैं। वहीं भारत अपने पुराने सांस्कृतिक संबंधों का हवाला देकर इस मसले पर एशिया के सभी हिंदू बौद्ध पहचान वाले देशों को चीन के खिलाफ एकजुट कर सकता है



अमिय भूषण
दक्षिण पूर्व एशियाई मामलों के जानकार


विश्व विरासत स्थलों में शामिल तिब्बत के ल्हासा स्थित पोटाला पैलेस। इंटरनेट मीडिया।

तिब्बत के पितृ पुरुष दलाई लामा की जन्मतिथि पर बीते दिनों देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फोन कर उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। इसे भले ही जन्मतिथि के अवसर पर शुभकामना के तौर पर समझा जा रहा हो, लेकिन व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने पर इसके निहितार्थ बहुत अधिक हैं। इस पूरे प्रकरण को समझने के लिए सर्वप्रथम तिब्बत और फिर दलाई लामा को समझना होगा। तिब्बत अपने विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और पारिस्थितिकी तंत्र के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक रूप से भी बेहद समृद्ध तिब्बत विश्व की छत है। यह खनिज और जल संसाधन से भी परिपूर्ण भूमि है। ऐसे में मानवता, संस्कृति और प्रकृति विरोधी चीन का यहां कब्जा संपूर्ण विश्व के लिए भी एक चेतावनी भरा खतरा है। वैसे मतांध चीन के लिए असली चुनौती दलाई लामा हैं, जिनसे निपटने के लिए चीनी कूटनीतिज्ञ निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि स्वतंत्र तिब्बत को ड्रैगन की ओर से चीनी भूभाग बताए जाने पर 13वें दलाई लामा ने अतीत में बहुत साफ शब्दों में कहा था हम केवल पड़ोसी हैं। बाद के वर्षों में जब वर्तमान दलाई लामा के समय चीन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का तिब्बत में प्रवेश हुआ तो परिस्थितियां बदलीं। ऐसे में अपने लोगों और धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताओं की अक्षुण्णता के लिए एक छोटी सी टोली के साथ उन्हें वर्ष 1959 में भारत आना पड़ा। तब से अब तक चीनी उत्पीड़न से भागे हर तिब्बती नागरिक को स्नेह और आश्रय देने का काम दलाई लामा ने निरंतर किया है। ऐसे लाखों तिब्बती नागरिक आज भारत से लेकर यूरोप, अमेरिका तक अपना जीवन-यापन करते हुए दलाई लामा के संरक्षण में तिब्बत मुक्ति के अभियान में लगे हैं। वहीं तिब्बत में रहने वाले करीब 60 लाख तिब्बतियों के लिए भी दलाई लामा एक आशा की किरण हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि तिब्बत आज भी चीन की दुखती रग बना हुआ है।

दुनिया के किसी वैश्विक मंच से जब भी तिब्बत की चर्चा छिड़ती है तो ड्रैगन दलाई लामा के गांव के रास्ते बंद करता नजर आता है। हर बार उत्तर पूर्व तिब्बत के ताकस्तेर स्थित उनके गांव में उनके स्वजनों पर निगरानी बढ़ा दी जाती है। स्वतंत्र तिब्बत के अहिंसक अभियान के सामने चीन की कुटिल योजना नए नए रूप में सामने आती रहती है। बीजिंग की बर्बरता ने तिब्बतियों की पहचान को कुचलने के लिए उनके धार्मिक जीवन से दलाई लामा की पहचान को जड़ से उखाड़ने की अगणित कोशिशें की है। पहले किसानों को यहां से शहरी क्षेत्रों में आधुनिक आवास और अवसर के नाम पर स्थानांतरित किया गया। फिर तिब्बती युवाओं के विवाह चीनियों संग कराए गए। इतना ही नहीं, तिब्बती जनमानस का दलाई लामा की धार्मिक शिक्षाओं में भाग लेने के लिए भारत यात्रा को भी लगभग असंभव सा बनाया गया। दलाई लामा की तस्वीरों को इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट करना भी यहां एक दंडनीय अपराध है। इसके लिए एक साल तक की जेल की सजा भी हो सकती है। तिब्बती में धर्म और लामा की निंदा के लिए चीनी अधिकारियों ने कुछ नए लोगों को लामा बनाकर सांस्कृतिक परंपराओं पर हमले शुरू कर दिए हैं। दलाई लामा के बाद के दूसरे सबसे महत्वपूर्ण अवतारी गुरु पंचेम लामा को गायब कराया गया। फिर इनकी जगह अपने एक व्यक्ति को इस पद पर बैठाते हुए तिब्बतियों का मुंह बंद करना चाहा। किंतु चीन यहां भी असफल रहा। ऐसे में अब चीन वर्ष 2010 से स्थगित चीन तिब्बत वार्ता के बाद कुछ नए पैंतरे आजमा रहा है। तिब्बत के पोटाला महल और जोखांग मठ पर आयोजित होने वाले उत्सव में चीनी लामा बड़े-बड़े पोस्टर लेकर प्रदर्शन करते हैं। इनके माध्यम से वे यह बताने का प्रयास करते हैं कि तिब्बतियों के प्रतिनिधि और आध्यात्मिक प्रमुख दलाई लामा नहीं, अपितु चीनी राष्ट्राध्यक्ष शी चिनफिंग हैं। दरअसल ताइवान, हांगकांग और मकाउ की तरह तिब्बत भी चीन की दुखती रग है।

आसान नहीं तिब्बत में चीन की आगे की राह: वैसे अब यह देखना भी बेहद दिलचस्प होगा कि दलाई लामा अपने 90वें जन्म दिवस पर क्या घोषणा करते हैं। एक अन्य संकेत में वर्तमान दलाई लामा के अंतिम अवतार होने के भी संकेत हैं। जहां तक तिब्बत का प्रश्न है तो इन्होंने वर्ष 2011 में ही राष्ट्राध्यक्ष का पद छोड़ था। अपने जीवनकाल में स्वेच्छा से पद छोड़ने और नई व्यवस्था के रूप लोकतंत्र को लाने वाले वे प्रथम विशिष्ट लामा हैं। दरअसल तिब्बती परंपराओं में सदियों से दलाई या पंचेम लामा धार्मिक ही नहीं, अपितु राजनीतिक प्रमुख भी होते रहे हैं। किंतु अब ये केवल धार्मिक प्रमुख होंगे। वहीं इस नवीन घोषणा के बाद अब चीन के लिए दोहरी चुनौती बढ़ गई है। अब उसे दलाई लामा के साथ ही तिब्बती संसद का भी सामना करना पड़ेगा, जिसके मतदाता दुनियाभर में फैले हैं। वहीं इस सरकार के प्रतिनिधि दुनिया के 12 अलग अलग देशों में नियुक्त भी हैं। भारत, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में वे रहकर वहां की सरकारों के संपर्क में हैं। वहीं इन राजनयिक मिशनों के माध्यम से तिब्बत सरकार का संपर्क और स्वीकार्यता पड़ोस के भी कई देशों में है। लिहाजा वर्तमान दलाई लामा के नेतृत्व में दुनियाभर में तिब्बत की स्वतंत्रता की मांग मजबूती से बढ़ी है। इस कड़ी में तिब्बत पॉलिसी एक्ट 2002 पर अमेरिकी प्रशासन ने भी हस्ताक्षर कर चीन की चिंता बढ़ा दी है। इस एक्ट के तहत अमेरिका ने अपनी वचनबद्धता को दोहराते हुए कहा है कि 14वें दलाई लामा के उत्तराधिकारी चयन में तिब्बती समुदाय की ही बात सुनी जाएगी। उस समय अमेरिका के राष्ट्रपति रहे जॉर्ज डब्लू बुश के कार्यकाल में इस संदर्भ में नियम भी बनाए गए थे। इसका परिमार्जित रूप वर्ष 2020 में अमेरिकी संसद द्वारा पारित किया गया है।

दलाई लामा के विचारों को आगे बढ़ाए भारत: वैसे जिस मसले पर चर्चा की जा रही है, वह विमर्श वर्तमान दलाई लामा के बिना अधूरा रह जाएगा। अपने निर्वासन के बाद वह कभी भी रुके नही हैं। दुनिया के करीब 52 देशों की यात्रा करके वे अनेक सभाओं और गोष्ठियों को संबोधित कर चुके हैं। इसके अलावा 50 से अधिक पुस्तकें भी वे लिख चुके हैं। बात अगर इनके मानवीय मूल्य आधारित विचार, शांति एवं धार्मिक सहिष्णुता संबंधी कार्यों की करें तो इसने लोकप्रियता की एक नई ऊंचाई को छुआ है। इस नाते इन्हें नोबेल पुरस्कार सहित दुनियाभर से 60 से अधिक मानद उपाधि और सम्मान भी मिले हैं।

चीन-तिब्बत विवाद को अगर भारत के नजरिये से देखें तो ये भारत के हित-अनहित से भी जुड़ता है। बात अगर तिब्बत के भौगोलिक विस्तार की हो तो यह पश्चिम में भारत के लद्दाख और पूरब में अरुणाचल प्रदेश तक विस्तृत है। एक प्रकार से कहें तो भारत की सीमा पर तिब्बत बसा है। वहीं तिब्बतियों के लिए भारत सदैव से उनका दूसरा घर है। इस बात की चर्चा दलाई लामा अपने बहुतेरे वक्तव्यों में कर चुके हैं। तिब्बती इतिहास में इससे संबंधित अनेक साक्ष्य मौजूद हैं। कभी भारत के संरक्षण में रहने वाला तिब्बत नेहरू सरकार की गलत नीतियों के कारण चीन द्वारा हड़प लिया गया। जहां का कैलाश मानसरोवर तिब्बतियों के साथ ही भारतीयों के लिए भी धरती का सबसे पवित्र स्थान है।

समय आ गया कि भारत अपनी एक ठोस चीन-तिब्बत नीति के साथ आगे बढ़े। लोकतंत्र और भारत में गहरी आस्था के बावजूद दलाई लामा को अब तक भारतीय संसद को संबोधित करने का अवसर नहीं मिला है। अतः उन्हें इसके लिए आमंत्रित किए जाने पर भी विचार होना चाहिए। साथ ही, भारत को चीनी विस्तारवाद के विरुद्ध दलाई लामा के दौरे देश-विदेश में कराने चाहिए। भारत में जहां लद्दाख, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में किए जाने वाले उनके दौरों से चीन की पेशानी पर बल पड़ेगा, वहीं चीन के पड़ोसी देशों का दलाई लामा द्वारा किया जाने वाला हर दौरा चीन के विरुद्ध एक सशक्त अंकुश का काम करेगा। इस दिशा में भारत को धीरे धीरे ही सही, लेकिन कदम आगे बढ़ाना चाहिए।

चीन को घेरने के लिए हो सार्थक पहल

भारत की विदेश नीति नई दिशा के साथ नए दौर में है। हाल के दिनों में भारत ने इजराइल से लेकर ताइवान तक कई नए दोस्त बनाए हैं। जिन देशों एवं शासन से राजनयिक संबंधों को लेकर कभी भारतीय सत्ता प्रतिष्ठान में संशय और संकोच था, मोदी सरकार के अनेक तथ्यों पर सकारात्मक पहल के कारण वह बदल चुका है। अब पारस्परिक हित और भारत का भला होना ही भारतीय मैत्री का एकमेव आधार है। दुनिया को लेकर अब भारत का नजरिया पहले से ज्यादा पुख्ता और प्रबल दिखने लगा है। इस कड़ी में बीते दिनों वियतनाम के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री से भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बातचीत कर शुभकामनाएं दी हैं। चंद रोज पहले ही उन्होंने दलाई लामा से भी फोन पर बातचीत की थी। दलाई लामा और वियतनाम के अपने समकक्ष से की गई ये बातचीत अपने आप में एक स्पष्ट संकेत है कि भारतीय विदेश नीति नई करवट ले रही है। कल तक जिन मसलों पर भारतीय विदेश नीति मौन झिझक के साथ आगे बढ़ रही थी, अब उन्हीं मसलों पर भारतीय विदेश नीति मुखर है। हम किसी एक देश की कीमत पर दूसरे देश से संबंध स्थापित करने की विदेश नीति को पीछे छोड़ कर अलग अलग देश, अलग अलग संबंध पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। अब हम अफगानिस्तान-म्यांमार की कीमत पर अमेरिका से और पूर्व सोवियत संघ के देशों से रूस की कीमत पर संबंध नहीं रखते हैं। इसके हालिया उदाहरण भारतीय विदेश मंत्री के वर्तमान जॉर्जिया दौरे और संयुक्त राष्ट्र में म्यांमार को लेकर भारत की नीति से हम समझ सकते हैं। इसके अलावा, भारत अब इजराइल की कीमत पर इस्लामिक मुल्कों से संबंध नहीं रखता। अब हम इजराइल से अलग और अरब देशों से अलग संबंध रखते हैं। वहीं बात अगर भारत के पड़ोसी देशों की करें तो अब तक हमारी विदेश नीति पर चीनी प्रभाव-दबाव स्पष्ट तौर पर दिखता था। परंतु केंद्र की वर्तमान नरेंद्र मोदी सरकार ने इस दिशा में दृढ़ता से आगे बढ़ते हुए ताइवान और वियतनाम से लेकर तिब्बत और मंगोलिया तक अपनी नीतियां बिल्कुल स्पष्ट तरीके से रखी है। इसी कड़ी में हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फोन डिप्लोमेसी और भारत की तिब्बत नीति को देखना समझना होगा।

खरी-खरी

बैंड, बाजा और उस्ताद

जगदीश ज्वलंत

इतनी उम्र हो गई गफूर मास्टर को बैंड बजाते हुए, लेकिन आज तक ऐसे दुर्दिन नहीं आए, जो इन दो वर्षों में आए। सभी के काम-धंधे चोरी-छुपे चल रहे हैं, किंतु, बैंड का धंधा ऐसा-जैसे चोर को खांसी। आधे बैंड वाले तगारी उठा रहे थे। आधे उठाना तो चाहते थे, किंतु उन्हें वह काम भी नहीं मिल रहा। दुकान का किराया देने में बैंड के आधे साज-बाज तो उस्ताद ने गिरवी रख दिए। शेष बचे वाद्य-यंत्र दीवार पर उदास लटके उस्ताद की दीन-हीन दशा पर आंसू बहा रहे थे। उन्हें फूंकने के लिए उस्ताद में न सांसें थीं, न ताकत, न हिम्मत। एक बार तो उन्हें इतना गुस्सा आया कि फालतू बची फूंक से दुकान ही फूंक दें। फिर सोचने लगे- बेचारे बाजों का क्या कसूर, दुकान ने क्या बिगाड़ा। ये दोनों तो कई पीढ़ियों से परिवार पालते रहे हैं।

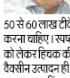
उस्ताद के चेहरे पर छाई खामोशी को पढ़ना तो सरल था, किंतु सामना करना कठिन। दर्द-भरे गीतों की मार्मिक अनुगूंज अब उनके चेहरे पर भी उभरने लगी थी। उस्ताद को पता है, कोई आर्डर-बुक करने नहीं आएगा, किंतु आदत सी हो गई है, इसलिए सुबह होते ही उनके कदम खुद-ब-खुद बैंड की दुकान पर चले आते हैं। एक पल्ला अधखुला रख अंदर जा बैठते हैं। उन्हें देख कुछ और बैंड के साथी आ बैठते। बची पूंजी से अंदर चोरी-छुपे चाय-बीड़ी का दौर चलता रहता है। उस्ताद दाता होता है, शागिर्द याचक। वे उस्ताद होने का मूल्य चुकाते हैं। गांठ के दाम गंवा कर शाम को फिर घर आ जाते हैं। खाली हाथ। पहले जब वे आते थे, थैली में कुछ लेकर ही आते थे। सब्जी-भाजी से लेकर बच्चों के लिए फल-मिठाई तक। किंतु इन दो वर्षों में उनसे न परिवार को कोई अपेक्षा रही, न बच्चों को कोई उम्मीद। उदास, निराश, हताश। आते, चुपचाप अपने पलंग पर बैठ जाते। खिचड़ी उन्हें पसंद नहीं थी। उसे वे मरीज का खाना मानते थे। आज खाने को बस वही है।

विज्ञानी संगीत से बीमारी का इलाज करने का दावा करते हैं, किंतु इधर बीमारी ने संगीत का इलाज कर दिया। क्यों न दुकान का सामान घर में ही लाकर रख लिया जाए? दुकान के भाड़े से तो बचेंगे। इस विचार से उनकी आंखें भर आईं।

ट्वीट-ट्वीट

अमेरिका ने 20 वर्षों के दौरान अफगानिस्तान में दो लाख करोड़ डॉलर खर्च किए। उसके 2,400 सैनिकों की शहादत हो गई। फिर भी वह तालिबान को परास्त नहीं कर सका। फिलहाल 85 प्रतिशत अफगानिस्तान पर तालिबान काबिज हो गया है और जल्द ही शत प्रतिशत हिस्सा उसके कब्जे में होगा। वह कट्टर इस्लाम का केंद्र बनकर उभरेगा, जहां महिलाओं को रोज पत्थर मार-मारकर मौत के घाट उतारा जाएगा।
तसलीमा नसरीन@taslimanasreen

दोहा समझौते ने तालिबान को अंतरराष्ट्रीय वैधता प्रदान की, जिसकी उसे शिद्दत से दरकार थी। इसके बावजूद हर रोज अपनी हरकतों से तालिबान यही जाहिर करता रहा है कि उस वैधता को कायम रखने के लिए वह फिक्रमंद नहीं।
माइकल कुगेलमैन@MichaelKugelman



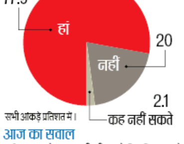
भारत में रोजाना करीब 30 से 40 लाख लोगों को वैक्सीन लगाई जा रही है जो पर्याप्त नहीं है। हमें रोजाना कम से कम 50 से 60 लाख टीके लगाने का लक्ष्य तो हासिल करना चाहिए। स्पष्ट नहीं कि यह स्थिति वैक्सीन को लेकर हिचक की वजह से बनी है या फिर वैक्सीन उत्पादन ही कम है।
अरविंद पानगड़िया@APanagariya

कोपा अमेरिका जीतने पर अर्जेंटीना को बधाई। लियोन मेसी ने इतने वर्षों तक हमें बेशुमार खुशी दी है। वह निर्विवाद रूप से सर्वकालिक बेहतरीन खिलाड़ी हैं और इस जीत के वाकई हकदार भी। वहीं ब्राजील ने भी शानदार खेल दिखाया।
सुंदर पिचाई@sundarpichai

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या दो से अधिक बच्चे वालों को नौकरी और सब्सिडी से वंचित किए जाने की पहल सही है?



सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

पर्यटन स्थलों पर बढ़ती भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कुछ सख्त कदम उठाए जाने चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

ममता दी का बढ़ रहा 'सिन्हा' पर विश्वास,
राह पकड़ यशवंत की हुए शत्रु जी खास।
हुए शत्रु जी खास भटक कर सभी दिशाएं,
अब देखो तृणमूल जाय वह क्या-क्या पाएं!
बीजेपी का साथ न जिनको बिल्कुल जमता,
ममता दी की सिर्फ उन्हीं पर बरसे ममता।
– ओमप्रकाश तिवारी

उत्तर प्रदेश डायरी

चुनावी गीत से पहले परसेप्शन वार में जीत



राजू मिश्र
वरिष्ठ समाचार संपादक, उत्तर प्रदेश

बीते सप्ताह की दो घटनाओं ने प्रदेश की भावी चुनावी राजनीति और ध्रुवीकरण की दिशा बदल दी है। अतिशयोक्ति न होगी यदि यह कहा जाए कि जब विपक्ष अभी अपने कील कांटे दुरुस्त करने के लिए संगठन के पुर्जे तलाश रहा है, वहां भाजपा ने अपनी चुनावी व्यूह रचना को अंतिम छोर तक पहुंचा दिया है। हाल में हुए जिला पंचायत और क्षेत्र पंचायत के चुनाव ने जहां भाजपा को मतदाता के बीच कोरोना के कारण कमजोर होती पार्टी की छवि को पुख्ता करने का काम किया है, वहीं केंद्रीय मंत्रिमंडल विस्तार के जरिये सोशल इंजीनियरिंग का जाल इस तरह बिछाया है कि विपक्ष अलग-अलग या एकजुट तरीके से भी सामने आए तो भी उसे स्वाभाविक नकारात्मक मतों के अतिरिक्त बहुत कुछ हासिल न हो सके।

सबसे पहले हाल में संपन्न हुए जिला पंचायत और सप्ताह के उत्तरार्द्ध में संपन्न क्षेत्र पंचायत प्रमुख के चुनाव की बात कर लें। इन चुनावों को लेकर विपक्ष के अपने आलोचनात्मक तर्क हो सकते हैं, लेकिन उसे यह स्वीकारना चाहिए कि वह रणनीतिक रूप से मात खा गई है। सिंबल पर लड़े गए पंचायत स्तर के दोनों चुनावों में भाजपा ने लगभग वही गाथा दोहराई है जो उसने 2019 के लोकसभा आम चुनाव और उससे पहले 2017 के विधानसभा के चुनावी रण के बाद लिखी थी। जिला पंचायत के चुनाव में भाजपा ने 75 में से 67 सीटें जीतकर एक तरह से 2019 के लोकसभा चुनाव के समय रहे उत्कर्ष की स्मृति दिलाई है तो ब्लाक प्रमुख के चुनाव में 825 में से 648 सीटें जीतकर 2017 के उत्कर्ष की याद दिलाई है। यही नहीं ब्लाक प्रमुख की जिन 349 सीटों पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ है, उसमें से 334 भाजपा के पक्ष में खड़े थे। यह सवाल किया जा सकता है कि पंचायत चुनाव को पैमाना मानकर यह नहीं कहा जा सकता है कि विधानसभा चुनाव में भी वही दोहराया जाएगा। इसकी वजह यह है कि पंचायत चुनाव की सफलता मूलतः सत्तारूढ़ दल को वाकओवर या प्रशासनिक मशीनरी की सफलता मानी जाती है। लेकिन यह सवाल पूछना भी सामयिक होगा कि इससे पहले सपा या बसपा ने सत्ता में रहते हुए भी ऐसी प्रचंड जीत कब हासिल की। यानी यदि मान भी लिया जाए कि पंचायत चुनाव सत्ता के जोर पर जीते जाते हैं तो भी इतना प्रचंड बहुमत क्या सिर्फ सत्ता के जोर पर हासिल किया जा सकता है।


बनारस के सर्किट हाउस में भाजपा नेताओं के साथ नवनिर्वाचित ब्लाक प्रमुख। नवनीत पाठक

पंचायत चुनाव की जीत से सिर्फ आंकड़े ही नहीं निकले हैं, कुछ संदेश भी निकले हैं। कहा जा रहा था कि किसान आंदोलन और कोविड की दूसरी लहर के बीच कराए गए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के सबसे निचले स्तर के चुनाव से ग्रामीण जनता में भारी नाराजगी है। कहा गया कि ये चुनाव ग्रामीण क्षेत्र में कोरोना के प्रसार की वजह बने जिसकी वजह से सैकड़ों जानें गईं। दूसरा तर्क दिया जाता रहा कि दिल्ली में किसान आंदोलन के नाम पर जमा लोग पंचायत चुनाव में भाजपा को सबक सिखा देंगे। जो परिणाम आए हैं, वे इन दोनों विमर्शों को राजनीतिक रूप से समाप्त करने वाले हैं। मतदाता के बीच यह संदेश पहुंच गया है कि विपक्ष विधानसभा चुनाव से पहले सरकार की विफलता का जो शोर मचा रहा था, लोगों ने उस पर कान नहीं दिए। अधिकांशतः शोर तात्कालिक प्रतिक्रिया के तौर पर व्यक्त होकर शांत हो चुका है।

कुछ इसी तरह का शोर भाजपा के सामाजिक समीकरणों के बिखरने का मचाया जा रहा था। केंद्रीय मंत्रिमंडल विस्तार में प्रधानमंत्री सहित अब 15 मंत्री उत्तर प्रदेश कोटे से हो गए हैं। इस संख्यात्मक बढ़ोतरी के साथ देखा जाए तो इसमें अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और ब्राह्मण समुदाय के प्रतिनिधित्व का घनत्व बढ़ाया गया है। यह घनत्व बढ़ाने के लिए ऐसा भी नहीं किया गया कि सिर्फ जाति देखकर ही जगह दे दी गई। खासतौर पर उत्तर प्रदेश के मामले में यह देखा गया है कि जिसे मंत्री बनाया जा रहा है, उसका जमीनी आधार क्या है, उसकी शैक्षिक पृष्ठभूमि और काम करने के प्रति ललक क्या है, उसकी उम्र क्या है। यानी एक तरफ सामाजिक समीकरण साधे गए तो दूसरी तरफ नेतृत्व की दूसरी पांत विकसित करने का प्रयास भी हुआ। सबसे अहम नए मंत्रियों को शामिल करने से ठीक पहले जिस तरह दर्जन भर मंत्रियों से इस्तीफे मांग लिए गए, वह इन नए मंत्रियों को संदेश भी है कि उन्हें सिर्फ जातीय गान ही नहीं, मंत्रिमंडल में रहकर काम भी करना होगा और भविष्य में तभी उनकी बर्थ सुरक्षित रहेगी।

मंथन

शिक्षण की प्रासंगिक कार्यशैली

नया सीखना तथा सुधार, प्रदर्शन और रूपांतरण की प्रक्रिया से गुजर कर ही एक शिक्षक बौद्धिक रूप से सजग, नवाचारी, तार्किक एवं नवीन ज्ञान के प्रति आग्रही बना रह सकता है



आचार्य राघवेंद्र प्रसाद तिवारी
कुलपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा

स्वातंत्र्योत्तर भारत के विकास और चतुर्दिक उन्नयन को शिक्षा के माध्यम से नियोजन एवं प्रबंधन करने के वैचारिक उपक्रम के तहत निर्मित पहले शिक्षा आयोग (1964-66) के अध्यक्ष डॉ. डीएस कोठारी ने रेखांकित करते हुए कहा था कि 'भारत की नियति अब इसकी कक्षाओं में आकार ले रही है। इसके लिए व्यक्ति, राष्ट्र एवं मानवता को पुनः जीवंत करने हेतु शिक्षकों को सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का माध्यम बनना होगा।' वस्तुतः यह प्रबोधन शाश्वत ज्ञान के पुनर्स्थापना की दिशा में अनवरत संलग्न शिक्षकों के प्रेरक व्यक्तित्व, प्रोत्साहन कर्ता एवं सक्रिय अभिकरण के रूप में भूमिका निर्वहन की एक न्यायपूर्ण अभिव्यक्ति है।

शिक्षा संबंधी अपनी प्रतिबद्धता को साकार करते हुए राष्ट्र निर्माण हेतु संकल्पित वर्तमान सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अंगीकार किया। कहना न होगा कि यह नीति शिक्षकों के लिए संदर्भ, सरोकारों एवं दूरदर्शिता तथा सीखने और ज्ञान की परंपरागत तथा आधुनिक पद्धतियों के साथ एक रचनात्मक सहसंबंध की स्थापना हेतु भगीरथ प्रयास है। इस शिक्षा नीति की शिक्षकों से भिन्न अपेक्षाएं हैं, जिसकी पूर्ति नवाचारी दृष्टिकोण एवं कौशलयुक्त शिक्षक-शिक्षा द्वारा ही संभव है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का लक्ष्य अधिगम प्रणाली को अधिक प्रासंगिक और आत्मनिर्भर बनाना है, जिसमें बहुविषयक समग्र चिंतनशील शिक्षा, अकादमिक एवं शोध कार्यक्रमों की पुनर्रचना, अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम, अकादमिक क्रेडिट बैंक, नवाचार अनुभवजन्य अधिगम तथा शैक्षिक एवं सह शैक्षिक गुणों के आकलन हेतु मूल्यांकन प्रणाली को और अधिक सशक्त एवं सक्षम बनाने की कार्य योजना समाहित है।

निसंदेह शोध मानवीय उत्कृष्टता की महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक परियोजना है। इसीलिए इस नीति में अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को सृजित एवं प्रबंधित करने के लिए समाजोपयोगी अनुसंधान हेतु नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की परिकल्पना की गई है। इस नीति में एक व्यापक एवं समावेशी इकाई के अंतर्गत 'सहज किंतु कठोर' नियामक प्रणाली का प्रविधान किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य युवाओं को प्रशिक्षित करना एवं उन्हें वैश्विक दक्षता और जीवन कौशलों से समृद्ध करना है, ताकि वे सामाजिक एवं आर्थिक रूप से प्रासंगिक होकर वैश्विक ज्ञान समाज का अनिवार्य प्रतिभाग बन सकें। तात्पर्य यह है कि शिक्षण अधिगम की प्रणालियों में आज के विद्यार्थियों की समावेशी आवश्यकताओं तथा 21वीं सदी के बहु-विषयक अनुशासनों तथा कौशलों से युक्त अधिगम को समायोजित करना अनिवार्य है।

इस संदर्भ में विचारणीय यह है कि क्या हमारे शिक्षक इस भूमिका को निभाने के लिए संसाधन संपन्न हैं तथा वे किस तरह समग्र और बहुविषयक अधिगम परिदृश्य का नवाचारी रूप से क्रियान्वयन कर सकेंगे। ध्यातव्य है कि देश में पाठ्यक्रम निर्माण और विकास की गतिशीलता के अभाव के कारण हम वैश्विक संदर्भों में दक्ष एवं अपेक्षा अनुरूप विद्यार्थियों का सृजन नहीं कर पाए। परिणामस्वरूप कौशल हीनता एवं बेरोजगारी की समस्या सुरसा की तरह मुंह बाए खड़ी है।

इस दृष्टि से तात्कालिक न्याय है कि 21वीं सदी के शिक्षकों को अपने परंपरागत परिस्थितियों से बाहर निकल कर व्यावहारिक अधिगम प्रणाली को विकसित करने हेतु सभी व्यावसायिक मानकों को आत्मसात करना होगा। उन्हें अनुसंधान और नवाचारों हेतु इस प्रकार के पारिस्थितिकी तंत्र और संस्कृति को विकसित और पोषित करना चाहिए जिससे संसाधनों का सृजन हो तथा युवा वर्ग स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हो सके। यह तभी संभव है जब शिक्षक बहु विषयक, समग्र एवं परिणाम आधारित पाठ्यक्रम ढांचे को आत्मसात करें जिसमें अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास, विचार, उद्यमशीलता, शिक्षण आधारित अनुसंधान शिक्षण के मुख्य तत्व हों।


सामयिक बदलावों से ही सार्थक सिद्ध होगी हमारी शिक्षा। फाइल

एक संवेदनशील शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह सुनिश्चित करे कि उसके विद्यार्थियों में जीवन-पर्यंत सीखने-सिखाने की जिजीविषा विकसित हो, जिसके लिए प्रश्न के प्रति आकुलता एक बुनियादी कौशल है। इस हेतु शिक्षकों को हमेशा एक सक्रिय अभिकरण के रूप में कार्य करना होगा।

शिक्षकों को अधिगम प्रणाली में हो रहे सुधारों तथा भावी पीढ़ी की अधिगम आवश्यकताओं के अनुरूप अपने ज्ञान को अद्यतन करने की आवश्यकता है। समाज, उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों, अनुसंधान संगठनों तथा वित्त-पोषण संस्थाओं के साथ सार्थक संवाद से इस प्रकार की अधिगम आवश्यकताओं को समझने में सहायता मिलेगी।

वर्तमान शिक्षक समसामयिक एवं प्रासंगिक बने रहें, इसलिए यह आवश्यक है कि उत्कृष्ट सामाजिक एवं व्यावसायिक मानकों के आधार पर शिक्षकों का प्रशिक्षण, नियोजन एवं प्रबंधन हो। यह शिक्षा नीति इस दिशा में शिक्षकों के समक्ष एक सर्वसमावेशी वैचारिक पाथेय सिद्ध हो सकता है। नवाचारी शिक्षण की यह प्रक्रिया सीमित संसाधनों के कारण कठिन हो सकती है, किंतु असंभव नहीं है। आत्मनिर्भर संरचना को अपनाकर संसाधनों के इस अभाव को बाधक बनने से रोका जा सकता है।

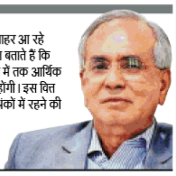
राष्ट्रीय संस्करण
सोमवार 12 जुलाई, 2021
दैनिक जागरण

बिजनेस

www.jagran.com

निजीकरण के बाद बीपीसीएल की एलपीजी आपूर्ति पर पेच

नई दिल्ली : दो दशक पहले एलपीजी आपूर्ति को लेकर आदेश जारी किया गया था कि केवल सरकारी तेल कंपनियां ही घरेलू स्तर पर उत्पादित एलपीजी खरीद सकती हैं। अब भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) के निजीकरण की तैयारियों के बीच इस आदेश से पेच फंसता दिख रहा है। सरकार इस मामले में कानूनी राय ले रही है कि निजीकरण के बाद बीपीसीएल को ओएनजीसी और गेल जैसी भारतीय कंपनियों द्वारा उत्पादित एलपीजी की आपूर्ति की जा सकती है या नहीं। (प्रेट्र)



हम महामारी से बाहर आ रहे हैं। विभिन्न संकेत बताते हैं कि वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में तक आर्थिक गतिविधियां और मजबूत होंगी। इस वित्त वर्ष में विकास दर दोहरे अंकों में रहने की उम्मीद है।
— राजीव कुमार, उपाध्यक्ष, नीति आयोग

डीएनडी के बाद भी 74 फीसद लोगों को आते हैं अनचाहे एसएमएस

नई दिल्ली, प्रेट्र : टेलीकॉम नियामक ट्राई की 'डू नॉट डिस्टर्ब' (डीएनडी) में रजिस्ट्रेशन के बाद भी 74 फीसद लोगों के पास कंपनियों के अनचाहे एसएमएस आते हैं। लोकल सर्कल्स के सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है। डीएनडी में रजिस्ट्रेशन का अर्थ है कि यूजर के पास कंपनियों के अनचाहे संदेश नहीं आएंगे। तमाम कोशिशों के बाद भी इनसे निजात में पूरी सफलता नहीं मिल पाई है।

324 जिलों में किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक, 73% लोगों के पास रोजाना चार या ज्यादा एसएमएस आते हैं। दूरसंचार विभाग ने हाल ही में नियमों का उल्लंघन कर एसएमएस भेजने वाली कंपनियों पर जुर्माने के प्रविधान सख्त करने का निर्देश दिया है। विभाग ने कानून प्रवर्तन एजेंसियों, वित्तीय संस्थानों और अन्य सरकारी एजेंसियों से समन्वय को डिजिटल इंटेलीजेंस यूनिट (डीआइयू) और टेलीकॉम एनालिटिक्स फॉर फ्राड मैनेजमेंट एंड कंज्यूमर प्रोटेक्शन के नाम से दो विशेष शाखाएं भी बनाई हैं।

पेट्रोल-डीजल से सुधर रही राजस्व की सेहत

केंद्र सरकार को अपने बजट अनुमान से 1.3 लाख करोड़ रुपये अधिक के संग्रह की उम्मीद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना काल में पेट्रोल और डीजल की बिक्री पर लगने वाले उत्पाद शुल्क व वैट केंद्र और राज्य दोनों की राजस्व प्राप्ति का प्रमुख माध्यम बनते दिख रहे हैं। चालू वित्त वर्ष 2021-22 में केंद्र को पेट्रोल व डीजल पर लगने वाले उत्पाद शुल्क से 4.67 लाख करोड़ रुपये राजस्व के रूप में मिलने का अनुमान है, इस मद के बजट अनुमान से 1.32 लाख करोड़ रुपये अधिक है।

इस साल का बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने चालू वित्त वर्ष में पेट्रोल और डीजल पर लगने वाले उत्पाद शुल्क से 3.35 लाख करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्ति का अनुमान लगाया पेश किया था। पिछले वित्त वर्ष में भी केंद्र सरकार को पेट्रोल व डीजल की बिक्री पर उत्पाद शुल्क से बजट अनुमान से 94,000 करोड़ रुपये अधिक राजस्व की प्राप्ति हुई थी। इसी तरह, चालू वित्त वर्ष में राज्यों को वैट के रूप में 2.71 लाख करोड़ रुपये मिलने की संभावना है। एसबीआइ इकोरैप की हालिया रिपोर्ट में यह बात कही गई है। हालांकि पेट्रोल व डीजल की कीमतों में लगातार हो रही बढ़ोतरी से खुदरा महंगाई में बढ़ोतरी का रुख है, जिससे आम जनता की परेशानी लगातार बढ़ती जा रही है।



4.67 लाख करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्ति का अनुमान चालू वित्त वर्ष में केंद्र सरकार को

2.71 लाख करोड़ रुपये का राजस्व मिलने का अनुमान वैट और बिक्री कर के मद में राज्यों को

94,000 करोड़ रुपये ज्यादा मिले थे पिछले साल केंद्र सरकार को बजट अनुमान से

- केंद्र सरकार का उत्पाद शुल्क निर्धारित होता है जबकि राज्यों का वैट पेट्रोल व डीजल की कीमत के साथ घटता-बढ़ता रहता है

पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी) के अनुमान के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले पेट्रोल की बिक्री में 12.2 फीसद और डीजल की बिक्री में 15.1 फीसद की बढ़ोतरी हो सकती है। पीपीएसी के डाटा के मुताबिक, अनब्रांडेड पेट्रोल व डीजल पर प्रति लीटर क्रमशः 32.9 रुपये और 31.8 रुपये उत्पाद शुल्क के तौर पर वसूले जाते हैं।

एसबीआइ इकोरैप के मुताबिक पीपीएसी के डाटा के आधार पर चालू वित्त वर्ष में पेट्रोल और डीजल की खपत बढ़ने का अनुमान दिखाता है कि इस अवधि में केंद्र सरकार को मिलने वाला राजस्व भी बढ़ेगा। इसी आधार पर उत्पाद शुल्क से 4.67 लाख करोड़ रुपये का राजस्व मिलने का अनुमान जताया गया है।

अगर कच्चे तेल की कीमत को पूरे वित्त वर्ष के लिए 74 डॉलर प्रति बैरल मान लिया जाए और तेल खरीदने में इस्तेमाल होने वाले एक डॉलर के मूल्य को 75 रुपये के बराबर माना जाए, तो राज्यों को वैट या बिक्री कर के रूप में 2.71 लाख करोड़ रुपये के राजस्व की प्राप्ति होगी। केंद्र सरकार का उत्पाद शुल्क निर्धारित होता है जबकि राज्यों का वैट पेट्रोल व डीजल की कीमत के साथ घटता-बढ़ता रहता है।

वहीं, चालू वित्त वर्ष के पहले दो महीनों में कर व गैर कर दोनों मदों से मिलने वाला राजस्व भी पिछले साल अप्रैल-मई के मुकाबले अधिक है। इस साल अप्रैल-मई में केंद्र सरकार को टैक्स के रूप में 2.34 लाख करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई जबकि पिछले साल मात्र 33,850 करोड़ रुपये मिले थे। वित्त मंत्रालय के मुताबिक इस साल गैर कर राजस्व की प्राप्ति में पिछले साल अप्रैल-मई के मुकाबले 976.2 फीसद की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

वित्त मंत्रालय के मुताबिक चालू वित्त वर्ष के पहले दो महीने में केंद्र सरकार की वित्तीय स्थिति पिछले साल के मुकाबले काफी बेहतर है। इस साल अप्रैल-मई में केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा 1.23 लाख करोड़ है, जो बजट अनुमान का सिर्फ 8.2 फीसद है, जबकि विगत पांच वर्षों में इन दो महीनों में यह घाटा बजट अनुमान के औसतन 55.4 फीसद तक पहुंच जाता रहा है।

महीनेभर बाद भी दुरुस्त नहीं हुआ आयकर पोर्टल

7 जून को शुरू हुआ था पोर्टल, खामियों को लेकर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी ली थी बैठक

नई दिल्ली, प्रेट्र : लांचिंग का एक महीना बीतने के बाद भी नए आयकर पोर्टल की तकनीकी खामियों को दूर नहीं किया जा सका है। वित्त मंत्री ने दो सप्ताह पहले इस पोर्टल के कामकाज की समीक्षा की थी। चार्टर्ड अकाउंटेंट्स (सीए) का कहना है कि इस पोर्टल पर कई चीजें मसलन ई-प्रोसेसिंग और डिजिटल सिग्नेचर प्रमाणपत्र ने अभी तक काम करना शुरू नहीं किया है। जानकारों का कहना है कि इसके अलावा कुछ विदेशी कंपनियों को भी पोर्टल पर लॉगइन करने में समस्या आ रही है।

सात जून को नए पोर्टल की शुरुआत की गई थी। तब से ही पोर्टल पर तकनीकी दिक्कतें आ रही हैं। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 22 जून को इन्फोसिस के अधिकारियों के साथ बैठक की थी। इन्फोसिस ने ही इस नई वेबसाइट को तैयार किया है। इन्फोसिस को 2019 में इसकी जिम्मेदारी दी गई थी। इसका उद्देश्य रिटर्न प्रोसेसिंग में लगने वाले समय को 63 दिन से घटाकर एक दिन करना और रिफंड की प्रक्रिया को तेज करना है। वित्त मंत्री के साथ बैठक को भी दो हफ्ते बीत चुके हैं और दिक्कतें दूर नहीं हुई हैं। लोग पिछले वर्षों का आयकर रिटर्न दाखिल नहीं कर पा रहे हैं। आकलन वर्ष 2019-20 और उससे पहले के वर्षों के लिए इंटीमेशन नोटिस डाउनलोड नहीं कर पा रहे हैं। साथ ही विवाद से विश्वास योजना के तहत फॉर्म-3 पोर्टल पर दिख नहीं रहा है। इन्फोसिस का कहना है कि इस मामले में कंपनी की आमसभा में स्पष्ट किया गया है।

वहीं वित्त मंत्रालय ने इस संबंध में ईमेल का जवाब नहीं दिया है। बीडीओ इंडिया पार्टनर (टैक्स एंड रेगुलेटरी सर्विसेज) अमित गनात्रा ने कहा कि इन्फोसिस की टीम की वित्त मंत्री के साथ 22 जून को बैठक के बाद ऐसा लग रहा था कि सभी मुद्दे जल्द सुलझ जाएंगे।

शीर्ष 10 में से छह कंपनियों का एम कैप 92 हजार करोड़ रुपये गिरा

नई दिल्ली, प्रेट्र : सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से छह कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (एम कैप) में बीते सप्ताह 92,147.28 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे अधिक नुकसान में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और रिलायंस इंडस्ट्रीज रहीं। इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आइसीआइसीआइ बैंक और भारतीय स्टेट बैंक के बाजार पूंजीकरण में भी गिरावट आई।

समीक्षाधीन सप्ताह में टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 43,574.83 करोड़ रुपये घटकर 11,86,563.20 करोड़ रुपये और रिलायंस इंडस्ट्रीज का 35,500.88 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 13,14,293.35 करोड़ रुपये रह गया। इस दौरान हिंदुस्तान यूनिलीवर का एम-कैप 9,139.9 करोड़ रुपये घटकर 5,75,555.28


टीसीएस और रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान • फाइल फोटो

करोड़ रुपये, इन्फोसिस का 1,981.5 करोड़ रुपये के नुकसान के साथ 6,65,930.24 करोड़ रुपये, आइसीआइसीआइ बैंक का 1,102.33 करोड़ रुपये घटकर 4,42,302.42 करोड़ रुपये और एसबीआइ का 847.84 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 3,78,046.54 करोड़ रुपये पर आ गया।

इस रुख के उलट बीते सप्ताह एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 11,689.01 करोड़ रुपये बढ़कर 8,30,002.67 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। बजाज फाइनेंस का बाजार पूंजीकरण 8,332.62 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ 3,70,380.58 करोड़ रुपये, एचडीएफसी का 3,909.44 करोड़ रुपये बढ़कर 4,50,850.54 करोड़ रुपये और कोटक महिंद्रा बैंक का 763.21 करोड़ रुपये की वृद्धि के साथ 3,41,000.47 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एचडीएफसी, आइसीआइसीआइ बैंक, एसबीआइ, बजाज फाइनेंस और कोटक महिंद्रा बैंक का स्थान रहा।

कंपनियों को दूसरी लहर के बाद तेज रिकवरी की उम्मीद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के बाद उद्यमियों को पिछले साल से ज्यादा तेज गति से कारोबार में रिकवरी की उम्मीद है। उद्यमियों का यह भी मानना है कि दूसरी लहर से होने वाला आर्थिक नुकसान पहली लहर की तरह गंभीर नहीं है। सीआइआइ सीईओ पोल की रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

रिपोर्ट के मुताबिक, 59 फीसद कारपोरेट को उम्मीद है कि दूसरी लहर के बाद उनके सेक्टर की बिक्री में पिछले साल की संक्रमण की लहर के मुकाबले तेज रिकवरी होगी। 46 फीसद का मानना है कि पिछले साल की तरह ही उनके सेक्टर की बिक्री में रिकवरी रहेगी। सीआइआइ की रिपोर्ट के मुताबिक, 49 फीसद सीईओ का मानना है कि चालू वित्त वर्ष 2021-22 की पहली छमाही की उपभोक्ता मांग वित्त वर्ष 2019-20 की पहली छमाही के मुकाबले अधिक मजबूत रहेगी। वहीं, 72% सीईओ का मानना है कि चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में दो वर्ष पूर्व की समान अवधि के मुकाबले अधिक निवेश किया जाएगा। सीआइआइ के सर्वे में नई नौकरी को लेकर भी उत्साहजनक संभावनाएं सामने आई हैं। 83 % सीईओ ने कहा कि वे नई भर्ती कर सकते हैं या फिर पुरानी स्थिति को कायम रखेंगे। इसका अर्थ हुआ कि कंपनियां फिलहाल अपने मौजूदा कर्मचारियों की संख्या में कोई कटौती करने की तैयारी नहीं कर रही हैं।

आस

- 59 फीसद कारपोरेट का मानना है कि उनके सेक्टर की बिक्री में सुधार तेजी से होगा
- हालात में सुधार के बाद कंपनियां नई नौकरी देने की भी तैयारी में हैं

तिमाही नतीजों पर रहेगी नजर

नई दिल्ली, प्रेट्र : आइटी क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों इन्फोसिस और विप्रो के तिमाही नतीजों, वृहद आर्थिक आंकड़ों और वैश्विक संकेतकों पर इस हफ्ते निवेशकों की निगाह रहेगी। माइंडट्री, टाटा एलेक्सी और एचडीएफसी एएमसी के तिमाही नतीजे भी आने हैं। विश्लेषकों का कहना है कि इनका बाजार की चाल पर असर रहेगा।

इसके अलावा इस हफ्ते औद्योगिक उत्पादन (आइआइपी), खुदरा और थोक मुद्रास्फीति के आंकड़े भी आने हैं। रेलिगेयर ब्रोकिंग के वीपी रिसर्च अजित मिश्रा ने कहा, 'तिमाही नतीजों, आइआइपी व मुद्रास्फीति के आंकड़ों के अलावा मानसून की प्रगति पर भी निवेशक निगाह रखेंगे।' उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण के मामलों और नए वैरिएंट के प्रसार की खबरें भी असर डालेंगी। देश में पिछले कई दिन से दैनिक संक्रमण के मामले 40 हजार के आसपास लगभग स्थिर हैं। मामलों के गिरावट नहीं आने से चिंता बढ़ी है।

शेयर समीक्षा



- आइआइपी और मुद्रास्फीति के आंकड़े डालेंगे असर
- कोरोना संक्रमण के दैनिक मामलों ने भी बढ़ाई है चिंता

कोटक सिक्युरिटीज के एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट (इक्विटी टेक्निकल रिसर्च) श्रीकांत चौहान ने कहा कि कच्चे तेल की कीमतों, बांड यील्ड और वायरस का प्रसार निवेशकों की धारणा बदल सकते हैं। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 98.48 अंक के नुकसान में रहा था। रिलायंस सिक्युरिटीज के स्ट्रेटजी हेड बिनोद मोदी ने कहा, 'हमारे विचार में मानसून की प्रगति, पहली तिमाही के नतीजों और कोविड-19 के रुख से निकट भविष्य में बाजार की दिशा तय होगी।'

एफपीआइ ने इक्विटी से की 2,249 करोड़ की निकासी : विदेशी पोर्टफालियो निवेशकों (एफपीआइ) ने जुलाई में पहले सात कारोबारी सत्रों में इक्विटी मार्केट से 2,249 करोड़ रुपये की निकासी की है। इसी दौरान उन्होंने डेट मार्केट में 2,088 करोड़ रुपये का निवेश किया। इस तरह, एफपीआइ 161 करोड़ रुपये के शुद्ध बिकवाल रहे।

मार्निंगस्टार इंडिया के एसोसिएट डायरेक्टर (प्रबंधक शोध) हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा कि इसकी मुख्य वजह एफपीआइ द्वारा मुनाफावसूली है, क्योंकि इस समय बाजार अपने शीर्ष पर हैं। जून में एफपीआइ 13,269 करोड़ रुपये के शुद्ध निवेशक रहे थे। अप्रैल और मई में उन्होंने निकासी की थी।

राष्ट्रीय फलक

जागरण विशेष

300 रुपये के बीज से 70 एकड़ तक फैली जड़ी-बूटियों की खेती

35 साल का युवा किसान बना उदाहरण, लीज की जमीन पर लहलहा रही उम्मीदों की फसल

संदीप तिवारी • रायपुर

छत्तीसगढ़ में बेमेतरा जिले के नवागढ़ गांव के प्रगतिशील किसान किशोर राजपूत की जड़ी-बूटियों की खेती की खुशबू दिल्ली और कोलकाता की मंडियों में बढ़ती जा रही है। छह साल पहले मात्र दो एकड़ पुश्तैनी जमीन पर 300 रुपये के तुलसी के बीज से शुरू हुई उन्नति गाथा अब 70 एकड़ में फैल चुकी है। मात्र 12वीं पास 35 वर्षीय किशोर की प्रेरणा से आसपास के गावों के 100 से अधिक किसान औषधीय खेती से जुड़ चुके हैं। किशोर का वार्षिक शुद्ध मुनाफा 10 से 12 लाख रुपये तक पहुंच गया है।

ऐसे शुरू हुई उन्नति यात्रा : किशोर की पुश्तैनी दो एकड़ जमीन से परिवार का पालन नहीं हो पा रहा था। चिंता रहती थी कि दो एकड़ जमीन में वर्ष में एक बार धान उत्पादन से क्या होगा। माता-पिता, पत्नी व बच्चों की जिम्मेदारी कैसे पूरी होगी। इसी बीच किशोर ने रायपुर स्थित इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में औषधीय खेती की प्रशिक्षण कार्यशाला में हिस्सा लिया। संभावनाएं जगीं। खुद के प्रति भरोसा पैदा हुआ। इसी के साथ शुरू हो गई उन्नति की यात्रा। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एसके पाटिल गर्व के साथ कहते हैं कि ऐसे मेहनती युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर समाज में बदलाव के अग्रदूत बन रहे हैं। आने वाले समय में खेती के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिलेगा।

दोस्त की मदद से लीज पर ली जमीन : किशोर का गांव रायपुर से करीब 100 किमी दूर है। उन्होंने दोस्त राकेश साहू की मदद से गांव से 30 किमी दूर 70 एकड़ जमीन लीज पर ली है। इनमें 25 एकड़ में तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ (चिरैता), गिलोय, पाषाणभेद, केवाच, काली हल्दी, सर्पगंधा, नींबूघास आदि की खेती कर रहे हैं। 35 एकड़ में काला धान (ब्लैक राइस), पांच एकड़ में सामान्य धान, पांच एकड़ में गन्ने की खेती कर रहे हैं। दो साल से करीब 30 क्विंटल औषधीय उत्पाद दिल्ली, गुजरात और बंगाल की कंपनियों को बेच रहे हैं। औषधीय खेती शोध संस्थान में गांव के 30 युवकों व महिलाओं को रोजगार भी दे रहे हैं।

इस साल 100 एकड़ तक लक्ष्य : किशोर राजपूत बताते हैं कि कोरोना काल में औषधीय खेती की मांग बढ़ गई है। साल 2021-22 में एक करोड़ रुपये के टर्न ओवर का लक्ष्य रखा है। इस बार कंपनियों ने खस, पामारोज, जीरेनियम, विष्णुकांता, वच, पिपली की खेती करने के लिए आग्रह किया है। ऐसे में खेती का रकबा बढ़ाकर 100 एकड़ करने की तैयारी कर रहे हैं।

सुबह पांच बजे से शुरू हो जाता है काम : किशोर सुबह पांच बजे से उठकर नित्यकर्म करने के बाद आठ बजे तक खेत पहुंच जाते हैं। 70 एकड़ के रकबे में प्रतिदिन निगरानी संभव नहीं है, इसलिए कार्यक्रम तय करके कुछ जगह मोटरसाइकिल से तो कुछ जगह पैदल जाते हैं और शाम पांच बजे घर लौटते हैं।


बेमेतरा जिला स्थित अपने खेत में किशोर राजपूत (गुलाबी शर्ट में) • जागरण

100 किसान परिवार भी जुड़े

किशोर राजपूत से करीब 100 किसान परिवार जुड़ चुके हैं। किसान अपनी उपज को बेचने और तकनीकी मदद के लिए उनके पास पहुंचते हैं। औषधीय खेती करने वाले किसानों से किशोर का बेहतर संपर्क कायम हो चुका है। खासकर तुलसी का उत्पादन करने वाले किसान इनसे सीधे जुड़े हैं। राज्य में ही कुछ कंपनियां तुलसी का अर्क बनाती हैं। इसके लिए सीधे किशोर से संपर्क करती हैं।



परंपरागत खेती में मौसम की मार झेलनी पड़ती थी। कभी पानी की कमी तो कभी बाढ़ से नुकसान हो जाता था। पशु भी नुकसान पहुंचाते थे। औषधीय खेती में मुनाफा भी ज्यादा है और परेशानियां कम हैं।
किशोर राजपूत, प्रगतिशील किसान

इस खबर को विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें

यूकाडा को कंपनी बनाने की तैयारी

राज्य ब्यूरो, देहरादून : उत्तराखंड में हेली सेवाओं का संचालन कर रहे उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण (यूकाडा) को कंपनी बनाने पर विचार चल रहा है। इसका कारण यूकाडा का सोसायटी एक्ट में रजिस्टर्ड होना है। यूकाडा चारधाम में हेली सेवाओं समेत अन्य सेवा प्रदान कर खासा मुनाफा कमा रहा है। मगर आयकर जमा नहीं हो रहा है। आयकर विभाग द्वारा आपत्ति जताने के बाद इसे कंपनी बनाने पर विचार किया जा रहा है। देखा जा रहा है कि यूकाडा के वर्तमान स्वरूप में ही इसे आगे बढ़ाना बेहतर होगा अथवा इसे कंपनी में बदल दिया जाए।

उत्तराखंड की विषम भौगोलिक स्थिति के कारण आवाजाही का प्रमुख साधन सड़क ही रही है। आपदा के समय बचाव कार्य व चारधाम यात्रा तथा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य में हवाई सेवा को आवश्यक माना गया। इसके लिए मई, 2013 में यूकाडा की स्थापना की गई।

ग्रेनाइट से संरक्षित होगी राम मंदिर की आधारभूमि



रमाशरण अवस्थी, अयोध्या

राम मंदिर की आधारभूमि ग्रेनाइट से संरक्षित होगी। मंदिर की आधारभूमि को ग्रेनाइट से आच्छादित करने का मकसद मंदिर की नींव को पानी से बचाना है। मंदिर की आधारभूमि मुख्यतया चुनार के लाल पत्थर से निर्मित होनी है, किंतु लाल पत्थर पानी अवशोषित करने वाले माने जाते हैं और ऐसे में आधारभूमि के नीचे की नींव को पानी के स्राव से पूरी तरह बचाने के लिए ग्रेनाइट की दो-दो फीट मोटी तीन परत बिछाई जाएगी।

इसी के साथ ही मंदिर की आधारभूमि से लेकर नींव की मजबूती का पुख्ता प्रबंध परिभाषित हो रहा है। चार सौ गुणे तीन सौ वर्ग फीट के भू क्षेत्र को 40 फीट की गहराई तक खनन कर पत्थर की मोटी गिट्टी, सीमेंट और कोयले की राख के मजबूत मिश्रण से उसे भरा जा रहा है। नींव की भराई पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर की जा रही है और उसे परत दर परत जमाया जा रहा है। नींव की प्रत्येक परत एक फीट मोटी बिछाई जा रही है। इसके बाद उस पर बेहद वजनी रोलर से प्रेशर दिया जाता है और एक फीट की परत जब दब कर 10 इंच की रह जाती है, तब अगली परत का निर्माण शुरू होता है। नींव में ऐसी 44 से 45 परत बिछाई जानी है। अब तक 18 परत का निर्माण हो चुका है और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट नींव की भराई के साथ आगे ऊपर नींव की ही तरह पुख्ता आधारभूमि निर्मित कराने की तैयारी भी शुरू कर चुका है।

तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपतराय के अनुसार कार्यदायी संस्था एल एंड टी सहित टाटा कंसल्टेंसी इंजीनियरों के अलावा कई अन्य दिग्गज विशेषज्ञों के सुझाव से नींव की भराई के बाद कंक्रीट की दो मीटर ऊंची परत बिछाई जाएगी और इसी परत पर ग्रेनाइट की दो फीट मोटी तीन परतें बिछेंगी, ताकि नींव में रंचमात्र भी पानी रिसने की आशंका को समाप्त किया जा सके। ग्रेनाइट बिछाए जाने के बाद चुनार के लाल पत्थर की कई परतों के साथ राममंदिर की करीब 20 फीट ऊंची आधारभूमि तैयार होगी और उस तक पहुंचने के लिए आकर्षक सोपान होंगे। इसी आधार भूमि पर तय मानचित्र के अनुरूप भव्य मंदिर का निर्माण होना है।

ललितपुर या बेल्लारी से लाया जाएगा ग्रेनाइट : आधारभूमि की ग्रेनाइट मंगवाने के लिए तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट दो विकल्पों पर विचार कर रहा है। आसान विकल्प यह है कि उत्तर प्रदेश में ही स्थित ललितपुर की खदानों से ग्रेनाइट मंगवाया जाए। हालांकि, ललितपुर की ग्रेनाइट के मुकाबले कर्नाटक स्थित बेल्लारी की खदान से प्राप्त ग्रेनाइट कहीं अधिक गुणवत्ता वाला माना जाता है और यदि मंदिर निर्माण के अन्य आयाम की तरह इस मामले में भी गुणवत्ता को वरीयता दी गई, तो बेल्लारी से ग्रेनाइट मंगाया जाना तय माना जा रहा है।

दृढ़ हो रहा भरोसा, बढ़ रही निधि समर्पण की रकम

प्रवीण तिवारी, अयोध्या

राम मंदिर निर्माण के लिए बढ़ रही समर्पित धनराशि से भक्तों का भरोसा स्वयं व्यक्त हो रहा है। कोरोना कर्फ्यू के बाद जैसे-जैसे स्थिति सामान्य हो रही हैं वैसे-वैसे रामभक्तों के अयोध्या पहुंचने का सिलसिला भी बढ़ रहा है। श्रद्धालु रामलला का दर्शन पूजन कर नकद धनराशि समर्पित कर रहे हैं। माह भर में नकद समर्पण राशि का आंकड़ा औसतन एक लाख पहुंच गया। इसके अतिरिक्त चेक के माध्यम से भक्त सहयोग दे रहे हैं। एक भक्त ने 50 लाख रुपये का चेक भेजा तो सेना के एक कैप्टन ने 11 लाख का चेक दिया। इसी तरह मध्यप्रदेश, मुंबई, गुजरात से कई भक्तों ने पांच लाख से लेकर एक लाख रुपये तक का चेक भेजा है। ट्रस्ट कार्यालय के प्रभारी प्रकाश गुप्त कहते हैं कि मंदिर निर्माण के लिए भक्त खूब सहयोग कर रहे हैं। रोज औसतन करीब एक लाख रुपये नकद आते हैं। बताया कि 11 हजार से एक लाख तक के चेक बड़ी संख्या में आए हैं। कोविड काल में रामलला के दानपात्र में 14 लाख रुपये मिले। इस धनराशि की गिनती बैंक कर्मचारी करते हैं।

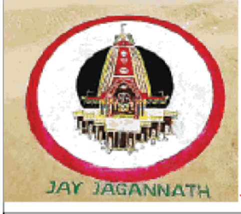
आज निकलेगी महाप्रभु की रथयात्रा

जागरण टीम, पुरी

कोरोना संक्रमण की वजह से पिछले साल की ही तरह इस वर्ष भी जगन्नाथ धाम पुरी में सोमवार को बिना भक्तों के ही महाप्रभु जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा निकाली जाएगी। रथयात्रा में प्रशासनिक अनुमति से केवल निर्धारित संख्या में भगवान जगन्नाथ के सेवक तथा पुलिस प्रशासन के कुछ अधिकारी शामिल होंगे। शनिवार को ही क्षेत्र के लाज और होटल खाली करा दिए गए और सभी प्रवेश मार्गों को सील कर दिया गया। रविवार की रात आठ बजे से अगले 48 घंटे (मंगलवार की रात आठ) तक के लिए शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया है। इस दौरान बड़दांड (मंदिर के सामने का चौड़ा रास्ता) क्षेत्र पर जल, थल एवं नभ से सुरक्षाबल की निगाह रहेगी।

शहर को 12 जोन में बांटा : पूरे पुरी शहर पर नजर रखने के लिए शहर को 12 जोन में बांटा गया है। शहर में 65 प्लाटुन पुलिस बल, 10 अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, 31 पुलिस उपाधीक्षक तथा सहायक कमांडेंट समेत भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। समुद्र तट पर लाइफ गार्ड के जवान तैनात किए गए हैं। 20 सीसीटीवी कैमरे के अलावा ड्रोन कैमरे से पूरे क्षेत्र पर निगाह रखी जाएगी और सिंहद्वार से गुंडिचा मंदिर (भगवान की मौसी के घर) तक छतों के ऊपर सशस्त्र बल की तैनाती की गई है। पूरे शहर के चप्पे-चप्पे पर पुलिस की नजर है।

भगवान जगन्नाथ के रथ की सबसे बड़ी सैंड आर्ट



प्रख्यात सैंड आर्टिस्ट पद्मश्री से सम्मानित सुदर्शन पटनायक ने ओडिशा के पुरी में समुद्र तट पर रेत से भगवान जगन्नाथ के नंदीघोष रथ की थ्रीडी कलाकृति बनाई है। 43.3 फीट लंबी और 35 फीट चौड़ी रथ की यह दुनिया की सबसे बड़ी कलाकृति है। इसे बनाने में आठ घंटे का वक्त लगा। पटनायक ने विभिन्न संगठनों से सबसे बड़ी इस कलाकृति को स्थायी रूप से स्थापित करने की अपील भी की है। एएनआइ

विधि-विधान के साथ रथखला से सिंहद्वार तक लाए गए रथ

रविवार की सुबह महाप्रभु की मंगल आरती, अवकाश पूजा, सूर्य पूजा, द्वारपाल पूजा आदि की प्रक्रिया विधि-विधान से संपन्न हुई। मुख्य महाराणा (बढ़ई) ने तीनों रथ सेवकों को अर्पित कर दिए। सबसे पहले भगवान जगन्नाथ जी का नंदीघोष रथ, फिर देवी सुभद्रा का दर्प दलन रथ एवं अंत में बड़े भाई बलभद्र के तालध्वज रथ को खींचकर सिंहद्वार के सामने लाया गया।

100 साल से अधिक उम्र के लोगों की आबादी 5.73 लाख के पार हो चुकी है दुनिया में। यूएन का अनुमान है कि 2050 तक यह संख्या लगभग 37 लाख हो जाएगी।

अंतरिक्ष की सैर कर लौटे ब्रेनसन

वर्जिन ग्रुप के संस्थापक रिचर्ड ब्रेनसन रविवार को अंतरिक्ष की सैर करके सुरक्षित वापस लौट आए। वर्जिन गैलेक्टिक के यूनिटी रॉकेट प्लेन के माध्यम से वह अंतरिक्ष के किनारे तक गए। प्लेन ने रात 8:16 बजे (भारतीय समय के मुताबिक) न्यू मैक्सिको से उड़ान भरी। वर्जिन समूह ने अपने आधिकारिक इंटरनेट मीडिया अकाउंट पर बताया कि पहले शाम 6:30 बजे उड़ान भरनी थी, लेकिन खराब मौसम के चलते लांचिंग का वक्त डेढ़ घंटे आगे बढ़ा दिया गया। उनके इस सफर को देखने के लिए टेस्ला के सीईओ एलन मस्क भी पहुंचे थे।



वीएसएस यूनिटी में दाखिल होते हैं रिचर्ड ब्रेनसन ● एपी

15 किलोमीटर बाद रॉकेट से अलग हुआ यूनिटी

दरअसल, वीएसएस यूनिटी किसी रॉकेट का हिस्सा नहीं था। बल्कि कंपनी के वीएमएस ईव पर सवार होकर उसने उड़ान भरी। 15 किमी ऊपर जाने के बाद यूनिटी अलग हो गया और उसका इंजन मैक-3, 3704.4 किमी/घंटा की रफ्तार से करीब 90-100 किमी की ऊंचाई तक गया। लगभग 55 मिनट की यात्रा के अंदर पूरा मिशन समाप्त हो गया। यह चौथी बार है जब कंपनी मानव को अंतरिक्ष में लेकर गई है। हालांकि पहली बार पर्यटकों को अंतरिक्ष में भेजा गया।

छह यात्रियों में एक भारत की बेटी भी

भारत की शिरिषा बांदला भी ब्रेनसन के साथ अंतरिक्ष गई थीं। आंध्र प्रदेश के गुंटूर में जन्मीं और टेक्सास के ह्यूस्टन में पली-बढ़ी शिरिषा ने ब्रेनसन और पांच अन्य सदस्यों के साथ न्यू मेक्सिको से अंतरिक्ष के सिरे तक का सफर किया। वर्जिन गैलेक्टिक पर बांदला के प्रोफाइल के मुताबिक उनकी यात्री संख्या 004 थी और उड़ान के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष यात्रियों पर होने वाले असर का अध्ययन किया। सुनीता विलियम्स और कल्पना चावला भी अंतरिक्ष में जा चुकी हैं।

सिर्फ पांच साल तक भारत में रहीं हैं शिरिषा

भारत में शिरिषा केवल पांच साल तक ही रही हैं। उन्होंने पर्ड्यू यूनिवर्सिटी से एयरोनॉटिकल/एस्ट्रोनॉटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक के बाद जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी से एमबीए की डिग्री ली है। वे बचपन से ही अंतरिक्ष जाना चाहती थीं लेकिन दृष्टि कमजोर होने से वे पायलट नहीं बन सकीं।

जोखिम भरा रोमांच

इस अंतरिक्ष यात्रा ने नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। इसकी सफलता ने ब्रेनसन के अंतरिक्ष की सैर कराने वाले व्यावसायिक सपने को पंख लगा दिए हैं। वर्जिन गैलेक्टिक का एक रॉकेट प्लेन 2014 में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

चालक दल और यात्री

- वर्जिन गैलेक्टिक के अंतरिक्ष यान ने छह यात्रियों के साथ उड़ान भरी थी, जिसमें दो चालक दल और चार यात्री शामिल थे।
- बेजोस के ब्लू ओरिजिन का कैप्सूल छह यात्रियों को ले जा सकता है। यह बिना किसी सहायता के उड़ान भर सकता है। स्पेसएक्स ड्रैगन कैप्सूल सात को ले जा सकता है।

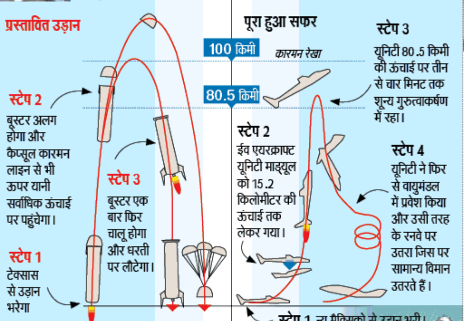


मैं यूनिटी 22 के अद्भुत क्रू और एक ऐसी कंपनी का हिस्सा बनने के लिए अविश्वसनीय रूप से सम्मानित महसूस कर रही हूं जिसका मिशन सभी के लिए अंतरिक्ष को उपलब्ध कराना है। -शिरिषा बांदला



जब मैं पांच साल का था तभी से अंतरिक्ष में जाने का सपने देखता था। 20 जुलाई को मैं अपने भाई के साथ इस यात्रा पर जाऊंगा। मेरे दोस्त के लिए यह यात्रा रोमांच से भरी होगी। -जेफ बेजोस

सपने देखना मेरी आदत में शुमार है। मेरी मां हमेशा कहती थीं कि कोशिश करना कभी मत छोड़ो। लगातार मेहनत से सितारों में भी पहुंचा जा सकता है। 11 जुलाई वह दिन रहा जब मेरा सपना वर्जिन गैलेक्टिक के माध्यम से वास्तविक धरातल पर उतरा। -रिचर्ड ब्रेनसन





26 हजार करोड़ का हो जाएगा स्पेस टूरिज्म

रॉयटर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2030 तक स्पेस टूरिज्म मार्केट 3 बिलियन डॉलर, यानी करीब 26 हजार करोड़ रुपए का होने जा रहा है।



खर्च करनी होगी भारी-भरकम धनराशि

बेजोस, ब्रेनसन और मस्क अपने अंतरिक्ष स्टार्टअप में अरबों डॉलर का निवेश कर रहे हैं। प्रत्येक ने ग्राहकों को अंतरिक्ष यात्रा कराने का वादा किया है। इस यात्रा का हिस्सा बनने के लिए भारी भरकम धनराशि खर्च करनी होगी। ब्रेनसन के वर्जिन गैलेक्टिक के पास पहले से ही 600 से अधिक टिकट बुक हो चुके हैं, जिसकी कीमत लगभग 250,000 अमेरिकी डॉलर (1 करोड़ 86 लाख रुपये से अधिक) है। कंपनी को उम्मीद है कि वह 2022 में एक पूर्ण वाणिज्यिक सेवा शुरू कर देगी। अगर ऐसा होता है तो भविष्य में टिकट की कीमत लगभग 40,000 डॉलर तक कम हो सकती है।



एलन मस्क

ढाई अरब खर्च कर बेजोस संग करेंगे यात्रा

रॉयटर के मुताबिक अभी तक एक अज्ञात व्यक्ति ने जेफ बेजोस के ब्लू ओरिजिन के पहले सबऑर्बिटल मिशन में से एक सीट हासिल की है। जो 20 जुलाई को 28 मिलियन डॉलर (करीब ढाई अरब रुपये अधिक) की नीलामी बोली के साथ निर्धारित की गई है।

आइएसएस तक ले जा चुका है स्पेसएक्स

टेस्ला कंपनी के मालिक एलन मस्क का स्पेसएक्स राकेट पहले ही एक चालक दल को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर ले जा चुका है। उनकी योजना सितंबर में एक नागरिक दल को स्पेस में भेजने की है। मस्क ने यह भी कहा है कि स्पेसएक्स जापानी अरबपति युसाकु मेजावा को 2023 में आगामी स्टारशिप रॉकेट के साथ चंद्रमा के चारों ओर घुमाएगी। (इनपुट जेएनएन)

तालिबान का चार जिलों पर और कब्जा

अफगानिस्तान में संघर्ष ▸ कंधार प्रांत का एक अहम जिला भी तालिबानियों के नियंत्रण में

सुरक्षा बलों के समर्थन में खड़े होने लगे मिलीशिया ग्रुप, पाकिस्तान परेशान

काबुल, एएनआइ: अफगानिस्तान में तालिबान तेजी से अपना विस्तार कर रहा है। गत 24 घंटे के अंदर उसने चार और जिलों पर कब्जा कर लिया। इसमें कंधार प्रांत का एक अहम जिला शामिल है। तालिबान से लड़ाई के लिए अफगान सेना के समर्थन में कई मिलीशिया ग्रुप ने भी हथियार उठा लिए हैं। टोलो न्यूज के अनुसार तालिबान ने परवान प्रांत के सुरखी परसा, शेख अली जिलों के साथ ही कंधार प्रांत के शोरबाक व लगमन प्रांत के अलीशेंग जिले पर कब्जा कर लिया है। शोरबाक कंधार शहर से 110 किमी. दूर है।

रक्षा मंत्रालय ने कहा है कि उत्तरी अफगानिस्तान में दो जिलों अली अबाद और यफ्ताल को सुरक्षा बलों ने तालिबान के कब्जे से मुक्त करा लिया है। तालिबान ने ताखर प्रांत के तालुकान शहर पर कब्जे का प्रयास किया, जिसे सुरक्षा बलों ने विफल कर दिया। यहां संघर्ष में 18 आतंकी मारे गए। तालिबानी आतंकियों ने गजनी में कई सुरक्षा चौकियों पर हमले किए, लेकिन सुरक्षा बलों ने उनको खदेड़ दिया।

बिगड़े हालात के बीच अफगानिस्तान ने खोस्त प्रांत में नए अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन किया है। इसके उद्घाटन में राष्ट्रपति अशरफ गनी मौजूद थे। पाकिस्तान के काबुल में दूत मंसूर अहमद खान ने कहा है कि तालिबान के खिलाफ अफगानिस्तान में जगह-जगह मोर्चा लेने को तैयार हो रहे मिलीशिया ग्रुप चिंता का सबब बन गए हैं। इससे हिंसाग्रस्त देश गृह युद्ध की ओर बढ़ रहा है। ज्ञात हो कि पूर्व मुजाहिदीन नेता और जमात-ए-इस्लामी के वरिष्ठ सदस्य इस्माइल खान ने मिलीशिया ग्रुप को अफगान सरकार की मदद के लिए हथियारबंद होकर खड़े हो जाने की अपील की है। इस्माइल खान ने 2001 में तालिबान को देश से खदेड़ने में मदद की थी। तालिबान के खिलाफ लड़ाकों का तैयार होना शुरू हो गया है।



अफगानिस्तान के हेरात प्रांत में अफगान सुरक्षा बलों और तालिबान के बीच जारी संघर्ष के दौरान अपने घरों को छोड़कर सुरक्षित ठिकानों की ओर जातीं महिलाएं। एएफपी

चीन ने कहा, अफगान समस्या का मुख्य अपराधी अमेरिका : एएनआइ के अनुसार चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा, अफगान समस्या का मुख्य अपराधी अमेरिका है। अमेरिका ने अपनी सेना की वापसी बिना किसी योजना के बना ली, जिसके कारण हिंसाग्रस्त देश में गृह युद्ध के आसार बन गए हैं।

इधर पाकिस्तानी प्रकाशन ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि चीन के विदेश मंत्री अफगान समस्या पर वार्ता करने के लिए भारत, रूस, पाकिस्तान सहित मध्य एशिया के देशों के साथ शंघाई कोआपरेशन आर्गनाइजेशन की अगले सप्ताह बैठक बुला रहे हैं।

चीन ने अपने नागरिकों को वापस बुलाया

हिंसा बढ़ने के साथ ही चीन ने अपने नागरिकों को अफगानिस्तान से बाहर निकालना शुरू कर दिया है। एक विशेष उड़ान के जरिए ऐसे यात्रियों को चीन ले जाया गया। चीन में उतरे यात्रियों में से 22 लोग कोरोना पाजिटिव मिले हैं।

पाकिस्तान शांति प्रक्रिया का सूत्रधार, गारंटर नहीं

प्रेट्र के अनुसार पाकिस्तानी सेना के मेजर जनरल बाबर इफ्तिखार ने कहा है कि पाक अफगान में शांति प्रक्रिया का सूत्रधार है, लेकिन गारंटर नहीं है। वर्तमान हालात में शरणार्थी संकट पैदा हो गया है। पाक ने इससे निपटने के लिए पहले ही योजना तैयार कर ली है।

पाक में शव यात्रा में तालिबानी झंडे लहराए, नारेबाजी

आइएएनएस के अनुसार, पेशावर में एक शव यात्रा में शामिल लोगों ने इस्लामिक अमीरात आफ अफगानिस्तान यानी तालिबान के झंडे लहराए और नारेबाजी की। पुलिस के आईजी मोहज्जम जहान अंसारी ने बताया कि तालिबान समर्थकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

जुमा के जेल जाने पर भड़की हिंसा



जैकब जुमा फाइल/इंटरनेट मीडिया

जोहानिसबर्ग, रायटर : दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा को जेल भेजे जाने पर देश के आर्थिक केंद्र जोहानिसबर्ग में भारी हिंसा भड़क गई है। रातभर दुकानें लूटी गईं और एम2 हाईवे के हिस्से को बंद करना पड़ा। हिंसा के दौरान कई जगह आगजनी की घटनाएं भी हुईं। इस बीच, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है। राष्ट्रपति के कार्यकारी प्रवक्ता ने बताया कि स्वाजुलु नटल में हिंसा के दौरान लोगों ने राजमार्ग एन3, एन2 और एम7 पर कई ट्रक और टायर जलाए। हिंसक भीड़ ने भारी तोड़फोड़ करके सार्वजनिक संपत्ति को भी भारी नुकसान पहुंचाया है। भ्रष्टाचार के आरोप में 15 महीने की सजा काटने जेल गए पूर्व राष्ट्रपति जुमा को छोड़ने की मांग करने वाले उनके समर्थकों ने 'फ्री जुमा' के नारे लगाए। साथ ही सड़कों को अवरुद्ध करके जाम लगाया और कारों और 25 ट्रकों को आग के हवाले कर दिया। पुलिस ने हिंसा करने वाले कई लोगों को पहले ही गिरफ्तार कर लिया है।

चीन के कर्ज के जाल में फंसने को तैयार नहीं बांग्लादेश

ढाका, एएनआइ : पाकिस्तान और श्रीलंका से इतर पड़ोसी देश बांग्लादेश ने चीन के दबाव या बहकावे में आने से साफ इन्कार कर दिया है। उसने चीन की महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड को तो नजरअंदाज किया ही है, उसके कर्ज के जाल में फंसने से बचने के लिए बांग्लादेश ने अपने यहां मैक्रो-इकोनामिक मैनेजमेंट (व्यापक आर्थिक प्रबंधन) कर लिया है।

दक्षिण एशिया डेमोक्रेटिक फोरम (एसएडीएफ) की ओर से पालो कसाका ने बांग्लादेश प्रशासन को सावधान करते हुए कहा कि वह बीआरआइ (बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव) में अपनी साझेदारी से भू-राजनीतिक निर्भरता का शिकार हो सकता है। चीनी निवेश से गहरे समुद्री बंदरगाहों में भावी चीनी नौसैनिक बेड़े को भी बांग्लादेश ने ठुकरा दिया है। उसने सोनादिया डीप सी प्रोजेक्ट को भी रद कर दिया है। बांग्लादेश ने पायरा स्थित एक बंदरगाह के प्रोजेक्ट को ही रद किया है। इस स्थान पर केवल 75 किलोमीटर लंबी नहर के जरिये ही पहुंचा जा सकता है। इसीलिए यह नौसैनिक अड्डा बनाने के लिए मनमाफिक जगह है।

बांग्लादेश ने विगत 15 अक्टूबर, 2016 को चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में रहने का फैसला लिया था। जिस दौरान यह निर्णय लिया गया चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग बांग्लादेश दौरे पर थे। दोनों देशों ने तब रणनीतिक साझेदारी बढ़ाने पर भी सहमति जताई थी। उस समय बांग्लादेश में चीन ने पाकिस्तान के बाद दूसरे स्थान पर सबसे बड़ा निवेश किया था।

चाइना डेली की रिपोर्ट के अनुसार एसएडीएफ ने कहा कि वैश्विक महामारी के बावजूद भी चीनी निवेश में कोई कमी नहीं है। बल्कि यह धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा है। विशेष आर्थिक जोन बनाने के अलावा पदमा नदी पर एक नई रेलवे क्रासिंग बनाने की भी योजना है, लेकिन इस परियोजना में कई बाधाएं हैं। पायरा पावर प्लांट को लेकर स्थानीय मजदूरों और चीनी प्रशासन के बीच संघर्ष जारी है।

नहीं दिया भाव

- बांग्लादेश सरकार ने मैक्रो इकोनामिक मैनेजमेंट को दुरुस्त किया
- महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड को भी नजरअंदाज किया



फाइल/इंटरनेट मीडिया

चीन में एमबीबीएस करने वाले भारतीय छात्रों का भविष्य संकट में

बीजिंग, प्रेट्र : डाक्टर बनने का सपना लेकर चीन में एमबीबीएस करने वाले हजारों भारतीय छात्रों का भविष्य संकट में है। पिछले साल सर्दियों में कोरोना के कारण अपने देश लौटे ये छात्र यात्रा प्रतिबंधों के हटने का इंतजार कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आनलाइन पढ़ाई तो चल रही है, लेकिन प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के बिना उनकी शिक्षा पर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है।

चीन के शियान जियाओतोंग विवि में एमबीबीएस द्वितीय वर्ष की छात्रा रिचा सिंह का कहना है कि मैं आनलाइन क्लास कर रही हूं, लेकिन दो साल होने के बाद भी मेरी पढाई से प्रयोगात्मक प्रशिक्षण पूरी तरह से गायब है। 2019 के आंकड़ों के अनुसार भारत के 23 हजार छात्र-छात्रा विभिन्न कोर्स में अध्ययन कर रहे हैं। इनमें से 21 हजार एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहे हैं। चीन ने भारत में कोरोना की स्थिति को खराब बताते हुए अभी यात्रा पर प्रतिबंध लगाया हुआ है। अब ये छात्र-छात्राएं अपना भविष्य बचाने के लिए इंटरनेट मीडिया पर अभियान चला रहे हैं। इन छात्रों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी गुहार लगाई है।

बुगती की विधवा ने इमरान के भतीजे पर हत्या के प्रयास का केस किया

लाहौर, एएनआइ : बलूच नेता अकबर बुगती की विधवा शहजादी नरगिस ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के भतीजे और वकील हसन नियाजी और चार अन्य अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत कई आरोपों में एफआइआर दर्ज कराई है।

पाकिस्तानी अखबार डान की रिपोर्ट के अनुसार हसन नियाजी और उनके साथियों ने सबसे पहले उन्हें उनके वकीलों की मौजूदगी में अपशब्द कहे और फिर उन्हें जान से मारने के इरादे से उनका गला दबाने की कोशिश की। नरगिस लाहौर की एफआइए अदालत में उनके खिलाफ दायर एक फर्जी मामले में जमानत के लिए पेश हुई थीं।

डान के मुताबिक शिकायतकर्ता ने एफआइआर में कहा कि उनके वकीलों के दखल से हसन नियाजी और उनके साथियों समेत हमलावरों का अदालत परिसर में उत्पीड़न किया गया। उल्लेखनीय है कि 26 अगस्त, 2006 को बलूच राष्ट्र के पितामह घोषित अकबर बुगती ने कोल्हू में सैन्य अभियान किया था।

मरियम नवाज ने फटकारा : वहीं, पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) की उपाध्यक्ष मरियम नवाज ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान को कुशासन को फटकारते हुए कहा कि चुनाव चिन्ह अब क्रिकेट बैट की जगह चोर होना चाहिए। पीएमएल-एन के नेता ने कहा कि 2018 में इमरान खान ने क्रिकेट बैट के साथ 'स्टोल द इलेक्शन' भी चुरा लिया था। अब इमरान के नाम का जिक्र केवल वीडियो में होता है।

एफआइए पर उत्पीड़न का आरोप

लाहौर, एएनआइ : पाकिस्तान के विपक्षी नेता शाहबाज शरीफ ने संघीय जांच एजेंसी (एफआइए) पर मनी लांड्रिंग के मामले में उनके खिलाफ जारी जांच में उत्पीड़न किए जाने का आरोप लगाया है। द न्यूज इंटरनेशनल में प्रकाशित समाचार के मुताबिक जांच एजेंसी के खिलाफ विपक्ष के नेता के इन आरोपों को लाहौर कोर्ट में जमानत की याचिका पर सुनवाई के दौरान रखा गया है। हालांकि एफआइए ने इन आरोपों को गलत बताया है।

पाक में कोरोना की चौथी लहर, तेजी से बढ़ रहे मरीज

- स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने दी लाकडाउन लगाने की सलाह
- ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया में डेल्टा वैरिएंट का कहर जारी

इस्लामाबाद, प्रेट्र : पाकिस्तान में कोरोना की चौथी लहर ने दस्तक दे दी है। यहां तेजी से मरीज बढ़ रहे हैं। पिछले 24 घंटों में मई के बाद सबसे ज्यादा नए मरीज सामने आए। विशेषज्ञों का मानना है कि जनता की लापरवाही के कारण मरीजों की संख्या बढ़ी है। पाकिस्तान में पिछले तीन सप्ताह से भी कम समय में नए मामलों में तीन गुना वृद्धि हो गई है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने मरीजों की संख्या में बढ़ोत्तरी और चौथी लहर का जिम्मेदार जनता की लापरवाही को बताया है। उन्होंने सरकार से लाकडाउन लगाने का आग्रह किया है। यह पहला अवसर है, जब पाजिटिव दर चार फीसद से ज्यादा हो गई है। 30 मई को पाजिटिव दर 4.05 दर्ज की गई थी। पाजिटिव दर कुल परीक्षण किए गए लोगों में से पाजिटिव आने वाले मरीजों की संख्या के आधार पर निकाली जाती है।

समाचार एजेंसी एएनआइ के अनुसार विशेषज्ञों ने कहा है कि कोरोना की चौथी लहर का कहर जुलाई के अंत और अगस्त के पहले सप्ताह तक तेजी से बढ़ने लगेगा। आइएएनएस के अनुसार ब्रिटेन में पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमण के 32367 नए मरीज मिले हैं। यहां डेल्टा वैरिएंट ने कहर ढाया हुआ है।

रायटर के अनुसार आस्ट्रेलिया भी डेल्टा वैरिएंट से लड़ाई लड़ रहा है। इस वैरिएंट के कारण मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। सिडनी में लाकडाउन के दौरान पाबंदियां और कड़ी की जा रही है। यहां पिछले शुक्रवार को लाकडाउन खत्म किया जा रहा था, लेकिन डेल्टा के कारण एक सप्ताह के लिए लाकडाउन बढ़ा दिया गया है।



रूस : आइएएनएस के अनुसार एक दिन में 25 हजार से ज्यादा नए कोरोना मरीज मिले हैं।

अल्जीरिया : आइएएनएस के अनुसार यहां के प्रधानमंत्री अयमान बेनाब्दर्रहमान कोरोना पाजिटिव हो गए हैं।

म्यांमार : एपी के अनुसार मरीजों की तेजी से बढ़ती संख्या के कारण अस्पताल आक्सीजन की कमी से जूझ रहे हैं।

स्पुतनिक वैक्सीन करेगी डेल्टा स्ट्रेन से 90 फीसद रक्षा

नोवोसिबिर्स्क, एएनआ : रूस की स्पुतनिक-वी समेत वायरल वेक्टर व एमआरएनए वैक्सीनों से कोरोना वायरस के डेल्टा स्ट्रेन पर काबू पाया जा सकता है।

रूसी अकादमी आफ साइंस (आरएएस) के सदस्य सर्गेई नेतेसोव ने बताया कि ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य देशों के मंगाए डाटा से शोध में पाया गया कि स्पुतनिक-वी समेत एमआरएनए और वेक्टर वैक्सीनों के जरिये डेल्टा वैरिएंट से रक्षा की जा सकती है। उन्होंने शुरुआती चरण में इससे 95 फीसद बचाव होने का दावा किया था और डेल्टा स्ट्रेन से 90 फीसद तक बचाव हो सकता है। उन्होंने कहा कि जो वैक्सीन पहले ही विकसित की जा चुकी है, उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए क्योंकि वह अब भी प्रभावी हैं।

स्पुतनिक-वी वैक्सीन को गमालेया रीसर्च सेंटर की लैब में बनाने वाले जनसंख्या की भिन्नता निर्धारित करने वाले विभागाध्यक्ष व्लादिमीर गुशचिन ने कहा कि कोविड-19 के गंभीर मामलों में रूसी वैक्सीन के डोज को सौ फीसद लाभकारी बताया गया है। रूस ने दुनिया में सबसे पहले कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए अगस्त, 2020 में स्पुतनिक-वी वैक्सीन को पंजीकृत किया था।

चीन में बारिश और बाढ़ का कहर, कई स्थानों पर पुल बहे

- स्थानीय प्रशासन ने सिचआन प्रांत में तूफान आने की भी चेतावनी दी है

शंघाई, रायटर : चीन के सिचुआन प्रांत में जबर्दस्त बारिश और बाढ़ के कारण हजारों लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है। स्थानीय प्रशासन ने बारिश के साथ तूफान की भी चेतावनी दी है। राजधानी बीजिंग में भी भारी बारिश की चेतावनी दी गई है।

सिचुआन प्रांत में शुक्रवार से लगातार बारिश हो रही है। सभी 14 नदियों का जल स्तर तेजी से बढ़ रहा है। यहां कई पुल बह गए हैं। प्रशासन की ओर से लगभग पांच हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है।

अधिकारियों ने बताया कि प्राकृतिक आपदा के चलते तकरीबन एक लाख बीस हजार से ज्यादा लोग प्रभावित हैं। बाझोंग और सिचुआन में हजारों लोग बिना बिजली के रहने को मजबूर हैं। चीन के मौसम विभाग ने यहां बारिश के साथ ही तूफान की भी चेतावनी दी है। कई जगह रेल और हवाई सेवा प्रभावित हुई हैं।

समाचार एजेंसी एएनआइ के अनुसार राजधानी बीजिंग में सभी पर्यटन स्थलों को एहतियातन बंद कर दिए गए हैं। सुरक्षा के लिए आपातकाल लागू कर दिया गया है। ग्लोबल टाइम्स के अनुसार राजधानी बीजिंग में रविवार से ही जबर्दस्त बारिश और तूफान की चेतावनी दे दी गई है। अगले दो दिनों तक 60 से 100 मिलीमीटर वर्षा होने की संभावना है।

कैलिफोर्निया की डेथ वैली में 54.4 डिग्री पहुंचा तापमान

न्यूयॉर्क टाइम्स से

- जून के अंत तक ओरेगन और वाशिंगटन में करीब 200 लोगों की मौत

फर्नेस क्रीक (कैलिफोर्निया) : अमेरिका के अधिकांश पश्चिमी इलाके रिकार्डतोड़ गर्मी का सामना कर रहे हैं और करीब 3.1 करोड़ लोगों को अत्यधिक गर्मी की चेतावनी या परामर्श जारी किया गया है। इस साल गर्मियों में इस क्षेत्र में यह गर्मी की तीसरी लहर है। कैलिफोर्निया की डेथ वैली में शुक्रवार और शनिवार को तापमान 54.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया और रविवार को भी वहां इतना ही तापमान रहने का पूर्वानुमान है। जून के आखिर तक प्रशांत उत्तर-पश्चिम में अत्यधिक तापमान से ओरेगन और वाशिंगटन में करीब 200 लोगों की मौत हो चुकी है। लोग अपने घरों और गली-कूचों को लगातार ठंडा रखने की कोशिश में जुटे हैं।

राष्ट्रीय मौसम सेवा में मौसम विज्ञानी साराह रोगोवस्की ने बताया कि कैलिफोर्निया के कई हिस्सों में दिन का तापमान 38 डिग्री से 49 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। सबसे खतरनाक बात यह है कि रात में भी तापमान अधिक बना रहेगा। शोधकर्ताओं का कहना है कि प्रशांत उत्तर-पश्चिम में पिछले हफ्ते रिकार्डतोड़ तापमान जलवायु परिवर्तन का परिणाम है। जलवायु परिवर्तन ने 1900 से औसत आधारभूत तापमान में करीब एक डिग्री सेल्सयस की बढ़ोतरी की है। विज्ञानियों का कहना है कि पिछली शताब्दियों के मुकाबले गर्मियों का तापमान और अधिक और जानलेवा होने की संभावना है। अत्यधिक गर्मी की चेतावनी अधिकांश कैलीफोर्निया के अलावा एरिजोना, यूटा, ओरेगन और इडाहो के कुछ हिस्सों के लिए जारी की गई है। कैलिफोर्निया में राज्य की विद्युत आपूर्ति संचालन एजेंसी ने गुरुवार को उपभोक्ताओं से अपील की थी कि वे बिजली इस्तेमाल में कमी लाएं ताकि ब्लैकआउट से बचा जा सके। गवर्नर गैविन न्यूसोम ने लोगों से पानी का उपभोग भी घटाने का अनुरोध किया है क्योंकि उन्होंने क्षेत्रीय सूखा आपातकाल लागू कर दिया है।



कैलिफोर्निया राज्य के अधिकांश हिस्सों में इनदिनों हीट वेव चल रही है। यहां डेथ वैली नेशनल पार्क में 54.4 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकार्ड किया गया है। लोग गर्मी से बचने के लिए नदियों, सार्वजनिक फव्वारों और कूलिंग सेंटरों का रुख कर रहे हैं। एएफपी

अमेरिका समेत 21 देशों ने हांगकांग के अखबार की बंदी का विरोध किया

वाशिंगटन, एएनआइ: हांगकांग के एपल डेली अखबार को बलपूर्वक बंद कराए जाने और प्रशासन के अखबार के कर्मचारियों को गिरफ्तार करने के खिलाफ बीस से अधिक देशों ने चिंता जताई है।

मीडिया फ्रीडम कोएलेशन में शामिल आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, आइसलैंड व ब्रिटेन समेत 21 देशों की ओर से जारी बयान में इस कार्रवाई की कड़ी आलोचना की गई है। पिछले महीने ही एपल डेली का अंतिम संस्करण प्रकाशित हुआ था। उसी में अखबार ने बताया था कि दबाव डालकर उन्हें अखबार का प्रकाशन बंद करने के लिए विवश किया गया है। अखबार के संपादकों पर हांगकांग के नए राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के उल्लंघन का आरोप लगाया गया था। पिछले कुछ समय से हांगकांग में चीनी शासन के दबाव में मीडिया पर सख्ती की जा रही है।



टोक्यो ओलंपिक में मुकाबला कड़ा होगा। मैं इसके बारे में नहीं सोच रहा हूं, लेकिन मैं तैयारी कर रहा हूं।
— श्रीहरि नटराज, भारतीय तैराक

दीक्षा का शानदार प्रदर्शन, साथियों के साथ जीता खिताब

लंदन, प्रेट्र : भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर ने अंतिम चार होल में तीन बर्डी के साथ चार अंडर 69 का स्कोर बनाया और टीम साथियों के साथ मिलकर यहां अरेमको टीम सीरीज खिताब जीता। दीक्षा ने कप्तान ओलीविया कोवान, सेरिन शिमिट और एमेच्योर एंड्र्यू केल्सी के साथ मिलकर अपना दूसरा लेडीज यूरोपीय टूर (एलईटी) खिताब जीता। अदिति अशोक के बाद दीक्षा एक एलईटी खिताब जीतने वाली दूसरी भारतीय हैं।



अर्जेंटीना 28 साल बाद चैंपियन



खिताबी मुकाबले में ब्राजील को 1-0 से हराया, मैच का एकमात्र गोल एंजेल डि मारिया ने दागा

रियो डि जेनेरियो, एपी : सुपरस्टार स्ट्राइकर कप्तान लियोन मेसी की अर्जेंटीना ने रविवार को ब्राजील को 1-0 से हराकर कोपा अमेरिका फुटबाल टूर्नामेंट जीत लिया, जो राष्ट्रीय टीम का 28 साल में पहला बड़ा खिताब है। साथ ही यह सुपरस्टार फुटबालर मेसी का भी टीम के साथ पहला बड़ा अंतरराष्ट्रीय खिताब है। अर्जेंटीना ने इस तरह 1993 से चले आ रहे खिताब के सूखे को खत्म किया। मैच का एकमात्र गोल अर्जेंटीना के एंजेल डि मारिया ने दागा।

दो सितारे नहीं कर पाए गोल : मैच में मेसी और नेमार के रूप में विश्व के दो सितारे खेल रहे थे और दोनों से टीमों को गोल करने की उम्मीद थी, लेकिन दोनों ही खिताबी मुकाबले में गोल करने के मौकों को भुना नहीं पाए। नेमार ने खूबसूरत ड्रिबल और पास का नजारा पेश करके ब्राजील को बराबरी दिलाने की कोशिश की, लेकिन मेजबान टीम के स्ट्राइकर अर्जेंटीना के गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज को बामुश्किल परेशान कर पाए। कोच टिटे की ब्राजील टीम ने कोपा अमेरिका के पिछले पांच मुकाबले जीते थे और सभी में गोल दागे थे। वहीं, मेसी को मलाल रहेगा कि वह फाइनल में गोल नहीं कर पाए। उन्होंने हालांकि टूर्नामेंट के दौरान चार गोल किए और पांच गोल करने में मदद की।

कोच स्कोलोनी ने चौंकाया : अर्जेंटीना के कोच लियोन स्कोलोनी ने हैरान करते हुए सेमीफाइनल में कोलंबिया को पेनाल्टी शूटआउट में हराने वाली टीम की शुरुआती एकादश में पांच बदलाव किए। उन्होंने गोंजेलो मोंटिएल, क्रिस्टियन रोमेरो, मार्कोस एकुना, लिएंड्रो पेरेडेस और डि मारिया को शुरुआती एकादश में नाहुएल मोलिना, निकोलस टेगलियाफिको, गुइडो रोड्रिग्ज और निकोलस गोंजालेज की जगह मौका दिया। ब्राजील ने हालांकि अपनी शुरुआती एकादश में कोई बदलाव नहीं किया। हालांकि मेसी इस मैच के लिए पूरी तरह फिट नहीं थे, लेकिन वह तब भी यह मैच खेलने उतरे।

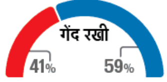
पहला हाफ 1-0 : मैच की शुरुआत अर्जेंटीना के लिए अच्छी रही। रोड्रिगो डि पाल ने डि मारिया की तरफ लंबा पास दिया। 33 साल के इस अनुभवी स्ट्राइकर ने लेफ्ट बैक रेना लोडी की खराब डिफेंडिंग का फायदा उठाते हुए गेंद को अपने कब्जे में लिया और गोलकीपर एंडरसन को छकाते हुए अर्जेंटीना को बढ़त दिला दी। यहां से अर्जेंटीना मैच में 1-0 से आगे हो गया। मेसी ने बाक्स के बाहर से गेंद पर किक लगाई और गेंद गोल पोस्ट के बायीं ओर से चली गई। पहले हाफ में अर्जेंटीना 1-0 से आगे रहा। दूसरे हाफ में 52वें मिनट में ब्राजील के रिचर्लसन ने अर्जेंटीना के गोलकीपर बाक्स के अंदर से गोल करके बराबरी का स्कोर दाग दिया था, लेकिन रेफरी ने इसे आफ साइड करार दे दिया। फिर इसके एक मिनट बाद ही रिचर्लसन ने बाक्स के अंदर से गोल पोस्ट पर गेंद भेजी, लेकिन गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज ने अच्छा बचाव करके ब्राजील को बराबरी करने से रोक दिया। ब्राजील ने अटैक करना जारी रखा और 83वें मिनट में ग्रेबियल बारबोसा को एक पास मिला और उन्होंने शाट भी लगाया, लेकिन मेहमान टीम के खिलाड़ियों ने अच्छा डिफेंस किया। मैच के 89वें मिनट में मेसी गेंद को लेकर बाक्स के अंदर तक चले गए, लेकिन वह गोलकीपर बाक्स में फिसल गए, जिससे गेंद पर नियंत्रण नहीं बना सके और गोलकीपर एडरसन ने गेंद को पकड़ कर ब्राजील को गोल खाने से बचा लिया।

मैं अपनी खुशी को शब्दों में बयान नहीं कर सकता। इससे पहले कई बार मुझे इस स्तर पर झटका लगा है, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि एक दिन तो यह पल आने ही वाला है। मुझे अपनी टीम पर पूरा भरोसा था। ये कमाल की टीम है। पिछली बार हुए कोपा अमेरिका कप के बाद से यह टीम और निखरी है। मुझे अपनी टीम पर गर्व है।
लियोन मेसी, कप्तान, अर्जेंटीना

फुटबाल मैदान की पिच खराब थी। खिलाड़ियों को जोखिम में डाल दिया गया था। बड़े टूर्नामेंट में ऐसा नहीं होना चाहिए। मैं विशेष रूप से जिम्मेदार व्यक्ति, एलेजांद्रो (डोमिंग्वेज़) के बारे में बात कर रहा हूं, जो कानमेबोल के अध्यक्ष हैं। खेल इतना रुक-रुक के हो रहा था। हम खेलना चाहते थे लेकिन फुटबाल के लायक मैदान नहीं था।
टिटे, कोच ब्राजील

मेसी ने मुझे और मैंने उन्हें शुक्रिया कहा। उन्होंने मुझे बताया कि यह हमारा फाइनल था। आज तो ऐसा होना ही था। मैं अपनी बेटियों, अपनी पत्नी, अपने माता-पिता और उन सभी प्रशंसकों के लिए भी खुश हूं जिन्होंने हमारा समर्थन किया। एक विश्व कप जल्द ही आ रहा है और उससे पहले यह जीत काफी मायने रखती है।
एंजेल डि मारिया, अर्जेंटीना खिलाड़ी





अर्जेंटीना		ब्राजील
25	फ्री किक	19
01	कार्नर किक	04
02	गोलकीपर बचाव	01
05	यलो कार्ड	04
345	कुल पास	488

1993 में पिछली बार अर्जेंटीना ने एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय ट्राफी कोपा अमेरिका के रूप में जीती थी। उस समय लियोन मेसी सिर्फ छह साल के थे और एंजेल डि मारिया पांच साल के थे

15 वां कोपा अमेरिका खिताब अर्जेंटीना ने जीता। टीम ने यह खिताब 1921, 1925, 1927, 1929, 1937, 1941, 1945, 1946, 1947, 1955, 1957, 1959, 1991, 1993 और 2021 वर्ष में जीते हैं। वहीं, ब्राजील ने नौ बार यह खिताब जीता है

आखिरकार मेसी ने चूमी ट्राफी

ब्यूनस आयर्स, एपी: फाइनल में चार बार शिकस्त, बड़े टूर्नामेंट में जल्दी बाहर होने की शर्मिंदगी और राष्ट्रीय टीम से संन्यास लेने तक का फैसला करने के बाद अंततः सुपरस्टार स्ट्राइकर लियोन मेसी को अर्जेंटीना ने खुशी के आंसू बहाने का मौका दे ही दिया। मेसी ने 34 की उम्र में कोपा अमेरिका की खिताबी ट्राफी चूम ही ली। उनके शानदार करियर का सबसे बड़ा इंतजार अब खत्म हो गया। मैच के बाद मेसी मैदान पर ही घुटनों के बल बैठ गए और हाथों से अपने चेहरे को ढक लिया। फिर साथी खिलाड़ी मेसी को हवा में उछालते रहे। मेसी को चार गोल करने और पांच गोल में मदद करने के लिए ब्राजील के नेमार के साथ टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी (गोल्डन बूट) चुना गया। मैच के बाद मेसी ने नेमार को गले लगा लिया। दोनों एक साथ स्पेनिश क्लब बार्सिलोना के लिए खेल चुके हैं। फिर मेसी ने स्टेडियम से अपनी पत्नी एंटोनेला रोक्कुजो को वीडियो काल किया। मेसी ने 151 मैचों के साथ अर्जेंटीना की ओर से सर्वाधिक मैच खेलने का रिकार्ड भी बनाया।


खिताबी मुकाबले के बाद नेमार और मेसी भावुक होकर गले मिलते हुए • एपी

नहीं थे पूरी तरह फिट: मेसी सेमीफाइनल और फाइनल चोटिल होकर खेल रहे थे। बार्सिलोना के कोच लियोन स्कालोनी ने कहा कि वह फाइनल के लिए पूरी तरह फिट नहीं थे और उन्होंने यह मैच चोट के साथ खेला। सेमीफाइनल में उनका बायां टखना चोटिल हो गया था और उससे खून निकल रहा था। रविवार तक मेसी अर्जेंटीना की ओर से सिर्फ अंडर-20 विश्व कप और ओलंपिक में स्वर्ण ही जीत पाए थे।

घरेलू क्रिकेट के लिए सात सदस्यीय समिति का गठन

नई दिल्ली, जेएनएन : बीसीसीआइ के सचिव जय शाह ने राज्य संघों को पत्र लिखकर उन्हें अवगत कराया है कि बोर्ड ने भारत में घरेलू क्रिकेट के लिए सदस्य संघों को शामिल करते हुए एक सात सदस्यीय कार्य समूह का गठन किया है।


युद्धवीर सिंह • फाइल फोटो, ट्विटर

समूह में रोहन जेटली (उत्तर क्षेत्र), युद्धवीर सिंह (मध्य क्षेत्र), जयदेव शाह (पश्चिम क्षेत्र), देवजीत सैकिया (उत्तर-पूर्व क्षेत्र), अविषेक डालमिया (पूर्वी क्षेत्र), संतोष मेनन और मुहम्मद अजहरुद्दीन (दक्षिण क्षेत्र) शामिल हैं। बीसीसीआइ पहले ही भारत में घरेलू क्रिकेट की वापसी की घोषणा कर चुका है। आगामी 2021-22 सत्र के लिए पुरुषों और महिलाओं की श्रेणियों में विभिन्न आयु समूहों में कुल 2,127 घरेलू मैच खेले जाने हैं रणजी ट्राफी, जिसे पिछले सत्र में कोविड-19 महामारी के कारण रद कर दिया गया था।

जोकोविक ने जीता 20वां ग्रैंडस्लैम खिताब

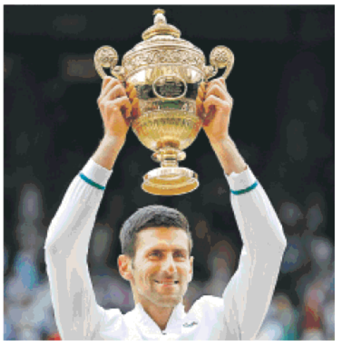
लंदन, एएनआइ : जिस दिन से चला हूं मंजिल पर निगाह है मेरी, आंखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा। उर्दू शायर डा बशीर बद्र की यह पंक्ति नोवाक जोकोविक के 20 ग्रैंडस्लैम जीत के सफर को बयां करती हैं। जिस दिन से जोकोविक ने पहला ग्रैंडस्लैम जीता है, उसके बाद से उन्होंने अपने 20वीं खिताबी जीत पर निगाहें गड़ा रखी थीं। मैच के एक दिन पहले भी उन्होंने कहा था कि उनकी निगाहें 20 ग्रैंडस्लैम जीतना है और मैं यही करने के लिए खेल रहा हूं। इसके साथ ही उन्होंने राफेल नडाल और रोजर फेडरर के 20-20 ग्रैंडस्लैम खिताब की बराबरी कर ली।

रविवार को इटली के मेटेयो बेरेटिनी के खिलाफ विंबलडल का खिताबी मुकाबला 6-7, 6-4, 6-4, 6-3 से जीतकर उन्होंने अपने ग्रैंडस्लैम के कुल खिताबों की संख्या रिकार्ड 20 तक पहुंचा दी। उन्होंने यह मैच तीन घंटे और 27 मिनट में जीता और छठी बार विंबलडन की खिताबी ट्राफी अपने नाम की।

लाल बजरी से घास : ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट से पहले खिलाड़ी अभ्यासी टूर्नामेंट खेलते हैं लेकिन फ्रेंच ओपन जीतने वाले जोकोविक ने लाल बजरी से सीधा विंबलडन की घास पर कदम रखा। लाल बजरी पर खेलना खिलाड़ियों के लिए आसान नहीं है क्योंकि यह काफी थका देने वाला कोर्ट है और वहीं घसियाली सतह पर टेनिस का खेल काफी तेज चलता है जिसमें खुद को ढालना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। लेकिन जोकोविक ने इस चुनौती को स्वीकार किया। वह भले ही घसियाली सतह पर खेलते हुए कई मैचों में फिसल गए हो लेकिन, उन्होंने अपने हाथ से 20वां ग्रैंडस्लैम खिताब नहीं फिसलने दिया। घास का कोर्ट हो या लाल बजरी का जोकोविक के कदम जहां पड़े रहे हैं, वह खिताब जीत रहे हैं। विंबलडन जीतने के बाद उन्होंने कोर्ट से घास तोड़कर खाई भी।

टूर्नामेंट में गंवाए दो सेट : विश्व के नंबर एक खिलाड़ी जोकोविक ने टूर्नामेंट में अपना शुरुआती मुकाबला पहला सेट गंवाने के बाद जीता था और खिताबी मुकाबला भी उन्होंने पहला सेट गंवाने के बाद ही अपने नाम किया। जोकोविक ने पूरे टूर्नामेंट में सिर्फ दो ही सेट गंवाए।

मानसिक तौर पर भी मजबूत : जोकोविक मानसिक तौर पर बहुत ही मजबूत और इसका अंदाजा कई तनावपूर्ण मुकाबलों से देखा जा सकता है। विंबलडन से पहले फ्रेंच ओपन के फाइनल में स्टेफानोस सितसिपास के खिलाफ शुरुआत दो सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करते हुए खिताब अपने नाम किया।


विंबलडन ट्राफी जीतने के बाद खुश नोवाक जोकोविक • रायटर

खिलाड़ी	AO			us open	कुल
फेडरर	6	1	8	5	20
नडाल	1	13	2	4	20
जोकोविक	9	2	6	3	20


सुनील गावस्कर
कलम से

मेरे लिए अविनाशी थे दिलीप साहब

इसमें कोई दो राय नहीं कि यह वास्तव में दुखद समय चल रहा है। कोरोना जैसी भयानक महामारी ने जहां कई लोगों की जिंदगी निगलकर उनके परिवारों को तबाह कर दिया है, वहीं दूसरी तरफ लोगों के पास नौकरियां नहीं हैं और सबकी जेब में कटौती हुई है। इतना ही नहीं, कोरोना के नए मामलों की संख्या को बमुश्किल कम होता देखकर हम सबके अंदर काफी निराशा भी है।

इस गमगीन माहौल में जहां भारतीय सिनेमा के महानायक दिलीप कुमार के देहांत ने हम सबको मन ही मन रोने पर मजबूर कर दिया, जबकि इससे कुछ दिन पहले ही बीसीसीआइ टीवी प्रोडक्शन टीम ने भी अपने एक स्टार सितेंदर निरंकारी (सोनी) को खो दिया। हालांकि यह दोनों मौतें कोरोना की वजह से तो नहीं हुईं, लेकिन इन दोनों घटनाओं ने चौंका जरूर दिया है।

इस दुनिया में सिर्फ दो ही लोग थे जिन्हें मैं अविनाशी समझता था। उनमें से एक मेरे मामा माधव मंत्री थे, जिनका सात साल पहले निधन हो गया और सितंबर में उनकी जन्म शताब्दी है, जबकि दूसरे दिलीप साहब थे। भारतीय सिनेमा में उनके समय ऐसा लगता था कि वह काफी जिंदादिल इंसान हैं। उन्हें कुछ नहीं हो सकता, जिसमें एक या दो बार स्वास्थ्य का खराब होना तो आम बात है। ऐसा प्रतीत होता था कि बढती उम्र भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी और ऐसे ही उनका जलवा कायम रहेगा। हालांकि, अफसोस की बात है कि सर्वशक्तिमान को शायद अपने पास उनकी (दिलीप) जरूरत पड़ी तो उन्होंने हमसे इस महानायक को छीन लिया। मैंने क्रिकेट के प्रति अनुशासन और इस खेल की इज्जत करना अपने मामा या नाना, जो भी मैं उन्हें कहकर बुलाता था, माधव मंत्री से सीखा। उन्होंने मुझे सिखाया कि कोई भी टीम की कैप (टोपी) हो उसे हासिल करना सीखो। इसके अलावा भी उन्होंने मुझे बताया था कि गेंदबाज के सामने अपना विकेट कभी मत फेंको। उस पर एहसान करने की कोई जरूरत नहीं है। आपको बस क्रीज पर समय बिताने का अनुशासन रखना होगा, खेल और इसकी परंपराओं का भी सम्मान करना होगा। वहीं दिलीप साहब से मैंने नम्रता सीखी, जिसका एक पल मुझे याद आता है कि मैं मरीन लाइंस स्टेशन से ठीक पहले अपनी स्कूल बस में था और हमारी बस के ड्राइवर ने उत्साह से बताया कि दिलीप कुमार हमारे सामने कार में थे। हम सभी स्कूली बच्चे बस में आगे आ गए व उनका नाम चिल्लाने लगे और दिलीप साहब अपनी सीट पर मुड़े, हमारी तरफ देखा और इतनी बड़ी मुस्कान की एक लहर दी कि हम सब उनके प्रशंसक हो गए।

उसके बाद भी उनसे कई बार मुलाकातें हुईं और हर बार वह काफी वह एक अद्भुत वक्ता थे, जो अपने शब्दों के चयन से सभी को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उसमें कितनी अंग्रेजी या उर्दू गलत है, इसका किसी को कुछ नहीं पता चलता था। सायरा बानो जी और उनके परिवार व भारतीय सिनेमा के प्रति मैं संवेदना प्रकट करता हूं, जिन्होंने अपना महान नायक खो दिया।

दूसरी तरफ अचानक ही बीसीसीआइ टीवी प्रोडक्शन ने भी अपने एक दिग्गज निर्देशक सितेंदर (सोनी) निरंकारी को खो दिया है। सोनी की आवाज तब सुनने को मिलती थी जब वह कमेंटेटरों, कैमरामैन और तकनीकी कर्मचारियों का निर्देशन करते थे। लंबे समय तक सबसे अच्छे दोस्त देव श्रियान से सीखने के बाद, सोनी ने हाल के वर्षों में अपने दम पर शानदार तरीके से निर्देशन करना शुरू कर दिया था। देव बीसीसीआइ प्रोडक्शन के साथ प्रशासनिक भूमिका में पहुंच गए थे, लेकिन प्रोडक्शन निर्देशक टीम का कप्तान होता है। कमेंटेटर भलें ही टेलीकास्ट के चेहरे हो सकते हैं, लेकिन हमारे लिए असली सितारे कंट्रोल रूम में काम करने वाले लड़के, जमीन पर कैमरामैन और साउंड सिस्टम वाले लोग हैं। कमेंटेटरों को भले ही कमेंट्री के दौरान थोड़ी देर के लिए आराम मिल जाता है, लेकिन उन्हें एक मिनट का भी आराम नहीं मिलता है।

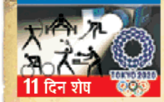
इंग्लैंड से जीती भारतीय महिला टीम

नई दिल्ली, जेएनएन: भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने रविवार को इंग्लैंड के होव में खेले गए दूसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच में इंग्लैंड की महिला टीम को आठ रन से हरा दिया। मेजबान टीम ने पहले भारत को बल्लेबाजी करने का न्योता दिया तो भारत की महिलाओं में सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा की 38 गेंदों में 48 रनों की पारी की बदौलत अपने 20 ओवरों में चार विकेट पर 148 रन बनाए। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने भी 25 गेंदों में 31 रनों की पारी खेली।

इसके बाद भारतीय टीम ने शानदार गेंदबाजी करते हुए इंग्लैंड की टीम को आठ विकेट में 140 रनों पर ही रोक दिया। पूनम यादव ने अपने चार ओवरों में 17 रन देकर दो विकेट लिए, जबकि अरुंधति रेड्डी और दीप्ति शर्मा ने एक-एक विकेट लिया। इंग्लैंड की तरफ से सबसे ज्यादा 59 रन सलामी बल्लेबाज टैमी ब्यूमोंट ने बनाए, जबकि कप्तान हीथर नाइट ने 30 रन बनाए। इस तरह तीन मैचों की सीरीज में अब दोनों टीमें 1-1 से बराबरी पर हैं।



टोक्यो ओलिंपिक



11 दिन शेष

प्राचीन ओलिंपिक खेल का इतिहास ग्रीस से जुड़ा होने के कारण 1896 में पहले आधुनिक ओलिंपिक का आयोजन एथेंस (ग्रीस) में किया गया। 1900 में पेरिस में आयोजित दूसरे ओलिंपिक में पहली बार महिलाओं को भी शामिल किया गया।



ग्रीस ओलिंपिक (1896)

06 अप्रैल से 15 अप्रैल

241 एथलीट | 14 देश | 09 खेल 43 मुकाबले

तालिका में शीर्ष पांच देश

देश	स्वर्ण	कुल पदक
अमेरिका	11	20
ग्रीस	10	46
जर्मनी	06	13
फ्रांस	05	11
ब्रिटेन	02	07


अमेरिका के जेम्स कोलोनी ट्रिपल जंप जीतकर बने पहले ओलिंपिक चैंपियन

ग्रीस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन से ज्यादातर प्रतियोगी आए। इन देशों ने ही ज्यादातर पदक जीते

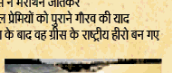


सबसे सफल खिलाड़ी
जर्मनी के जिम्नास्ट कार्ल शुहमान रहे। उन्होंने चार स्पर्धाएं जीतीं।

लुइस बने ग्रीस के हीरो
ग्रीस के एथलीट स्पाइरिडोन लुइस 40 किमी मैराथन के विजेता बने। दौड़ के आखिरी लैप में उनको जीतते देखकर ग्रीस के राजा जार्ज प्रथम भी साथ दौड़ने लगे। लुइस ने मैराथन जीतकर अपने देश के खेल प्रेमियों को पुराने गौरव की याद दिलाई। उस जीत के बाद वह ग्रीस के राष्ट्रीय हीरो बन गए



स्टेडियम
एथेंस का पनाथिनाइको स्टेडियम ओलिंपिक का गवाह बना। यह प्राचीन ग्रीस का स्टेडियम है, जिसका पुनर्निर्माण कराया गया। यह दुनिया में एकमात्र स्टेडियम है जो पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बना है





पेरिस ओलिंपिक (1900)

14 मई से 28 अक्टूबर

997 एथलीट | 24 देश | 19 खेल 95 मुकाबले

तालिका में शीर्ष पांच देश

देश	स्वर्ण	कुल पदक
फ्रांस	26	101
अमेरिका	19	47
ब्रिटेन	15	30
स्विट्जरलैंड	06	09
बेल्जियम	05	15

- सबसे बड़ी टीम फ्रांस की थी
- एकमात्र ओलिंपिक जिसमें क्रिकेट शामिल किया गया था
- कई खेलों में महिला-पुरुषों की मिली-जुली टीम खेली

अश्वेत खिलाड़ी
हैती में जन्मे फ्रांस के रग्बी यूनियन खिलाड़ी कोस्टैंटिन हेनरिक जुबिएरा ओलिंपिक में हिस्सा लेने वाले पहले अश्वेत खिलाड़ी बने।

पहली महिला चैंपियन चार्लोट
ब्रिटेन की खिलाड़ी चार्लोट कूपर ने टेनिस में सिंगल्स खिताब जीतकर ओलिंपिक में पहली महिला चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया।

ओलिंपिक में भारत

सबसे पहले ब्रिटिश मूल के भारत में जन्मे नार्मन प्रिचार्ड ने इस ओलिंपिक में भाग लिया। उन्होंने एथलेटिक्स में दो रजत पदक भी हासिल किए



नार्मन प्रिचार्ड (1877-1929): ओलिंपिक में पदक हासिल करने वाले नार्मन भारत के ही नहीं, बल्कि पहले एशियाई व्यक्ति थे। कोलकाता में जन्मे नार्मन 1905 में ब्रिटेन में बस गए। उनके पदकों को भारत के खाते में रखने पर विवाद है। चूंकि भारत, ब्रिटेन के अधीन था, लिहाजा ओलिंपिक में उनकी हिस्सेदारी ब्रिटेन के खाते में दर्ज की गई

दैनिक जागरण
सप्तरंग
साहित्यिक पुनर्नवा
सोमवार, 12 जुलाई, 2021

लघु कविताएं



विश्वनाथ घोष
कोलकाता, बंगाल

शांतिनिकेतन

जुलाई का महीना
बारिश का मौसम
बरामदे में बैठे
गुरुदेव और मैं
दोनों सुन रहे हैं
पानी की वही झमझमाहट
हम दोनों में बस छोटा सा फासला
कुछ आठ सौ कदम
और अस्सी साल का

यह बनारस है

वो कहते हैं
यह बनारस है
तभी गंगा यहां उत्तरवाहिनी है।
हम कहते हैं
गंगा यहां उत्तरवाहिनी है
तभी बनारस है।
वो भी ठीक, हम भी ठीक
मतों का भेद ही तो बनारस है!

बनारस में उद्देश्यहीन

अगर गए बनारस किसी उद्देश्य से
तो बनारस नहीं दिखेगा
दिखेगी भीड़, दिखेंगे पुजारी-पंडे
दिखेंगी देह-मृत और जागृत
दिखेगी दुकानदारी
दिखेगी दुनियादारी
शायद भगवान भी दिख जाए
मगर बनारस नहीं दिखेगा
बनारस देखना हो
तो जाओ उद्देश्यहीन

वक्त

उगते सूरज को देखा
दूर क्षितिज से निकल ही रहा था
फिर मैं फोन में व्यस्त हो गया
मुड़कर देखा
सूरज पेड़ पर बैठा है
तब मालूम चला
कि कैसा दिखता है
वक्त का गुजरना

तारे

कैसे भूल सकता हूं वो रात
चालीस साल पहले छत पे
मैं और पड़ोस की वो लड़की
तारों की कालीन के नीचे
चमकता हुआ उसका चेहरा।

घर अब भी वही है, रात भी वैसी
मगर छत पर जाने की फुरसत किसे
वो लड़की किसी और घर में नानी है
और रही बात तारों की
उनको तो प्रदूषण निगल चुका



bishwanath.ghosh@gmail.com
(अंग्रेजी के पांच चर्चित यात्रा-वृत्तांत कृतियों के लेखक के हिंदी में सृजन की प्रथम झलक)

कहानी



अभिरुचि उपाध्याय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

रोजनामचा जिंदगी का

लाकडाउन के दौरान प्रभावित हुए युवा दंपती और उनके बच्चों की दिनचर्या से उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए अपनाए गए आसान से नुस्खों को निरूपित करती रोचक कहानी...



रेखांकन-ब्रिज

लाकडाउन का समय चल रहा था। कोरोना ने बहुत सारे साइड इफेक्ट्स छोड़े हम सबकी जिंदगी में, जिनमें से कुछ तो ऐसे थे जिनसे हम सबको रोज रूबरू होना पड़ता था। पहले तो कोरोना ने स्कूल और आफिस में छुट्टियां करवा दीं, उसके बाद नए-नए व्यंजन बनवा-बनवाकर गृहिणियों का चैन छीन लिया।

ये कहानी है एक बड़े से शहर की मिडिल क्लास फैमिली की, जिसमें एक उनींदी सी कालोनी है। कालोनी की चिपकी हुई छतों के बीच में एक घर आशीष और मधुलिका का भी है। प्रस्तुत है उनके एक दिन की झलक-आशीष और मधुलिका पति-पत्नी हैं। इनके दो बच्चे हैं कियान और कियारा। कियान सात वर्ष का और कियारा 16 साल की है। आशीष एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम करते हैं और मधु घर पर ही ब्यूटी पार्लर चलाती हैं। आशीष को मधु का ब्यूटी पार्लर चलाना बहुत पसंद नहीं, पर मधु की खुशी और घर की शांति के लिए वह कुछ बोलता नहीं था। हमारे भारतीय परिवार ऐसे ही तो चलते हैं। जहां कुछ न भी पसंद हो तब भी, वो हमारे प्रिय को पसंद है। इसलिए हम उसे पसंद करते हैं या बर्दाश्त करते हैं।

कोरोना के चलते वर्क फ्राम होम हो गया है तो आजकल आशीष घर पर ही रहते हैं। पार्लर सारे बंद हैं। बच्चों की भी क्लासेज अब आनलाइन हैं। आशीष ने लैपटाप से सिर उठाकर कहा, 'मधु डियर आज लंच में करायल बनाओ न।'

सुनकर मधु के शरीर में जैसे आग लग गई। अभी नाश्ता निबटा नहीं कि खाने की फरमाइश शुरू हो गई। व्यंजन भी ऐसे कि यूट्यूब में भी ढूंढ़-ढूंढ़कर थक जाओ, पर नहीं मिले। मधु बुदबुदाई, 'अच्छा देखती हूं। अभी तक सुना ही था कि घर पर बैठा पति सास की भूमिका में आ जाता है। अब महसूस कर रही हूं। सास को तो चार बातें मन ही मन बोल लो। इनको क्या कहें।'

मधु भुनभुनाते हुए काम करने लगी।

अचानक मधु की नजर घड़ी पर पड़ी तो देखा 11 बजने वाले थे और कियान की क्लास का टाइम हो गया था। मधु ने आशीष को आवाज दी, 'आशीष, कियान को क्लास अटेंड करवा दो।'

कोई उत्तर नहीं मिला तो मधु झल्लाते हुए किचन से निकली। 'क्या है आशीष, बच्चे को क्लास भी अटेंड नहीं करवा सकते।'

'अरे मैंने कब मना किया, ये आए तब तो।' आशीष ने प्रतिउत्तर दिया।

कियान मां के पीछे छिपते हुए बोला, 'मैं डैड के साथ क्लास नहीं करूंगा। मैम कुछ पूछेंगी, मुझे नहीं आएगा तो ये डाटेंगे।'

आशीष, 'अब बोलो, बच्चा मुझसे डर रहा है। कुछ नहीं आएगा तो बोलूं भी नहीं।'

आशीष गुस्से में लाल-पीला हो रहा था। मौके की नजाकत को देखते हुए मधु कियान का हाथ पकड़कर बच्चों के स्टडी रूम में चली गई। कियारा पहले से अपने स्कूल प्रोजेक्ट पर काम कर रही थी। कियान की क्लास भी स्टार्ट हो गई। मधु बोली, 'कियान तू क्लास कर मैं अभी किचन से आई।'

(मधु समझती है कि आनलाइन में टीचर की कही बात कभी-कभी बच्चों को नेटवर्क की वजह से समझ में नहीं आती है। उसे लगा कि इस समस्या का समाधान करना जरूरी हो गया है। रोज की किच-किच से वह भी तंग आ गई थी।)

दोपहर में खाना खाते समय मधु बोलीं, खाना कैसा बना है? अब तो मुझे भी करायल बनाना आ गया है न।'

आशीष, 'अच्छा है।'

बच्चे भी खाना खाकर अपने रूम में चले गए। आशीष की काल थी। (मल्टीनेशनल कंपनी में वर्किंग आवर भी अजीब होते हैं। इतने दिनों की शादी में इतना तो मधु भी जान गई थी। मधु भी थोड़ा आराम करने के लिए बेड पर लेट गई।) कब आंख लग गई, पता ही नहीं चला। शाम हो चली थी।

रोहित और पार्थ, आशीष के पड़ोसियों के बेटे हैं। दोनों बहुत शैतान हैं। उम्र में कियान से काफी बड़े हैं। लाकडाउन की वजह से कोई घर से बाहर नहीं निकलता है। इसलिए दोनों अपनी छत से कूदकर उनकी छत पर आ गए और कियान को बुलाने लगे।

रोहित, 'कियान आजा फुटबाल खेलें।'

पार्थ, 'कियान आओ न, कितना टाइम लगा रहे हो।'

कियान, 'मम्मा मैं खेलने जाऊं, रोहित और पार्थ भैया बुला रहे हैं।'

मधु, 'पहले तो तुझे कभी नहीं खिलाते थे, अपने साथ। अब कोई मिल नहीं रहा है खेलने को तो तुझे बुलाने लगे। ऊपर से हमारी छत पर आकर ऊधम मचा रहे हैं।'

आशीष, 'जाने दो, खेलने दो कम से कम मोबाइल तो नहीं देखेगा।'

कियान बोला, 'मेरे प्यारे डैड, आप कितने अच्छे हो।'

आवाजें सुनकर कियारा भी आ गई।

कियारा बोली, 'डैड वे बहुत बदतमीज लड़के हैं।'

कियान, 'जाने दो न प्लीज, डैड प्लीज।'

कियान छत पर खेलने चला जाता है। कियान थोड़ी देर बाद वापस आकर बाथरूम से नहाने का स्टूल लेकर जाने लगता है।

'कियान...' मधु चिल्लाई। 'बाथरूम से स्टूल कहां ले जा रहे हो?'

कियान, '(हिचकिचाते हुए) कुछ नहीं मम्मा, कुछ नहीं।'

मधु, 'बोलो वरना, मुझे बहुत तेज गुस्सा आ रहा है।

कियान, 'वो मम्मा... एक्चुअली रोहित भैया बोले कि छत की दीवार कूदकर दूसरी छत पर चलते हैं। अगर मैं नहीं जाऊंगा तो वे मुझे लूजर बोलेंगे। मैं छोटा हूं न तो बिना स्टूल पर चढ़े दीवार नहीं कूद पाऊंगा।'

-'आशीष, आशीष कहां हो तुम? खेलने भेज रहे थे। देखो अब अगर छत से गिरेगा तो इस कोरोना में इलाज भी नहीं होगा। अब तुम मना करोगे उन दोनों को या मैं बोलूं।' मधु झल्लाते हुए बोलीं।

कियान, 'नो मम्मा प्लीज, अगर आप उनको डांटोगी तो मेरे साथ कौन खेलेगा?'

आशीष, 'क्या हुआ?'

मधु, 'अभी तो कुछ नहीं हुआ, पर आगे जरूर हो जाएगा।'

मधु ने सारी बातें आशीष को बताईं।

'आशीष कुछ करो। कियान बिगड़ जाएगा। इससे भी ज्यादा बुरा है, अगर चोट लग गई तो हमें पता भी नहीं चलेगा।'

मधु ने रोहित और पार्थ दोनों की मांओं को फोन करके सारी बात बताई, पर उसे संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।

रात को सब डिनर टेबल पर बैठे खाना खा रहे थे। मधु बोली, 'आशीष तुमने क्या सोचा है।'

आशीष, 'किस बारे में?'

मधु, 'आज जो हुआ उस बारे में।'

आशीष, 'मधु! छोटी-छोटी बातों को खींचो मत।'

मधु, 'देखो मैं बात को खींच नहीं रही हूं। मैं बस समस्या का हल चाहती हूं। देखो बच्चों का फोन देखना कोई एक दिन की बात नहीं है। अभी तुम्हारा मूड ठीक है तो बोल रहे कि बात को खींचो मत। जब खुद टेंस रहोगे तो तुम्हें इनका फोन देखना बुरा लगेगा। देखो आशीष जब मैं फुल टाइम वर्किंग नहीं हूं तो बच्चों को मैं तुमसे ज्यादा देखती हूं। मैं उनकी समस्याओं को तुमसे ज्यादा समझती हूं, क्योंकि मैं ज्यादा देर उनके साथ रहती हूं।'

आशीष, 'यानी मैं नहीं समझता।'

मधु, 'समझते हो, पर मानते नहीं हो। एक तो इस मोबाइल की जिम्मेदार ये आनलाइन क्लासेज भी हैं, जो कोरोना की वजह से सबको करवानी पड़ रही हैं। दूसरे हम दोनों भी जिम्मेदार हैं।'

आशीष, 'हम दोनों कैसे हैं? सिर्फ तुम हो, जो अपना पार्लर देखने के चक्कर में बच्चे को मोबाइल के साथ बिठा देती हो।'

मधु, 'देखो जब मैं अपनी गलती मान रही हूं तो तुम भी मानो।'

आशीष मधु को घूरते हुए बोला, 'कैसे जरा बताओगी।'

मधु, 'बिल्कुल, तुम्हें याद है, कोरोना से ठीक पहले हम तुम्हारे बास की शादी की 25वीं सालगिरह पर गए थे। वहां कियान के इधर-उधर घूमने पर तुमने बोला था कि इसको फोन देकर चुपचाप बिठाओ। दूसरा, हम मूवी देखने गए थे। कियान परेशान कर रहा था तो भी तुमने बोला, फोन दे दो। शांति से मूवी भी नहीं देखने देता। याद आया।'

आशीष, 'हां याद है। इसका मतलब सारी गलती मेरी ही है।'

मधु, 'देखो मैं किसी की गलती नहीं निकाल रही हूं, बस समाधान चाहती हूं।'

आशीष, 'तो समाधान भी बताओ।'

मधु, 'समाधान सीधा सा है कि अपना आराम हम दोनों को छोड़ना पड़ेगा। कियान के साथ थोड़ा सा खेलना होगा और थोड़ा सा काम करवाना होगा, जिससे उसका टाइम बीतेगा।'

आशीष, 'और कियारा का क्या !!! बड़ी हो रही है। कभी देखती हो कि क्या करती है, सारा दिन लैपटाप पर।'

मधु, 'हां देखती हूं दोनों को।'

आशीष, 'कैसे?'

मधु, 'दोनों के मोबाइल फोन और लैपटाप में पैरेंटल कोड और चाइल्ड लाक लगा रखा है। उनकी हर एक्टीविटी मुझे पता होती है।'

आशीष, '(हंसते हुए) अरे वाह मेरी समझदार बीवी। चलो अब लूडो और कैरम खेलते हैं साथ में। शाम को मैं, कियान और कियारा छत पर जाएंगे फुटबाल खेलने।'

मधु, 'कियारा शाम की चाय तुम बनाओगी।'

कियारा, 'ओके, मम्मा पक्का।'

कियान, 'और मैं, मुझे भी तो कोई काम बताओ आप लोग।' आशीष, 'तुम फ्रिज की सफाई करोगे और धुले बर्तन स्टैंड में लगाओगे।' कियान, 'यस पापा।'

इसके बाद सब एक-दूसरे को गुड नाईट बोलकर अपने-अपने कमरों में सोने चले गए। मधु अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे सोच रही थीं कि शायद उसने अपनी एक बड़ी समस्या का हल निकाल लिया है। अब सब व्यस्त भी रहेंगे और मेरा काम भी थोड़ा आसान हो जाएगा। यही तो है, मध्यमवर्गीय जिंदगी जिसमें समस्याओं का अंत तो नहीं है, पर उनमें से कुछ का हल हमारे हाथों में है।

arvindruchi8@gmail.com

नवगीत



ओम धीरज
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

बोतल बंद जिंदगी जीते

नदी संस्कृति के रहवासी
बोतल बंद जिंदगी जीते,
सोचो, ऐसा क्यों है, मीते!

वो दिन थे जब ताल-पोखरे
वर्षों-वर्षों भरे-पुरे थे,
खेती-बारी, पूजा-विनती
सभी सहारे हरे-भरे थे,
आतप सूर्य अर्घ्य जल पाकर
हमें जिलाता रहा सुभीते,
सोचो, ऐसा भी था, मीते!

दावानल-सी बढ़ी हवस तो
लील गए सब जल-स्रोतों को,
जलसंकट के हम दोषी ज्यों
चिड़ियां नोचें खुद 'खोतों' को,
हम विकास का महल ढूंढ़ते
अपने घर में लगा पलीते,
ऐसा क्यों होता है, मीते!

रक्त चूस दोहन भूजल से
धरती बंजर पांव पसारे,
मीलों-मील चलें भर गागर
महिला-बच्चे दर्द उभारें,
प्यासे पशु-पक्षी, मानव की
तड़प देखते आंसू पीते,
कब तक ऐसा होगा, मीते!

ohmdheeraj@gmail.com



साहित्यिक चर्चा



संतोषकुमार तिवारी
नैनीताल, उत्तराखंड

कवि रच रहे जीवन का भोर

कोरोनाकाल में भी ऊर्जावान बने रहकर उम्मीदों की लौ जलाए रखने वाले कवियों के सृजन की संक्षिप्त झलक दिखाता आलेख....

पिछले साल और जून, 21 तक (कोरोनाकाल) के साहित्य लेखन पर यदि दृष्टि डालें तो अन्य विधाओं की अपेक्षा इस अवधि में प्रकाशित नए काव्य संग्रह व फुटकर कविताओं में सतत् ऊर्जावान और सत्साहस से भर देने वाला लेखन उम्मीद जगाता है।

कोरोना की कालिमा के बीच कवि जीवन के 'भोर' गान में तल्लीन दिखा। 2020 के पुस्तक मेले में काफी किताबें आई थीं, जिनमें साहस और जिजीविषा से लबालब भरे अनेक युवा कवि देश को मिले। एक ओर जहां स्थापित कवियों में लीलाधर जगूड़ी का काव्यसंग्रह 'कविता का अमरफल', वरिष्ठ कवि-गीतकार रामदरश मिश्र के नवगीतों का संकलन 'मेरी गीत यात्रा', राजकुमार कुंभज की-'था थोड़ा लोहा भी था' तथा अशोक वाजपेयी की समालोचन पर आई कोरोना एकांत में कविताओं की सीरीज-'हम एकांत नहीं लिख पायेंगे' और 'पृथ्वी का मंगल हो' छपकर आईं, वहीं अनिल मिश्र की 'भूखे पेट की रात लम्बी होगी', अनिल करमेले की 'बाकी बचे कुछ लोग' और शैलेय की 'बीच दिसम्बर' चर्चा में रही।

इसके अलावा अमृता भारती की 'भूमिका', दुर्गाप्रसाद गुप्त की 'अंधेरे में भी इश्क सूफी है', अनिल पुरोहित की 'विभीषण की अनुचिन्ता', संजय अलंग का संग्रह 'नदी उसी तरह सुंदर थी जैसे बाघ', उषा दशोरा का 'भाषा के सरनेम नहीं होते', सुधांशु फिरदौस का संकलन 'अधूरे स्वांगों के दरम्यान' और प्रतिमा सिन्हा का पहला संग्रह 'दिल दरबेश'। चर्चित कवि व्योमेश शुक्ल की 'काजल लगाना भूलना', अमित कल्ला की 'शब्द कहे अधिक', भरतप्रसाद की 'पुकारता हूं कबीर', संतोषकुमार तिवारी की 'अपने-अपने दण्डकारण्य' तथा मुस्तफा खान की



'पत्थरों की भाषा' उल्लेखनीय काव्यकृतियां हैं।

'कोरोनाकाल के कवि' संकलन में कोरोना के संत्रास के बीच साहस और सकारात्मकता की जुगलबंदी बहुत उल्लेखनीय पहल कही जाएगी। देश के चर्चित 15 कवियों की 26 कविताएं कोरोना जनित हालातों के बीच उत्साह का संचार करती हैं। युवा कवयित्री डा. निशा सेंगर के संपादन में कोरोना केंद्रित संकलन 'कोरोना और कलम' में 46 कवियों की कविताएं हैं, ये सभी कविताएं हताशा के बीच उम्मीद की किरण हैं।

इंटरनेट मीडिया पर कोरोनाकाल के संत्रास एवं जिजीविषा के द्वंद्व को रेखांकित करती कविताओं की अच्छी तादाद है। इसी काल खंड में शिरीष कुमार मौर्य के 'रितुरैण' संग्रह की कविताओं के पाठ के दौरान गझिन भावलोक से गुजरना सुखद है।

देश के वरिष्ठ कवि बालस्वरूप राही का कहना है कि आज समय कठिन जरूर है, मगर डटकर इसका सामना करना है।

वक्त आता है दबे पांव गुजर जाता है,
वक्त भी एक नशा है जो उतर जाता है।

प्रसिद्ध कवि/आलोचक ओम निश्चल ने कोरोनाकाल पर अनेक गीत/गजल लिखे हैं।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के डा. अखिलेश दुबे महामारी से हुए इतने नुकसान के बावजूद इसी स्वविवेक के बल पर ही कोरोना पर जनता-जनार्दन की जीत से आश्वस्त दिखते हैं...

जीतना तय है, हम फिर बढ़ेंगे
अपने आसमान के लिए
हरे-भरे मैदान के लिए
हम फिर बढ़ेंगे अपने लिए
अपनों के लिए।

साहित्यकारों ने हमेशा विषम दौर में मोर्चा संभाला है। डा. सिद्धेश्वर सिंह अपनी कविता में लिखते हैं...

दिखा अड़हुल का जोड़ा
भर फूल/ सहज ही मुक्त
लगा, अब भी अशेष है स्पर्श/बुरे वक्त की सुबह में
घुल गयी उम्मीद/ चाहता जीवन/अड़हुल फूल होना।

डा. निशा सेंगर मनोबल बढ़ाने वाली इम्युनिटी कलम में भरकर कहती हैं-

गहराते संकट के बादल/ छिन्न भिन्न हो जाएंगे।
कलम-पहरुओं के प्रयास से/बुरे वक्त टल जाएंगे।

यह मृत्यु भय का दौर हमें उतना ही आतंकित करेगा, जितना हम डरेंगे। डा. भरतप्रसाद की कविताएं जीवन से नई ऊर्जा बटोरती हैं। वह लिखते हैं-

हमारी सतरंगी कल्पना को पाना/किसी महामारी के वश में नहीं कुछ हासिल न करते हुए भी आज भी/सब कुछ जीत लेने का हौसला।

इस कठिन समय में 'नीरज' की ये दो पंक्तियां तो भरतवाक्य जैसी हैं-

इक न इक शम्मा अंधेरे में जलाए रखिये
सुबह होने को है माहौल बनाए रखिये।

santoshtiwari913@gmail.com

लघुकथा

संजीवनी

शाम को पार्क के बेंच पर अकेली गुमसुम बैठी मधु अपने मोबाइल को हाथ में लेकर हिलाती-डुलाती है। उसे उसके बजने का इंतजार था। तभी न जाने कहां से भागता हुआ पड़ोस का छोटा बच्चा पार्थ हाथ में गेंद को पकड़े हुए उनके सामने आ खड़ा हुआ, फिर हांफता हुआ बोला, 'दादी, क्या मैं आपके बगल में बैठ सकता हूं?'

मधु चौंककर देखने लगी, फिर बोली, 'हां..हां बेटा, क्यों नहीं? आओ, बैठो।'

मधु के बगल में बैठा पार्थ थोड़ी देर बाद बोला, 'दादी, मैं अपनी छत से आपको रोज देखता हूं, आप अपने लान में अकेले चुपचाप बैठी रहती हैं।'

मधु सोचने लगी। तभी अचानक वह मधु से बोला, 'दादी, क्या आप मेरे साथ खेलेंगी?'

'नहीं बेटा, मेरी उम्र अब खेलने की कहां है?' मधु ने मायूस होकर जवाब दिया।

'कोई बात नहीं, दादी। आप बैठे-बैठे बस गेंद को मेरी तरफ फेंक दीजिएगा।' यह कहकर मधु के हाथ में गेंद पकड़ाकर पार्थ थोड़ी दूर पर खड़ा हो गया। न चाहते हुए भी मधु ने गेंद को उसकी तरफ उछाल दिया। गेंद पकड़कर वह दौड़ता हुआ आया और मधु को पकड़ाकर फिर अपनी जगह जाकर खड़ा हो गया। दोनों का खेल चल पड़ा। मधु भी पार्थ के इस खेल में एकदम से रम गई।

तभी पार्थ की मां उसे खोजती वहां आ गई और उससे बोली, 'बिना बताए ही गायब हो जाते हो, पता ही नहीं चलता है।'

'मां, मैं दादी के साथ खेल रहा था।'

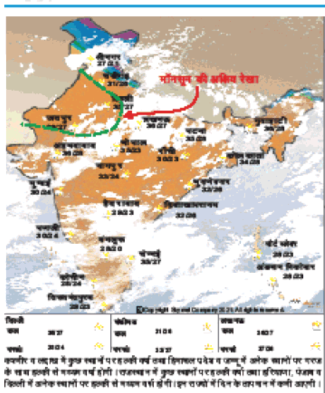
'चलो, पापा आए हैं, तुम्हें बुला रहे हैं। दादी को ज्यादा परेशान मत किया करो।'

मां के चंगुल में फंसा पार्थ पलटकर मधु से बोला, 'दादी, आप कहीं जाइएगा नहीं। मैं अभी पापा से मिलकर आता हूं।'

मधु को इस संजीवनी ने थोड़े समय के लिए जीवंत कर दिया। इसी संजीवनी की कमी थी उसके अकेले पड़े वीरान जीवन में। क्षणिक सुख से पुलकित मधु को अब अपने टहलने में कोई रुचि नहीं थी।

वह वहीं बैठी पार्थ का इंतजार बेसब्री से करने लगी।

रेणुका श्रीवास्तव, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
srivastava. renuka@gmail.com





नेहरू सरकार ने राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से प्रतिबंध हटाया

भारत सरकार ने आज ही के दिन वर्ष 1949 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रतिबंध हटाया था। महात्मा गांधी की हत्या के बाद संगठन के कामकाज पर रोक लगा दी गई थी। बाद में भी आपातकाल के समय दो साल के लिए और 1992 में छह महीने के लिए प्रतिबंध लगाया गया।





भारत-बांग्लादेश के बीच 'मैत्री' बस सेवा की शुरुआत

वर्ष 2001 में आज ही के दिन अगरतला से ढाका के लिए 'मैत्री' बस सेवा की शुरुआत हुई थी। 1999 में पहली बस सेवा कोलकाता-ढाका के बीच शुरू हुई थी। मार्च 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों देशों के बीच बने मैत्री सेतु का उद्घाटन किया है।

बिमल रॉय ने हिंदी फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया

फिल्म निर्देशक बिमल रॉय का जन्म आज ही के दिन वर्ष 1909 में ढाका के सुआपुर में हुआ था। कोलकाता में न्यू थिएटर्स स्टूडियो में बतौर कैमरा असिस्टेंट करियर शुरू किया। 1944 में फिल्म 'उदयर पाथे' बनाई। इसमें रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा संगीतबद्ध किए गए तीन गीत थे, जिसमें जन गण मन भी था। वर्ष 1954 में 'दो बीघा जमीन' के लिए इन्हें कान फिल्म फेस्टिवल में सम्मानित किया गया। 'परिणीता', 'मधुमति', 'देवदास' जैसी फिल्में बनाईं। इन्हें 11 फिल्मफेयर और दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले थे। आठ जनवरी, 1966 को इनका निधन हो गया।



इधर-उधर की

विषैले पौधों वाला बगीचा

नॉर्थम्बरलैंड, एजेंसी : हरा-भरा बगीचा किसको पसंद नहीं आएगा, ज्यादातर लोग ऐसी जगहों पर समय बिताना पसंद करते हैं। ब्रिटेन की काउंटी नॉर्थम्बरलैंड के एलनविक गार्डेन में भी एक ऐसा ही बाग है, जिसे देखने दूर-दूर से पर्यटक आते हैं। हालांकि, इसकी सच्चाई आपको हैरान कर देगी। दरअसल, इस बगीचे में करीब 100 से ज्यादा विषैले पौधे हैं, जिनको छूने या उनके फूलों को सूंघने से मौत हो सकती है। ये दिखने में तो हरे-भरे हैं, लेकिन इनके पास से गुजरने पर कई लोग बेहोश हो जाते हैं। कई पौधे तो ऐसे हैं, जिनको छूने से त्वचा जल जाती है। यही वजह है कि बाग के अंदर जाने के लिए गाइड को साथ ले जाना आवश्यक होता है। विशेष रूप की जड़ी-बूटियों को पाने के मकसद से इस बगीचे को लगाया गया था, लेकिन ये पौधे विषैले हो गए। बगीचे की देखरेख करने वाले ट्रेवर जोंस कहते हैं कि कई ऐसे पौधे हम जाने-अनजाने घरों में लगा लेते हैं जो हमारे लिए हानिकारक होते हैं।



बाग के अंदर जाने के लिए गाइड को साथ ले जाना आवश्यक होता है ● इंटरनेट मीडिया

संक्रमण से लड़ेगी एंटी वायरल कोटिंग

उपलब्धि ▶ आइआइटी गांधीनगर ने विकसित की अनूठी सामग्री, किसी भी तरह की सतह पर लगाना आसान

सर्दी-जुखाम, बुखार, खसरा, चेचक और न्यूमोनिया जैसी बीमारियों का कारक है वायरल संक्रमण

नई दिल्ली, आइएएनएस : वायरल संक्रमण के खिलाफ लड़ाई में गांधीनगर स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) ने विशिष्ट उपलब्धि हासिल की है। देश के अग्रणी इंजीनियरिंग संस्थान ने एक एंटी-वायरल कोटिंग सामग्री तैयार की है जो लोगों को वायरल संक्रमण से बचाएगी। इस सामग्री को किसी भी तरह की सतह पर आसानी से लगाया जा सकता है।

आइआइटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक यह कोटिंग सामग्री वायरल संक्रमण को लंबे समय तक रोकने में सक्षम है। वायरल संक्रमण से विशेष रूप से सर्दी जुखाम, बुखार, खसरा और चेचक जैसी बीमारियां होती हैं। कभी-कभी ये वायरल संक्रमण गंभीर और संभावित रूप से जानलेवा जटिलताओं में बदल सकते हैं। इस तरह के वायरल संक्रमण से दस्त और न्यूमोनिया जैसी बीमारियां भी हो सकती हैं।



वायरल संक्रमण से होगा बचाव। फाइल फोटो इंटरनेट मीडिया

शोध के नतीजे आशाजनक

शोध करने वाली टीम में शामिल और मैटेरियल इंजीनियरिंग विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर एमिला पांडा ने कहा कि इस सामग्री को लेकर किए गए शोध के नतीजे आशाजनक हैं। पारदर्शी, किफायती और पर्यावरण अनुकूल होने के चलते आने वाले दिनों में इसके व्यावसायीकरण में अपार संभावनाएं भी हैं।

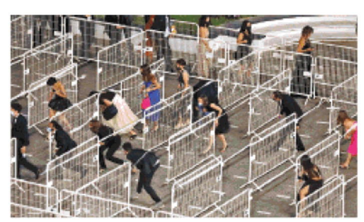
आइआइटी गांधीनगर के शोधकर्ताओं की एक टीम ने यह एंटी वायरल कोटिंग सामग्री विकसित की है, जो गैर रोगजनक वायरस के खिलाफ अत्यधिक प्रभावी है। साथ ही साथ यह गैर विषैला, पर्यावरण के अनुकूल और पारदर्शी भी है। आइआइटी ने कहा कि गैर-विषैला होने की वजह से इस कोटिंग सामग्री को घर के अंदर और बाहर शीशे की खिड़कियों, लकड़ी और प्लास्टिक के फर्नीचर, वाहनों, आटोमोबाइल, दरवाजों के हैंडल इत्यादि पर आसानी से लगाया जा सकता है।

कोरोना के खिलाफ परीक्षण नहीं हुआ : यह अनूठी कोटिंग सामग्री 45 नैनोमीटर मोटी है, जिसके पैटेंट के लिए भारत की तरफ से रजिस्ट्रेशन भी कराया गया है। हालांकि, अभी इस एंटी वायरल कोटिंग सामग्री का कोरोना वायरस के खिलाफ परीक्षण नहीं किया गया है। इस कोटिंग का विभिन्न वायरल और बैक्टीरिया वायरस के खिलाफ परीक्षण किया जा रहा है।

लंबे समय तक बनी रहती है कोटिंग : शोधकर्ताओं ने इस सामग्री का परीक्षण करने के लिए इसे ऐसे सतहों पर लगाया जो बार-बार लोगों के संपर्क में आती है। ऐसी सतहों की बार-बार धुलाई भी की गई। इसमें पाया गया कि कई धुलाई के बाद भी एंटी कोटिंग सामग्री में किसी तरह का बदलाव नहीं आता। उसकी वायरल रोधी क्षमता पहले की तरह बनी रहती है। इससे यह स्पष्ट है कि लोगों के बीच वायरल संक्रमण के प्रसार की यह रोकथाम करेगी।

पर्यावरण के अनुकूल भी है : इस एंटी वायरल कोटिंग सामग्री को तैयार करने में ऐसे घटकों का इस्तेमाल किया गया है जो विषाक्त नहीं हैं। अभी तक एंटी वायरल कोटिंग सामग्री तैयार करने में तांबा या चांदी को मुख्य घटक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जो न सिर्फ विषैला बल्कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाला भी होता है। ऐसे में इनका घर के अंतर प्रयोग करना बहुत जोखिम का काम होता है।

शोध करने वाली टीम में कौन-कौन शामिल : शोध करने वाले दल में पांडा के अलावा मैटेरियल इंजीनियरिंग विभाग में सहायक प्रोफेसर, अभय राज सिंह गौतम, बायोलाजिकल इंजीनियरिंग विभाग में फेलो विरुपक्षी सोपिना रामलिंगस्वामी, शोध के छात्र निशाबेन एम पटेल और कुछ अन्य छात्र भी शामिल थे। इस शोध पर आधारित एक रिपोर्ट अंतरराष्ट्रीय स्तर की अग्रणी पत्रिका एल्सेवियर के जर्नल आफ अलायज एंड कंपाउंड में प्रकाशित हुई है।



कान फिल्म समारोह में कड़ी सुरक्षा

दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित फिल्म समारोह में शुमार फ्रांस के 74वें कान फिल्म फेस्टिवल का आगाज हो गया है, जो 17 जुलाई तक चलेगा। रविवार को फिल्म 'फ्लैग डे' की स्क्रीनिंग हुई। मेहमानों को स्क्रीनिंग में शामिल होने के लिए इस तरह के सुरक्षा बैरिकेड्स से होकर गुजरना पड़ा। पिछले साल फ्रांस में कोरोना की वजह से हुए लाकडाउन के मद्देनजर समारोह के आयोजन की मंजूरी नहीं मिली थी। इस समारोह की शुरुआत 1939 में हुई थी। दुनिया के कोने-कोने से फिल्मी हस्तियां इसमें शिरकत के लिए पहुंचती हैं। रायटर

नई थेरेपी की मदद से कम हो सकता है हार्ट अटैक का खतरा

अनुसंधान



800 लोगों पर अध्ययन कर निकाला गया निष्कर्ष। फाइल फोटो इंटरनेट मीडिया

हार्ट अटैक के खतरों को लेकर हर कोई सचेत रहना चाहता है। अब एक नए अध्ययन में सामने आया है कि पुरुषों में पाए जाने वाले हार्मोन टेस्टोस्टेरान थेरेपी से हार्ट अटैक के खतरों को कम किया जा सकता है।

यूरोपियन एसोसिएशन आफ यूरोलाजी कांग्रेस में रखे गए एक शोध पत्र के अनुसार, टेस्टोस्टेरान थेरेपी से स्वास्थ्य में अन्य स्तर पर भी सुधार देखा गया है। थेरेपी के बाद मांसपेशियों में मजबूती आई और वजन कम हुआ। कोलेस्ट्राल स्तर सामान्य होने लगा और लिवर भी अच्छी तरह कार्य करने लगा। जिन लोगों का उच्च रक्तचाप था, उसमें भी सुधार आया।

यह अध्ययन 800 लोगों पर किया गया। इनमें शामिल होने वालों में ज्यादातर वो लोग थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी टेस्टोस्टेरान हार्मोन की कमी का शिकार थे। उनमें रक्तचाप, कोलेस्ट्राल स्तर, डायबिटीज जैसी समस्या थी। इनमें से आधे लोगों को टेस्टोस्टेरान हार्मोन थेरेपी दी गई। आधे लोगों को सामान्य रूप से रखा गया। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि जिन लोगों ने टेस्टोस्टेरान थेरेपी ली थी, उनमें से 412 लोगों में तेजी से हार्ट अटैक के खतरे कम होने लगे। उच्च रक्तचाप, डायबिटीज या कोलेस्ट्राल स्तर में भी सुधार होने लगा। जिन 393 लोगों को टेस्टोस्टेरान थेरेपी नहीं दी गई थी, उनमें से 74 लोगों की मौत हो गई, 70 को हार्ट अटैक हुआ। 59 को पक्षाघात हो गया। टेस्टोस्टेरान पुरुषों में पाए जाने वाला एक हार्मोन है। -आइएएनएस

एरीज के विज्ञानियों ने की दुर्लभ सुपरल्यूमिनस सुपरनोवा की खोज

जागरण संवाददाता, नैनीताल

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के विज्ञानियों ने दुर्लभ सुपरल्यूमिनस सुपरनोवा की खोज की है, जो अत्यधिक शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र के साथ दूसरे न्यूट्रान तारे से मिल रही ऊर्जा की मदद से चमक रहा है। इस खोज से आकाशीय पिंडों के रहस्यों को जानने में मदद मिल सकती है। एरीज के वरिष्ठ विज्ञानी डा. शशिभूषण पांडेय के मार्गदर्शन में शोध छात्र अमित कुमार की अगुआई में यह अध्ययन 2020 में लाकडाउन के दौरान किया गया।

डा. शशिभूषण पांडेय ने बताया कि इस तरह के दुर्लभ सुपरनोवा के बारे में पूर्व में अधिक जानकारी नहीं मिल सकी थी। खोजे गए एसएन-2020 एनके का द्रव्यमान सूर्य के मुकाबले 3.6 से 7.2 गुना अधिक है। इसी तरह के 150 ऐसे आकाशीय पिंडों की अभी तक पुष्टि हो पाई है जो हमारी आकाशगंगाओं व उसके आसपास मौजूद हैं। एसएन-2020 एनके सुपरनोवा का पिछले साल मार्च व अप्रैल में तीन दूरबीनों के जरिये अध्ययन किया गया, जिसमें यह सुपरनोवा नीली चमक के साथ स्पष्ट नजर आ गया। इसमें ऐसा लग रहा है कि प्याज जैसी संरचना वाले सुपरनोवा की बाहरी परतें छील दी गई हों और उसका कोर किसी अन्य ऊर्जा स्रोत से चमक रहा है। यह शोध एस्ट्रोनामिकल सोसाइटी मासिक पत्रिका के हालिया अंक में प्रकाशित हो चुका है।

मंगल और शुक्र का आज होगा मिलन

रमेश चंद्रा, नैनीताल

▶ सोमवार को एक-दूसरे के बेहद करीब होंगे दोनों ग्रह

ग्रह-नक्षत्रों में खास जगह रखने वाले मंगल (मार्स) और शुक्र (वीनस) सोमवार को एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे। मंगल लाल रंग में नजर आएगा तो शुक्र पश्चिम के आकाश में चमकदार आभा में दिखेगा। इन दोनों के बीच की दूरी बेहद कम होने पर ये एक-दूसरे को स्पर्श करते प्रतीत होंगे।

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के वरिष्ठ खगोल विज्ञानी डा. शशिभूषण पांडेय के अनुसार सोमवार को दोनों ग्रह एक-दूसरे के बेहद करीब होंगे। तब इन दोनों के बीच की दूरी मात्र आधा डिग्री रह जाएगी। इनसे कुछ ही दूर पर चार डिग्री के अंतराल में चंद्रमा भी मौजूद होगा। जो इन दोनों ग्रहों की नजदीकी का साक्षी प्रतीत होगा। इस खगोलीय घटना में अर्द्ध चंद्रमा की सुंदरता भी धरती वासियों को अपनी ओर आकर्षित करेगी।

ग्रहों की चाल के आकलन के लिए महत्वपूर्ण घटना : भारतीय तारा भौतिकी संस्थान बंगलुरु के सेवानिवृत्त विज्ञानी प्रो. आरसी कपूर का कहना है कि ग्रहों की चाल की गणना को लेकर यह खगोलीय घटना विज्ञानियों के नजरिये से महत्वपूर्ण हो जाती है। खगोलीय घटनाओं पर दिलचस्पी रखने वालों को भी वीनस-मार्स के अद्भुत मिलन को नग्न आंखों से देखने का मौका मिलेगा। एस्ट्रोफोटोग्राफर इस दृश्य को कैमरे में कैद करेंगे।

शुक्र तेजाबी ग्रह, मंगल पर ही संभावनाएं

डा. शशिभूषण पांडेय के अनुसार भले ही शुक्र अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हो, लेकिन मानव बस्ती बसाने के सपने के साथ विज्ञानियों के लिए मंगल ही अधिक आकर्षण का केंद्र है। दुनियाभर की अंतरिक्ष एजेंसियां मंगल पर पहुंचने को आतुर हैं। इसकी मुख्य वजह मंगल का हमारे करीबी होना व पृथ्वी जैसी कई समानताएं मौजूद होना है, जबकि शुक्र ग्रह पर तेजाब की बारिश होती हैं। हाइड्रोजन के बादल शुक्र के आसमान मे मंडराते हैं, जो सूर्य के प्रकाश से बेहद चमकदार नजर आते है। इस ग्रह पर तापमान 400 डिग्री सेल्सियस को पार कर जाता है।

स्क्रीन शॉट

जब तक शादी न हो जाए, तब तक मैं सिंगल हूं : श्रद्धा



आगामी फिल्म में रणबीर कपूर साथ नजर आएंगी श्रद्धा। इंस्टाग्राम

सितारे अक्सर रिश्तों को लेकर बात करना पसंद नहीं करते हैं। अपनी लाइफ को प्राइवेट रखना पसंद करते हैं। एक विलेन फिल्म की अभिनेत्री श्रद्धा कपूर और फोटोग्राफर रोहन श्रेष्ठ करीबी दोस्त हैं। ऐसे में कई बार दोनों की शादी को लेकर भी खबरें उड़ती रहती हैं। हालांकि, दोनों ने ही कभी अपने रिश्तों पर बात नहीं की है। एक इंटरव्यू के दौरान श्रद्धा ने शादी करने या सिंगल होने को लेकर जवाब तो दिया, लेकिन सीधे तौर पर कुछ नहीं कहा। जब उनसे पूछा गया कि क्या वह शादी करने की योजना बना रही हैं या सिंगल हैं? इस पर श्रद्धा ने कहा कि एक प्रसिद्ध लाइन है कि जब तक शादी न हो जाए, तब तक आप सिंगल हैं। मैं भी यही कहूंगी। बालीवुड के हाटेस्ट हीरो को लेकर श्रद्धा ने कहा कि उनके पसंदीदा हीरो और क्रश हमेशा से ही रितिक रोशन रहे हैं। कहो ना प्यार है फिल्म देखने के बाद मैं पागल हो गई थी। उनके लिए दिल में अलग जगह है। आगे श्रद्धा ने कहा कि इन दिनों वह अपनी फिटनेस पर खासा ध्यान दे रही हैं। उन्होंने कहा कि हर फिल्म के लिए आपको एक खास तरह का शेप लेना पड़ता है। स्ट्रीट डांसर 3डी के लिए मैंने अलग बॉडी बनाई थी, साहो फिल्म के लिए अलग फिजिक था। अब मैंने फिटनेस को जीवनशैली का हिस्सा बना लिया है। अपनी फिल्मों के बारे में श्रद्धा ने कहा कि लव रंजन की फिल्म की शूटिंग शुरू करने वाली हूं। रणबीर कपूर के साथ सेट पर काम करने के लिए उत्सुक हूं। बहुत लंबा वक्त हो गया है शूटिंग किए हुए।

डिजिटल प्लेटफार्म पर काम करने के लिए कुछ नियम बना रखे हैं : गौतम रोड़े

कई कलाकार हैं जो अब टेलीविजन से डिजिटल प्लेटफार्म का रुख कर चुके हैं। अभिनेता गौतम रोड़े भी अपने लिए बेहतर किरदार डिजिटल प्लेटफार्म पर तलाश रहे हैं। हाल ही में वह फिल्म स्टेट आफ सीज : टेंपल अटैक से डिजिटल प्लेटफार्म पर कदम रख चुके हैं। हर प्लेटफार्म पर काम करने के अपने तरीके होते हैं। जो चीजें टीवी और फिल्मों में सेंसर में बंधी होती हैं, उन्हें डिजिटल प्लेटफार्म पर निभाने की आजादी है। हालांकि, गौतम का मानना है कि वह ऐसी किसी भी आजादी का इस्तेमाल तब तक नहीं करना चाहते हैं, जब तक स्क्रिप्ट में उसकी बहुत जरूरत न हो। दैनिक जागरण से बातचीत में गौतम ने कहा कि डिजिटल प्लेटफार्म पर काम करने के लिए मैंने कुछ नियम बना रखे हैं। मैंने खुद को इस प्लेटफार्म पर काम करने के लिए हर तरह से मानसिक तौर पर खुला नहीं रखा है। जब आप एक नए प्लेटफार्म पर काम शुरू करते हैं तो उसके मुताबिक खुद को थोड़ा बदलना पड़ता है। कई बार आपको स्क्रिप्ट के मुताबिक बदलना पड़ता है, लेकिन सिर्फ डिजिटल प्लेटफार्म पर एक आजादी है। इसलिए आप गाली दें और बोल्ड सीन्स करें तो मुझे यह सही नहीं लगता है। इस साइकोलाजी के साथ मेरा दिमाग नहीं चलता है। यह मेरा पेशा है। अगर स्क्रिप्ट के मुताबिक मेरे किरदार में कहा जाएगा कि कुछ चीजें आपको करनी ही हैं तो मैं अपने आप को पुश कर सकता हूं।



फिल्म स्टेट आफ सीज में एनएसजी कमांडो के किरदार में नजर आए गौतम। इंस्टाग्राम

बिना सह कलाकार के काम करना मुश्किल

कलाकार अपने किरदार के मुताबिक खुद को ढाल लेते हैं, लेकिन मुश्किल तब होती है, जब कलाकार के सामने कोई सह कलाकार नहीं होता है और उसे अपनी कल्पनाओं के आधार पर एक्टिंग करनी पड़ती है। कुछ ऐसा ही हुआ अभिनेत्री तान्या मानिकतला के साथ जो वेब सीरीज चुट्जपाह में नजर आएंगी। शो में अभिनेत्री का किरदार निभा रहीं तान्या ने बताया कि उनके पिछले प्रोजेक्ट की तुलना में इस सीरीज की शूटिंग की प्रक्रिया थोड़ी कठिन थी, क्योंकि वह कम क्रू सदस्यों के साथ ही चारों तरफ से गैजेट्स से घिरी हुई थी। दैनिक जागरण से बातचीत में तान्या ने कहा कि कोई भी सीन वास्तविक पार्टनर के बिना परफार्म करना मुश्किल होता है। जब आपको बिना सह कलाकार के ही अकेले परफार्म करना पड़ता है तो वह प्रक्रिया मुश्किल हो जाती है। कई बार आपको इस बात की जानकारी नहीं होती है कि आपके सह-कलाकार ने उस विशेष दृश्य में क्या किया होगा। मुझे इस सीरीज में पूरी तरह से स्क्रीन को देखते हुए परफार्म करना था जो कि अपने आप में एक चुनौती थी। मेरी स्क्रीन ही मेरी सह कलाकार बन गई थी। इसमें मेरी सहायता निर्देशक सिमरप्रीत सिंह ने की। मैं अपनी कल्पनाओं का भी उपयोग करती थी। मेरा किरदार एक युवा, चुलबुली लड़की का है। सीरीज का निर्माण दिनेश विजन ने किया है जो 23 जुलाई से सोनी लिव पर स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगी।



चुट्जपाह में तान्या के लिए काम करना कठिन था। सौ. टीम तान्या

जितना सोचा था, उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है स्टंट करना : राहुल

कुछ चीजें देखने में तो आसान लगती हैं, लेकिन जब उन्हें करना होता है तब उसकी मुश्किलों का अहसास होता है। कुछ ऐसा ही अहसास किया बिग बॉस 14 के रनर अप रहे और सिंगर राहुल वैद्य ने। वह हाल ही में एडवेंचर रियलिटी शो खतरों की खिलाड़ी 11 की शूटिंग पूरी कर दक्षिण अफ्रीका की राजधानी केप टाउन से लौटे हैं। दैनिक जागरण से बातचीत में अपने अनुभवों को साझा करते हुए राहुल कहते हैं, 'जब मुझे इस शो का प्रस्ताव मिला तो मुझे लगा कि हो जाएगा। मुझे लगा था कि यह शो आसान है, लेकिन जितना मैंने सोचा था, यह शो उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है। मैंने कभी भी किसी शो के लिए पहले से तैयारी नहीं की है तो इसके लिए भी कोई तैयारी नहीं की। बस टीम के साथ गया और दनादन मस्ती तथा स्टंट करके आ गया। मुझे सबसे ज्यादा सांपों से डर लगता है। (हंसते हुए) इस शो में जब मैं सांप वाला स्टंट कर रहा था तो मन में नागिन धुन में बीन बजा रहा था। उम्मीद कर रहा था कि कहीं यह सांप गुस्सा होकर मुझे काट न ले। मुझे पानी से भी बहुत डर लगता है। आम जीवन में हमें सांप या शेर के साथ खेलने या ऊंचाई पर चलने जैसी चीजें नहीं करनी होतीं। लिहाजा इस शो का बहुत ही अद्भुत अनुभव रहा। मुझे तो बहुत मजा आया।' राहुल 16 जुलाई को अपनी अपनी गर्लफ्रेंड और अभिनेत्री दिशा परमार के साथ शादी करेंगे।



हाल ही में दक्षिण अफ्रीका से खतरों के खिलाड़ी 11 की शूटिंग कर लौटे हैं राहुल। इंस्टाग्राम

अच्छे काम का फल मिलना निश्चित है



सात सवाल

मौजूदा दौर में अभिनेता परेश रावल नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) में बतौर चेयरपर्सन कलाकारों की एक नई पौध तैयार कर रहे हैं। वहीं फरहान अख्तर के कोच के तौर पर फिल्म तूफान में तो 23 जुलाई को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज हो रही फिल्म हंगामा 2 में कॉमेडी करते नजर आएंगे। हंगामा 2 साल 2003 में रिलीज फिल्म हंगामा की सीक्वल है। उनसे बातचीत के प्रमुख अंश :

<< परेश रावल को ऐसी कहानियों का हिस्सा बनना पसंद, जिसे देख दर्शकों को कुछ याद रहे ● जागरण आर्काइव

● **आप हंगामा का भी हिस्सा रहे, ऐसे में हंगामा 2 का प्रस्ताव पाकर सबसे पहला ख्याल क्या आया?**

-हंगामा एक अच्छी और सफल फिल्म थी तो इसके सीक्वल के बारे में सुनकर मुझे ख्याल आया कि हंगामा 2 भी अच्छी होगी। इस फिल्म के निर्देशक प्रियदर्शन और निर्माता रतन जैन के साथ मैं लंबे अर्से बाद काम करने जा रहा था। इस फिल्म की कहानी मजेदार है। इसमें शिल्पा शेट्टी और आशुतोष राणा जैसे अनुभवी कलाकारों के साथ मीजान जाफरी और प्रणिता सुभाष जैसे नए कलाकार भी हैं।

● **साल 2002 में रिलीज हुई फिल्म चोर मचाए शोर के करीब 18 साल बाद शिल्पा के साथ काम किया, सेट पर उनसे पहली मुलाकात कैसी रही?**

-पहली मुलाकात में बातें क्या ही करेंगे, मैं तो उन्हें देखकर ही दंग रह गया, क्योंकि वह 2002 (साल) में जैसी दिखती थी, अब उससे कहीं ज्यादा खूबसूरत दिखती हैं। वह बहुत ही चंचल और तेजतर्रार किस्म की अभिनेत्री हैं, उनके साथ हंसते-खेलते माहौल में काम हुआ। यूं कह सकते हैं कि शूटिंग का अनुभव बहुत मजेदार रहा।

● **हंगामा और हंगामा 2 में एक चीज मिलती-जुलती है कि दोनों फिल्मों में आपके किरदार को अपनी पत्नी पर शक होता है**

-हां, मेरा किरदार शक्की तो दोनों फिल्मों में है, लेकिन वजह अलग है। पहली हंगामा में मुझे अपनी पत्नी के अफेयर पर शक था, लेकिन हंगामा 2 में समस्या यह है कि मेरे किरदार की पत्नी शिल्पा जी जैसी खूबसूरत है। जिसके भी नसीब में उनके जैसी खूबसूरत पत्नी होगी, उसे अपनी पत्नी को दूसरों के साथ देखने पर जलन और शक होना तो स्वाभाविक है। किसी भी मर्द को अपनी इतनी खूबसूरत बीवी को किसी दूसरे के नजदीक देखकर शक हो सकता है।

● **बतौर एनएसडी चेयरपर्सन आपकी देखरेख में कलाकारों की एक नई पौध तैयार हो रही है, नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए आपके क्या प्रयास हैं?**

-जो नए छात्र आ रहे हैं, वह जज्बे के साथ ही आ रहे हैं। उन्हें भी अभिनय और कला की दुनिया में कुछ कर दिखाना है। बतौर चेयरपर्सन मेरी सबसे बड़ी जिम्मेदारी उनके लिए संस्था में अच्छे लोगों और अच्छी सुविधाओं को लेकर आना है। एनएसडी से निकलने के बाद छात्र को अभिनय की जिस दुनिया में कदम रखना होता है, उसके लिए भी मानसिक तैयारी की जरूरत होती है। मैंने देखा है कि एनएसडी के कई छात्र मुंबई जैसे शहरों में आने के बाद बिखर जाते हैं, उन्हें पता ही नहीं होता है कि आगे क्या करना है। इसके लिए हम संस्था में किसी मनोचिकित्सक को लाने पर विचार कर रहे हैं, जो उन्हें मानसिक तौर पर तैयार कर सके।

● **आपके बेटे आदित्य भी पदार्पण कर चुके हैं, अपने अनुभवों से उनका किस तरह मार्गदर्शन करते हैं?**

-मैं उनसे सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि ईमानदारी से और दिल लगाकर काम करो। बाकी अपनी सफलता का मंत्र और रास्ता वह खुद ढूंढ लेंगे, जो मेरे साथ हुआ था। मुझे पता है कि वह बहुत सुलझे हुए और कामचोरी नहीं करते हैं। आज की पीढ़ी वैसे भी बहुत सुलझी हुई है। उनको हम क्या सिखाएंगे, वह खुद ही हमें चार चीजें सिखा जाते हैं।

● **निगेटिव और कॉमेडी किरदारों के साथ आपने संजू और तूफान जैसी फिल्मों में प्रेरक किरदार भी निभाया, बतौर कलाकार लगातार विविधता बनाए रखना कितना चुनौतीपूर्ण है?**

-अच्छा काम करना अपने आप में चुनौतीपूर्ण है, अच्छा काम मिलना आपका नसीब है। अगर आपको अच्छे विषय के साथ अच्छे निर्देशक, लेखक और प्रोड्यूसर की टीम मिल गई तो बतौर कलाकार आपको भी उसमें कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए। जब आप अच?छा काम करेंगे तो उसका फल आपको निश्चित रुप से मिलेगा।

● **आप किस तरह के किरदारों का ज्यादा आनंद लेते हैं?**

-मुझे कॉमेडी ज्यादा अच्छी लगती हैं, इसका कारण है कि कॉमेडी की वजह से हर किसी के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। मैं समझता हूं कि यह पुण्य का काम है। हालांकि कलाकार और समाज दोनों की तरक्की के लिए ऐसे काम भी करना जरूरी है, जिससे लोगों में कोई संदेश जाए। मैं ऐसी कहानियों का हिस्सा बनना पसंद करता हूं, जिसे देखने के बाद दर्शकों को कुछ याद रह जाए, न कि उन्हें तीन घंटे खोखला बैठना पड़े। (दीपेश पांडेय)

जीआर गोपीनाथ पर आधारित तमिल फिल्म का बनेगा हिंदी रीमेक

हिंदी सिनेमा में दक्षिण भारतीय फिल्मों की रीमेक के तेजी से बढ़ते चलन की सूची में एक और फिल्म सूरराई पोटरु का नाम शामिल हो गया है। साल 2020 में रिलीज हुई यह तमिल फिल्म एयर डेक्कन के संस्थापक जी आर गोपीनाथ के जीवन से प्रेरित है। इस फिल्म की हिंदी रीमेक बनाने के लिए निर्माता विक्रम मल्होत्रा ने मूल फिल्म के अभिनेता और निर्माता सूर्या (सरवनन शिवकुमार) से हाथ मिलाया है। दोनों की प्रोडक्शन कंपनी क्रमशः अबुदंतिया एंटरटेनमेंट और 2डी एंटरटेनमेंट एक साथ मिलकर इस फिल्म का निर्माण करेंगी। रीमेक फिल्म का निर्देशन मूल फिल्म की निर्देशक सुधा कोंगरा ही करेंगी। फिल्म की कास्टिंग पर अभी काम चल रहा है। फिलहाल सुधा लेखन की टीम के साथ मिलकर फिल्म की स्क्रिप्ट के हिंदी रूपांतरण पर काम कर रही हैं। मूल फिल्म की कहानी नदुमारन राजांगम उर्फ मारा नामक एक ऐसे पूर्व एयर फोर्स कैप्टन की है, जो कम लागत वाले एयरलाइन करियर (वाहक) बनाने के सपने देखता है। जी आर गोपीनाथ की बात करें तो वह भारतीय सेना में कैप्टन पद पर सेवारत रह चुके हैं, वह साल 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध का भी हिस्सा बने। उन्होंने साल 2003 में एयर डेक्कन की स्थापना की। फिल्म के बारे में निर्देशक सुधा ने दैनिक जागरण से बातचीत में बताया, कैप्टन गोपीनाथ की कहानी सुनते ही, मेरी दिलचस्पी इसमें बढ़ गई थी। मूल फिल्म सूरराई पोटरु को जो प्यार मिला हम उसके लिए आभारी हैं और अब इसको हिंदी में भी लोगों के सामने प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हूं। मूल फिल्म में सूर्या के साथ अपर्णा बालामुरली अहम भूमिका में हैं।



मूल फिल्म के अभिनेता और निर्माता के साथ मिलकर रीमेक बनाएंगे विक्रम मल्होत्रा ● पीआर टीम